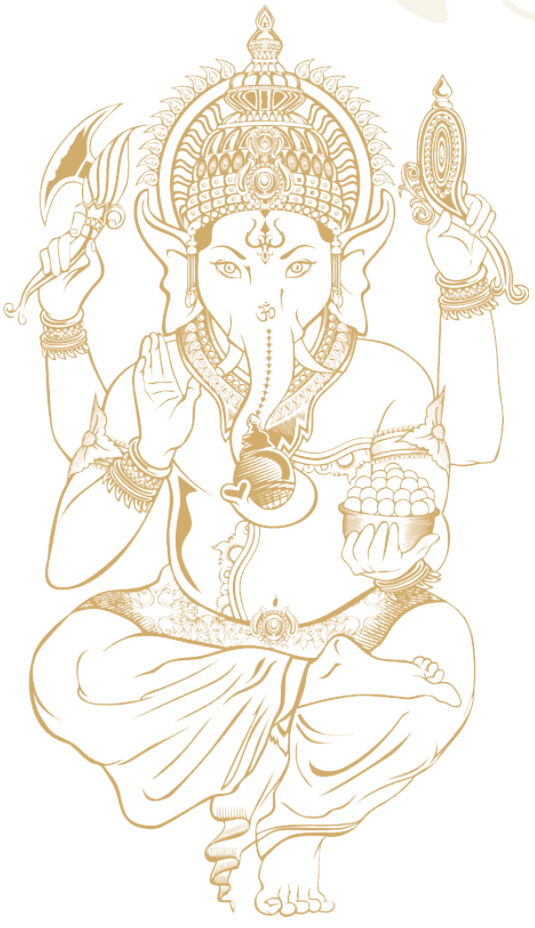

Mr.

26 Dec 1961

10:40 PM

Delhi

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120031901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**26/12/1961**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**22:40:00 घंटे**
इष्ट	38:39:50 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	22:18:52 घंटे
वेलान्तर	-00:00:29 घंटे
साम्पातिक काल	04:38:42 घंटे
सूर्योदय	07:12:04 घंटे
सूर्यास्त	17:31:11 घंटे
दिनमान	10:19:08 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	11:22:51 धनु
लग्न के अंश	18:48:39 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**सिंह - सूर्य**
नक्षत्र-चरण	**मघा - 2**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	प्रीति
करण	कौलव
गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मी-मीत
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1883	पौष	5
पंजाबी	संवत : 2018	पौष	12
बंगाली	सन् : 1368	पौष	11
तमिल	संवत : 2018	मार्गड़ी	11
केरल	कोल्लम : 1137	धनु	11
नेपाली	संवत : 2018	पौष	12
चैत्रादि	संवत : 2018	पौष	कृष्ण 4
कार्तिकादि	संवत : 2018	मार्गशीर्ष	कृष्ण 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 4
तिथि समाप्ति काल _____: 12:19:36
जन्म तिथि _____: 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 14:27:50 घंटे
जन्म योग _____: मघा
सूर्योदय कालीन योग ____: विष्कुम्भ
योग समाप्ति काल _____: 18:44:56 घंटे
जन्म योग _____: प्रीति
सूर्योदय कालीन करण ____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 12:19:36 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 20:30:28
भभोग _____: 67:38:22
भोग्य दशा काल _____: केतु 4 वर्ष 10 मा 14 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

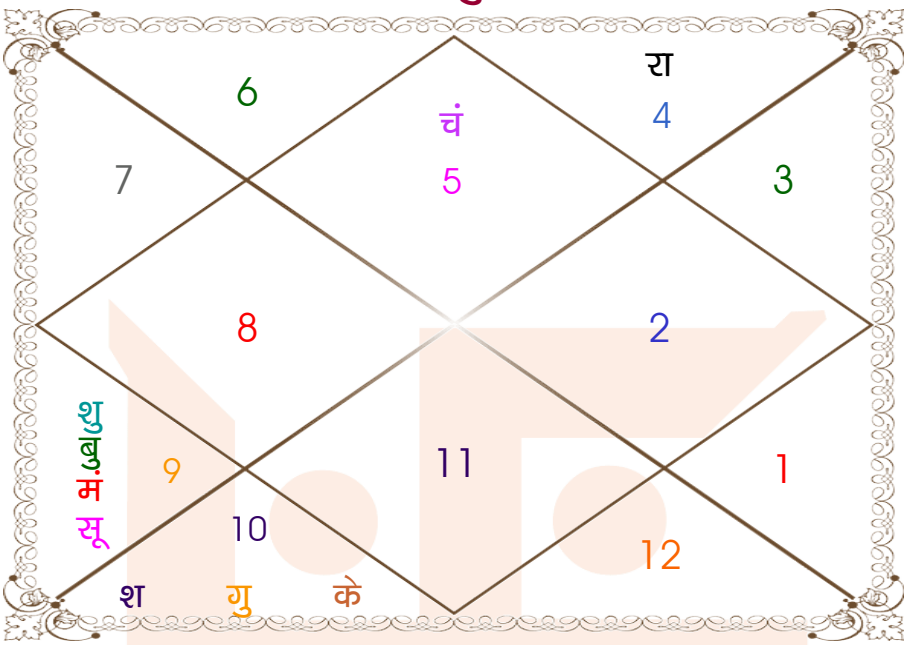

चन्द्र कुंडली

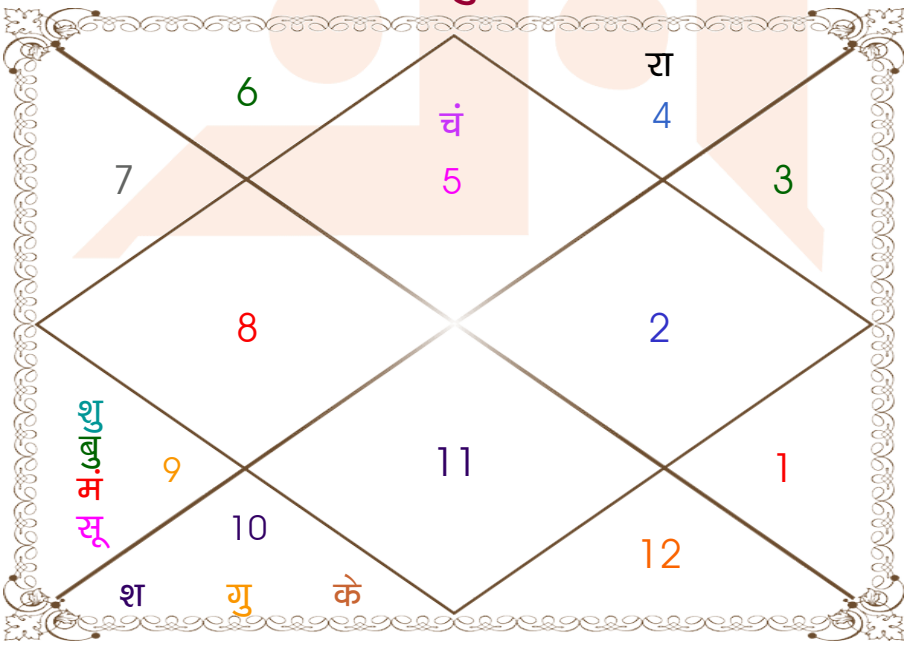

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

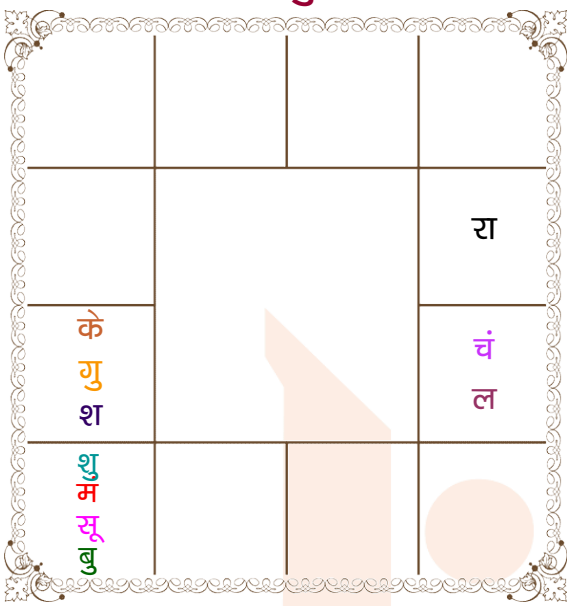

लग्न कुंडली

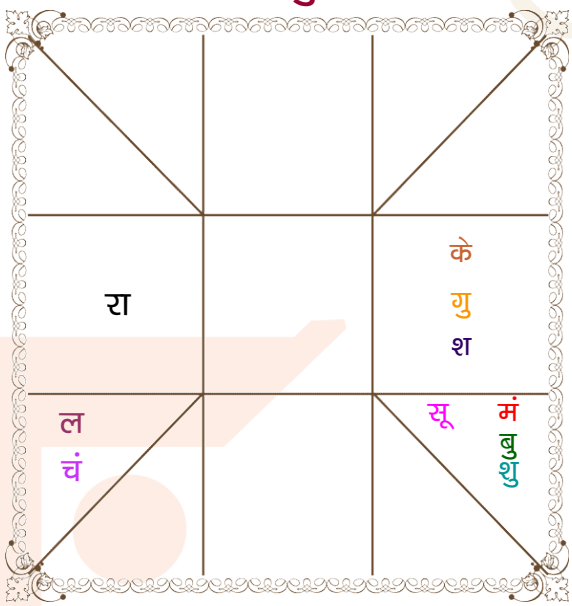

विंशोत्तरी
केतु 4वर्ष 10मा 14दि

केतु

26/12/1961

10/11/2079

केतु	10/11/1966
शुक्र	10/11/1986
सूर्य	09/11/1992
चन्द्र	10/11/2002
मंगल	10/11/2009
राहु	10/11/2027
गुरु	10/11/2043
शनि	10/11/2062
बुध	10/11/2079

योगिनी
भद्रिका 3वर्ष 5मा 23दि

धान्या

20/06/2025

19/06/2028

धान्या	19/09/2025
भ्रामरी	19/01/2026
भद्रिका	20/06/2026
उल्का	19/12/2026
सिद्धा	20/07/2027
संकटा	20/03/2028
मंगला	19/04/2028
पिंगला	19/06/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	18:48:39	315:45:13	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	---
सूर्य			धनु	11:22:51	01:01:08	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	04:03:12	11:50:32	मघा	2	10	सूर्य	केतु	चंद्र	मित्र राशि
मंगल		अ	धनु	08:09:39	00:45:11	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	मित्र राशि
बुध		अ	धनु	17:20:05	01:36:35	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	सम राशि
गुरु			मक	15:58:40	00:13:00	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	नीच राशि
शुक्र			धनु	03:47:48	01:15:29	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	सम राशि
शनि			मक	05:45:28	00:06:43	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	स्वराशि
राहु			कर्क	25:25:12	00:00:56	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
केतु			मक	25:25:12	00:00:56	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	शत्रु राशि
हर्ष	व		सिंह	07:01:53	00:01:07	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	---
नेप			तुला	19:30:15	00:01:33	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	---
प्लूटो	व		सिंह	16:45:18	00:00:27	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	---
दशम भाव			वृष	17:54:22	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:19:23

लग्न-चलित

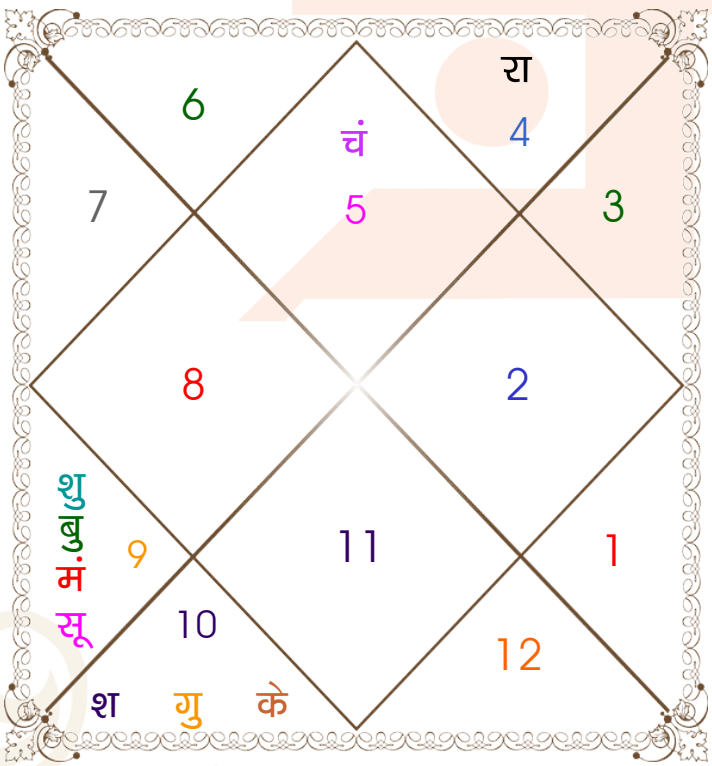

चन्द्र कुंडली

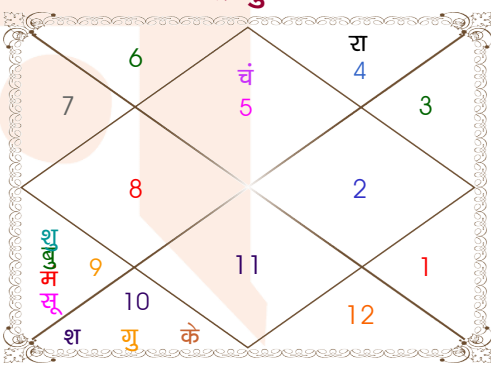

नवमांश कुंडली

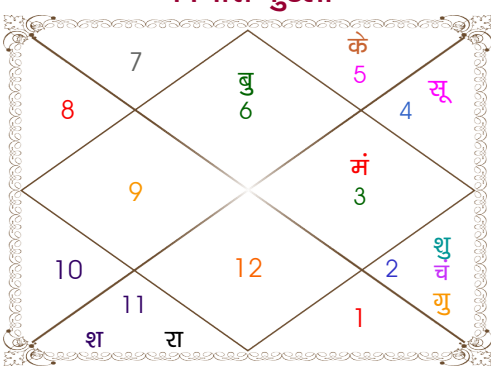

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	03:39:36	सिंह	18:48:39
2	कन्या	03:39:36	कन्या	18:30:33
3	तुला	03:21:31	तुला	18:12:28
4	वृश्चिक	03:03:25	वृश्चिक	17:54:22
5	धनु	03:03:25	धनु	18:12:28
6	मकर	03:21:31	मकर	18:30:33
7	कुम्भ	03:39:36	कुम्भ	18:48:39
8	मीन	03:39:36	मीन	18:30:33
9	मेष	03:21:31	मेष	18:12:28
10	वृष	03:03:25	वृष	17:54:22
11	मिथुन	03:03:25	मिथुन	18:12:28
12	कर्क	03:21:31	कर्क	18:30:33

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	18:48:39
2	कन्या	15:46:26
3	तुला	16:01:06
4	वृश्चिक	17:54:22
5	धनु	19:39:19
6	मकर	20:11:57
7	कुम्भ	18:48:39
8	मीन	15:46:26
9	मेष	16:01:06
10	वृष	17:54:22
11	मिथुन	19:39:19
12	कर्क	20:11:57

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

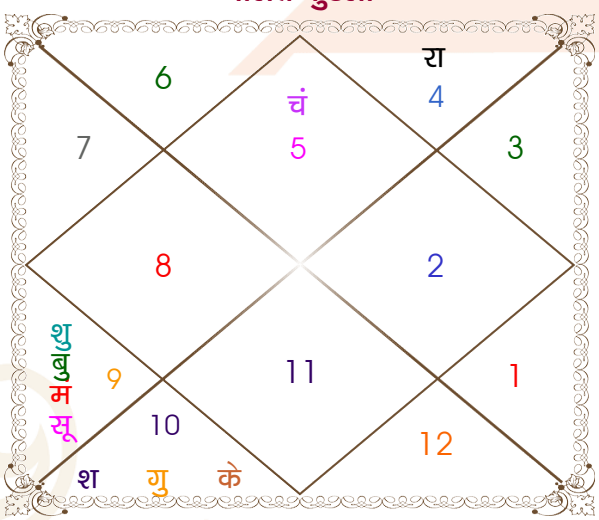

भाव कुंडली

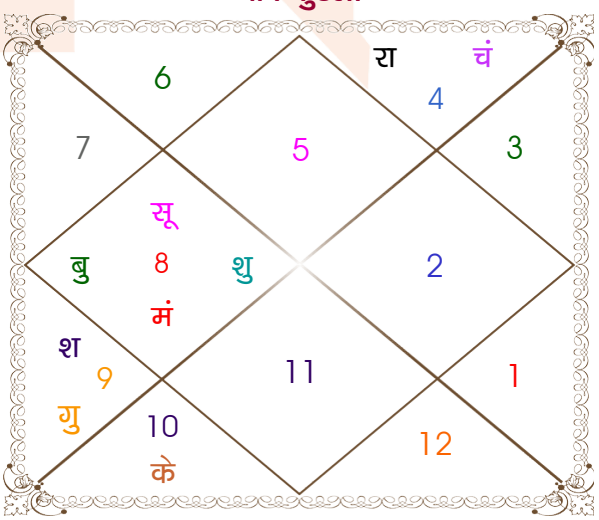

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	कुमार	मुदित	भोजन	4.55	35 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	बाल	मुदित	भोजन	4.45	64 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	कुमार	विकल	आगम	0.00	51 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	युवा	विकल	गमन	0.00	23 %
गुरु	अमात्य	धन	युवा	भीत	नेत्रपाणि	0.21	14 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	बाल	शक्त	गमन	3.56	74 %
शनि	पुत्र	आयु	मृत	स्वस्थ	कौतुक	4.34	61 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	खल	गमन	0.00	0 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	खल	गमन	0.00	54 %
कुल						17.11	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

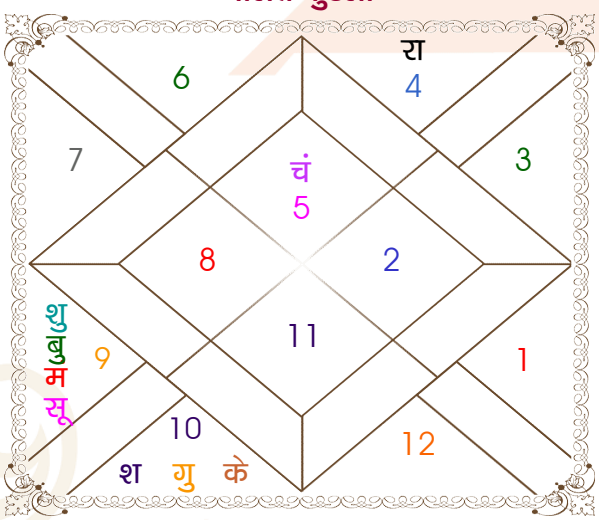

लग्न-चलित

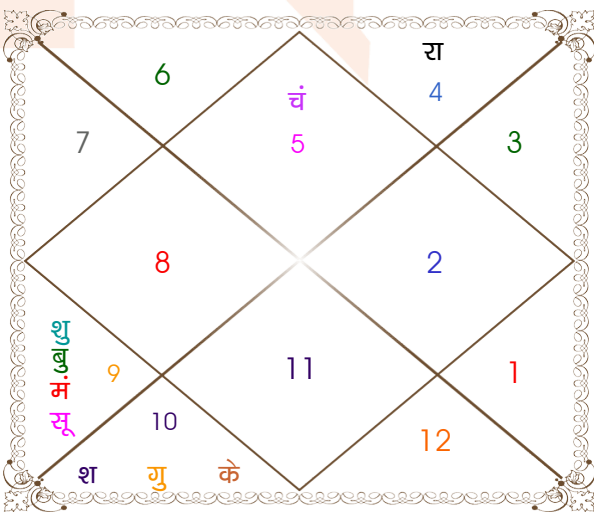

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुदर्शन चक्र

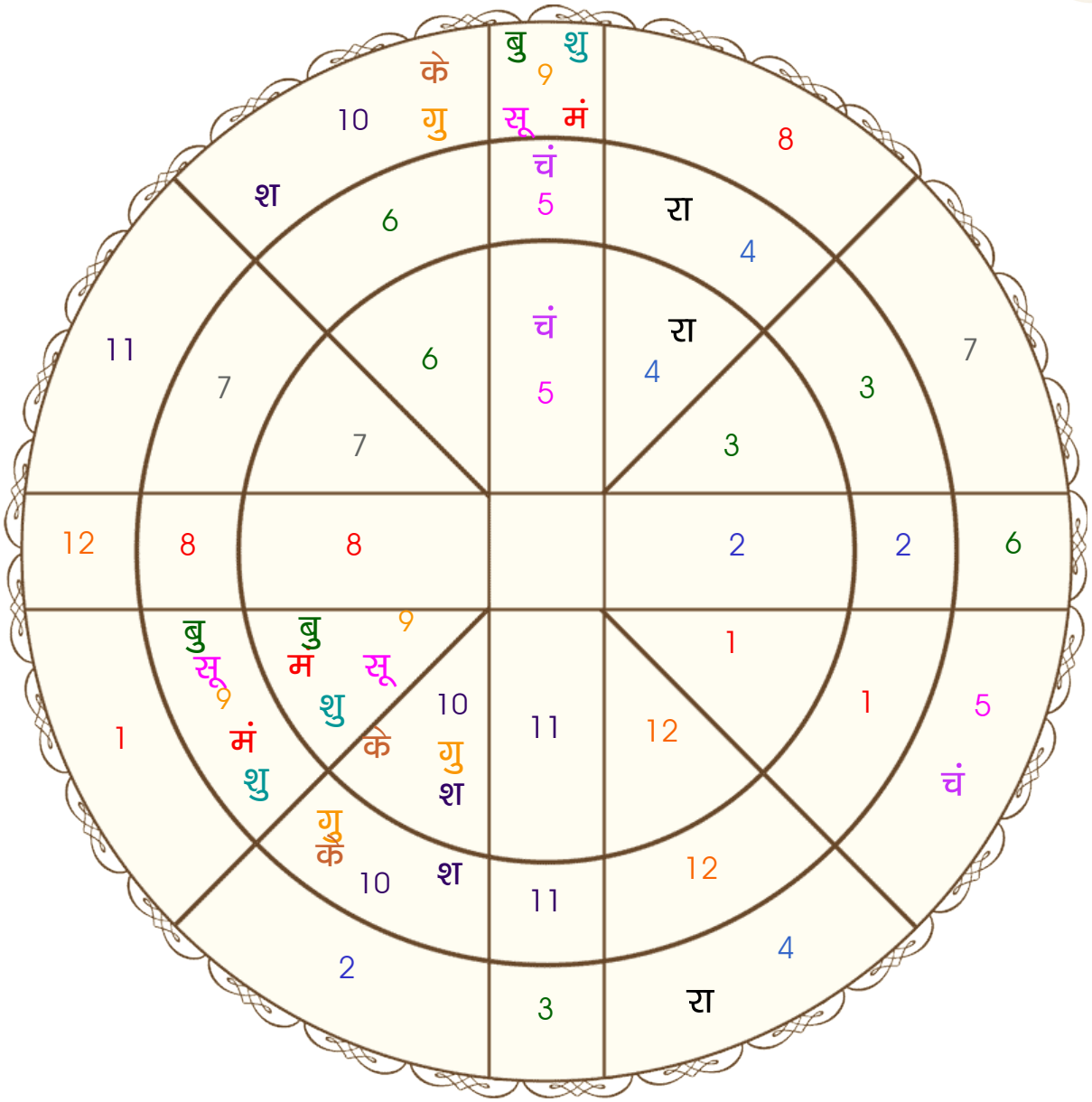

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : केतु 4 वर्ष 9 मास 25 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	11:28:44	गुरु	केतु	बुध	बुध
चंद्र		सिंह	04:09:06	सूर्य	केतु	चंद्र	शनि
मंगल		धनु	08:15:33	गुरु	केतु	गुरु	बुध
बुध		धनु	17:25:58	गुरु	शुक्र	मंगल	राहु
गुरु		मक	16:04:34	शनि	चंद्र	शनि	बुध
शुक्र		धनु	03:53:41	गुरु	केतु	चंद्र	राहु
शनि		मक	05:51:21	शनि	सूर्य	बुध	सूर्य
राहु		कर्क	25:31:05	चंद्र	बुध	राहु	शुक्र
केतु		मक	25:31:05	शनि	मंगल	राहु	शुक्र
हर्ष	व	सिंह	07:07:47	सूर्य	केतु	राहु	शुक्र
नेप		तुला	19:36:08	शुक्र	राहु	मंगल	शनि
प्लूटो	व	सिंह	16:51:12	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	18:54:33	सूर्य	शुक्र	राहु	शनि
2	कन्या	15:52:20	बुध	चंद्र	शनि	शनि
3	तुला	16:06:59	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु
4	वृश्चि	18:00:15	मंगल	बुध	बुध	राहु
5	धनु	19:45:13	गुरु	शुक्र	राहु	सूर्य
6	मक	20:17:51	शनि	चंद्र	केतु	शनि
7	कुंभ	18:54:33	शनि	राहु	चंद्र	बुध
8	मीन	15:52:20	गुरु	शनि	गुरु	शुक्र
9	मेष	16:06:59	मंगल	शुक्र	सूर्य	शुक्र
10	वृष	18:00:15	शुक्र	चंद्र	बुध	बुध
11	मिथु	19:45:13	बुध	राहु	मंगल	केतु
12	कर्क	20:17:51	चंद्र	बुध	शुक्र	राहु

के.पी. अयनांश : 23:13:29

फॉरच्युना : मेष 11:34:54

लग्न कुंडली

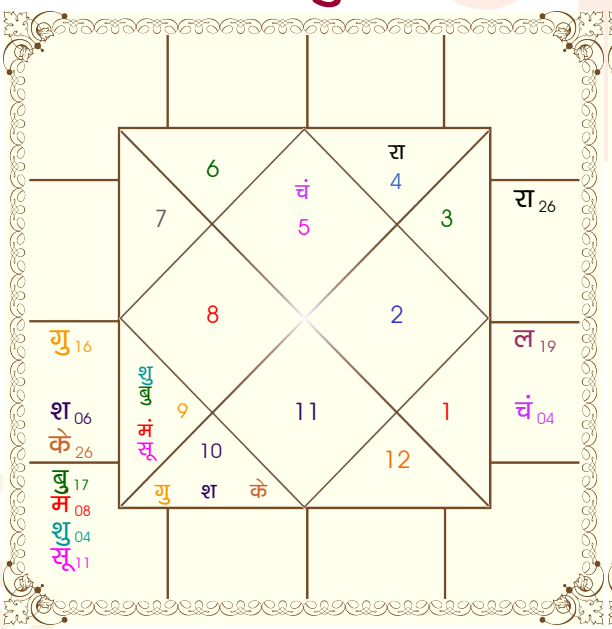

भाव कुंडली

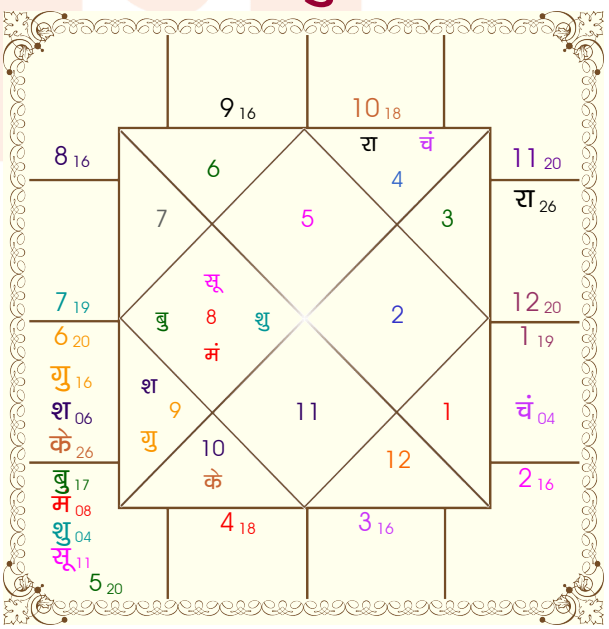

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- शनि-
2	बुध- राहु-
3	बुध- शुक्र-
4	सूर्य, मंगल, बुध+ शुक्र, शनि, राहु, केतु+
5	गुरु, शनि,
6	सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र, शनि- केतु,
7	शनि-
8	गुरु-
9	मंगल- केतु-
10	बुध- शुक्र-
11	बुध- राहु-
12	चंद्र, गुरु+ राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 4, 6,
चंद्र	6, 12,
मंगल	4, 6, 9-
बुध	2- 3- 4+ 10- 11-
गुरु	5, 8- 12+
शुक्र	3- 4, 6, 10-
शनि	1- 4, 5, 6- 7-
राहु	2- 4, 11- 12,
केतु	4+ 6, 9-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	सूर्य
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	श	सू
2	--	--	रा	बु
3	--	--	बु	शु
4	बु श रा के	सू मं बु शु	के	मं
5	--	गु श	--	गु
6	सू चं मं शु	के	--	श
7	--	--	--	श
8	--	--	--	गु
9	--	--	के	मं
10	--	--	बु	शु
11	--	--	रा	बु
12	गु	चं रा	गु	चं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	1	---	धनु	4
चंद्र	12	2,6,10	सिंह	12
मंगल	4,9	---	धनु	4
बुध	2,11	4,12	धनु	4
गुरु	5,8	---	मकर	5
शुक्र	3,10	1,5,9	धनु	4
शनि	6,7	8	मकर	5
राहु	---	3,7,11	कर्क	12
केतु	---	---	मकर	6

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	---	6	2,11	4,12	4
चंद्र	---	---	6	12	2,6,10	12
मंगल	---	---	6	5,8	---	5
बुध	3,10	1,5,9	4	4,9	---	4
गुरु	12	2,6,10	12	6,7	8	5
शुक्र	---	---	6	12	2,6,10	12
शनि	1	---	4	2,11	4,12	4
राहु	2,11	4,12	4	---	3,7,11	12
केतु	4,9	---	4	---	3,7,11	12

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	251.38	124.05	248.16	257.33	285.98	243.80	275.76	115.42	295.42	127.03	199.50	136.76
सूर्य	--	--	युति	युति	--	युति	--	--	अष्ट	--	--	--
251.38	0.00	0.00	9.44	8.12	0.00	7.01	0.00	0.00	0.06	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	पंच	--	--	पंच	--	युति	सप्त	युति	--	युति
124.05	0.00	0.00	1.43	0.00	0.00	2.99	0.00	6.18	6.18	9.52	0.00	2.38
मंगल	युति	--	--	युति	--	युति	--	--	--	--	--	--
248.16	9.44	0.00	0.00	5.73	0.00	8.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	युति	--	युति	--	--	युति	--	--	--	--	--	--
257.33	8.12	0.00	5.73	0.00	0.00	1.52	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	--	--	--	युति	सप्त	युति	--	--	--
285.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.80	5.50	5.50	0.00	0.00	0.00
शुक्र	युति	--	युति	युति	--	--	--	--	--	--	--	--
243.80	7.01	0.00	8.97	1.52	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	10वा	--
275.76	0.00	0.00	0.00	0.00	4.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.31	0.00
राहु	अष्टां	युति	--	--	सप्त	--	--	--	सप्त	युति	चतु	--
115.42	0.06	6.18	0.00	0.00	5.50	0.00	0.00	0.00	10.00	3.47	0.07	0.00
केतु	--	सप्त	--	--	युति	--	--	सप्त	--	सप्त	--	--
295.42	0.00	6.18	0.00	0.00	5.50	0.00	0.00	10.00	0.00	3.47	0.00	0.00
हर्ष	पंच	युति	पंच	--	--	पंच	--	युति	सप्त	--	पंचा	युति
127.03	1.26	9.52	2.87	0.00	0.00	1.99	0.00	3.47	3.47	0.00	0.74	5.25
नेप	--	--	--	तृती	चतु	अष्ट	--	--	चतु	--	--	--
199.50	0.00	0.00	0.00	2.53	1.81	0.44	0.00	0.00	0.07	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	पंच	युति	--	पंच	षष्ठ	--	--	--	--	युति	तृती	--
136.76	0.49	2.38	0.00	2.97	0.34	0.00	0.00	0.00	0.00	5.25	2.26	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	138.81	168.51	198.21	227.91	258.21	288.51	318.81	348.51	18.21	47.91	78.21	108.51
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
251.38	0.00	0.00	0.00	0.00	7.55	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.55	0.00
चंद्र	युति	--	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--
124.05	0.25	0.00	0.00	0.00	0.24	0.00	0.25	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	युति	नवां	--	4था	--	--	सप्त	8वां
248.16	0.00	0.00	0.00	0.00	4.96	0.85	0.00	4.68	0.00	0.00	4.96	4.68
बुध	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--
257.33	0.00	0.00	0.00	0.00	9.96	0.00	2.78	2.86	2.92	0.62	9.96	0.00
गुरु	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त
285.98	0.00	9.65	0.00	0.00	0.00	9.65	0.00	2.36	2.50	9.80	0.00	9.65
शुक्र	--	--	--	--	युति	--	--	--	अष्टां	--	सप्त	--
243.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.62	0.00	0.00	0.00	0.60	0.00	0.62	0.00
शनि	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त
275.76	0.00	0.00	2.64	0.00	0.00	2.33	0.00	2.33	0.00	0.00	0.00	2.33
राहु	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
115.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.49
केतु	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
295.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.49
हर्ष	युति	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
127.03	3.31	0.00	0.27	0.00	0.00	0.00	3.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--
199.50	0.00	0.00	9.91	0.00	2.83	2.90	2.95	0.01	9.91	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
136.76	9.77	0.00	2.79	2.86	2.79	0.00	9.77	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	138.81	165.77	196.02	227.91	259.66	290.20	318.81	345.77	16.02	47.91	79.66	110.20
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--
251.38	0.00	0.00	0.00	0.00	6.47	0.00	0.00	1.23	1.05	0.00	6.47	0.00
चंद्र	युति	--	पंचा	--	अष्टां	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति
124.05	0.25	0.00	1.00	0.00	0.59	1.20	0.25	0.00	0.00	0.00	0.00	1.20
मंगल	--	--	--	--	युति	--	--	4था	--	--	सप्त	8वां
248.16	0.00	0.00	0.00	0.00	3.59	0.00	0.00	6.99	0.00	0.00	3.59	3.05
बुध	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--
257.33	0.00	0.00	0.00	0.00	9.71	0.00	2.78	2.75	2.82	0.62	9.71	0.00
गुरु	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त
285.98	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	9.04	0.00	3.00	3.00	9.80	0.00	9.04
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
243.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त
275.76	0.00	0.00	4.76	0.00	0.00	0.58	0.00	4.99	0.00	0.00	0.00	0.58
राहु	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
115.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.54
केतु	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
295.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.54
हर्ष	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
127.03	3.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
199.50	0.00	0.00	9.34	0.00	3.00	2.95	2.95	0.00	9.34	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
136.76	9.77	0.00	2.94	2.86	2.18	0.00	9.77	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

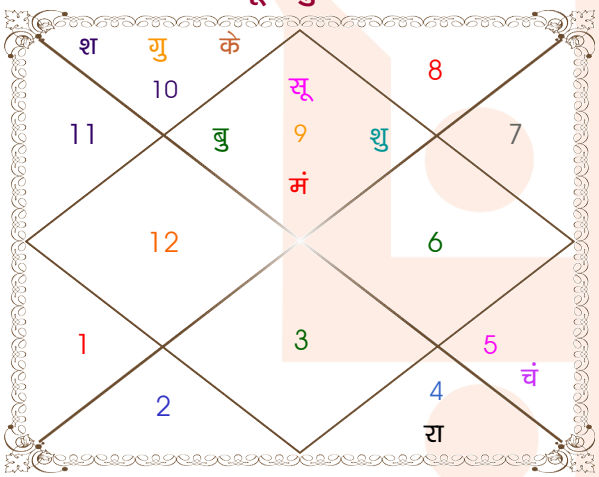

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

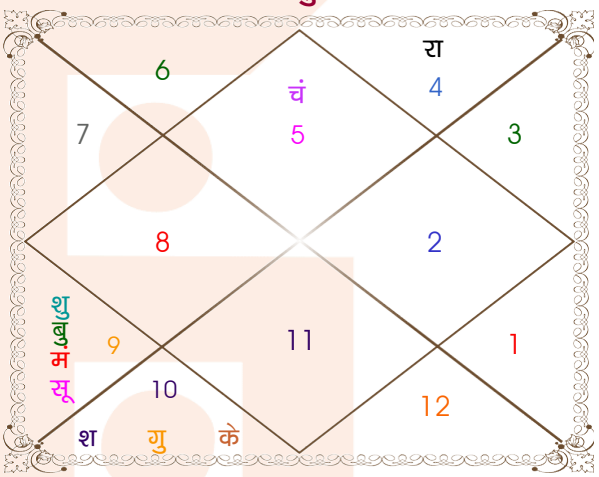

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

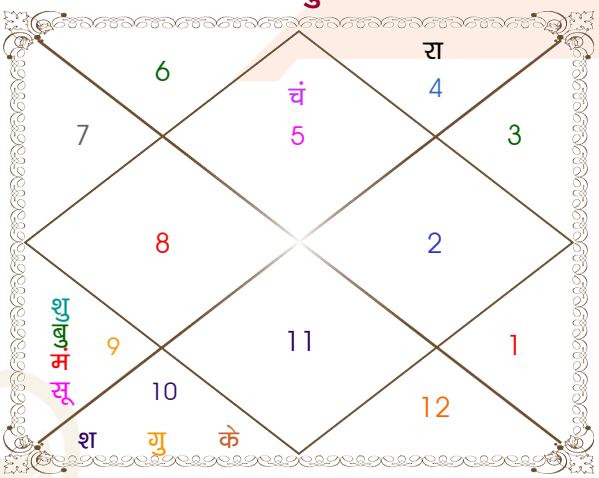

देह विचारः

होरा कुंडली

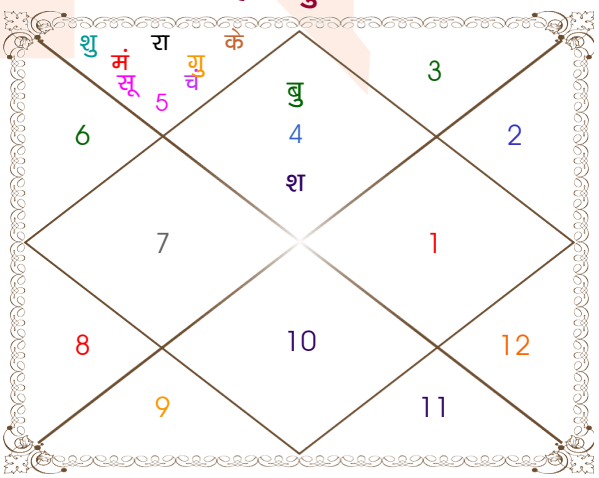

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

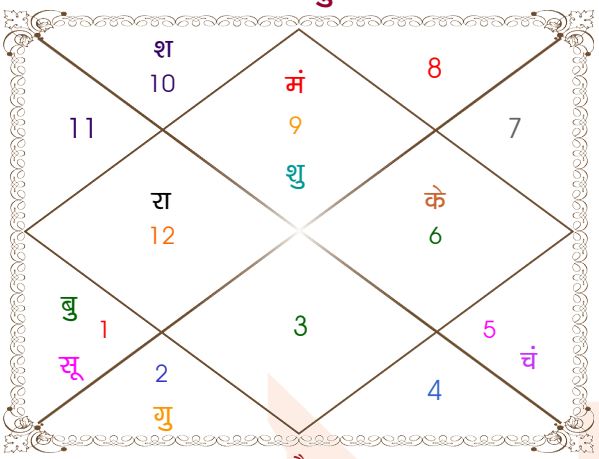

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

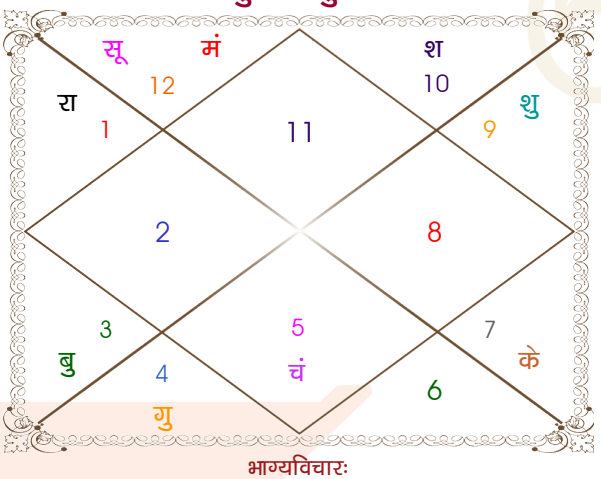

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

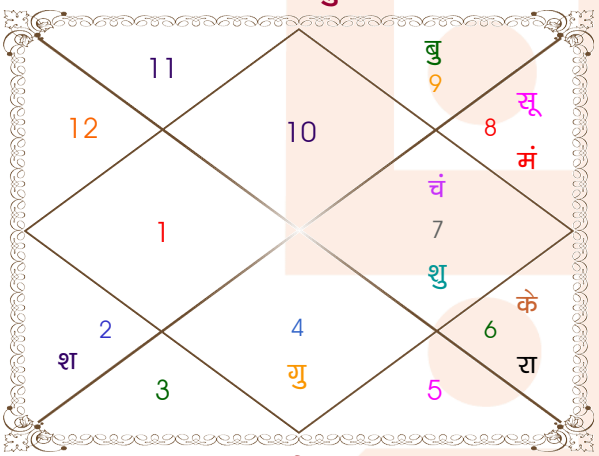

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

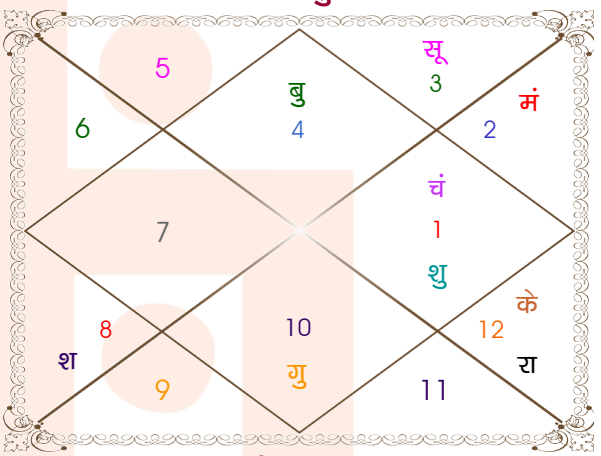

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

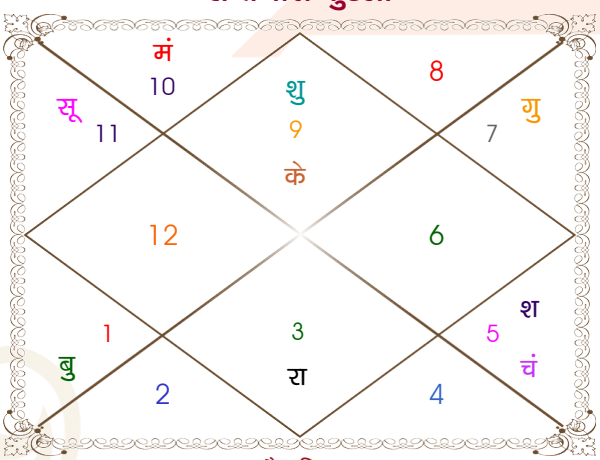

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

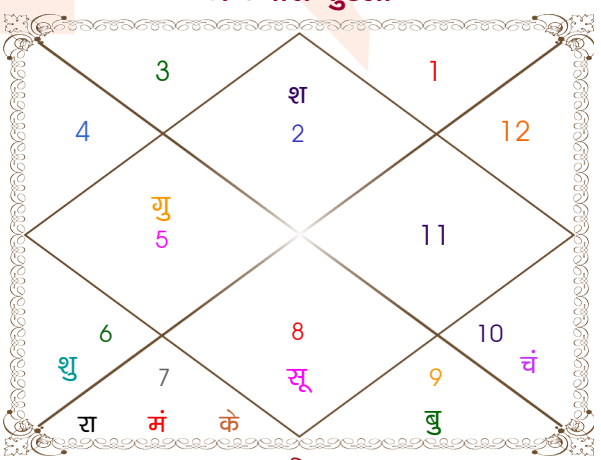

आयुविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

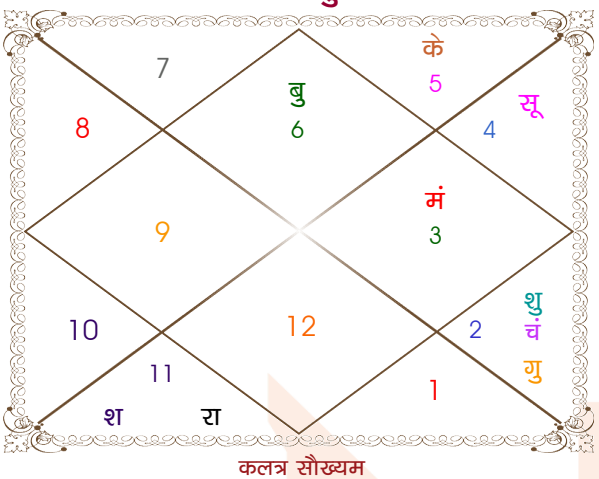

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

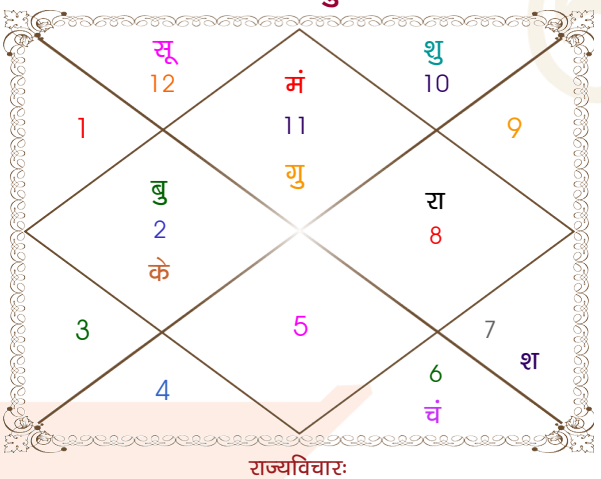

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

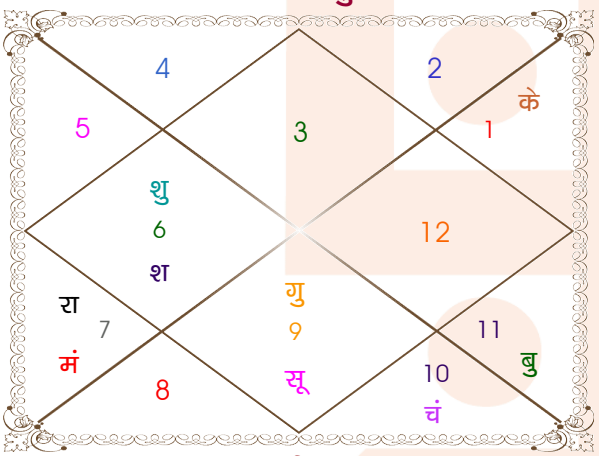

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

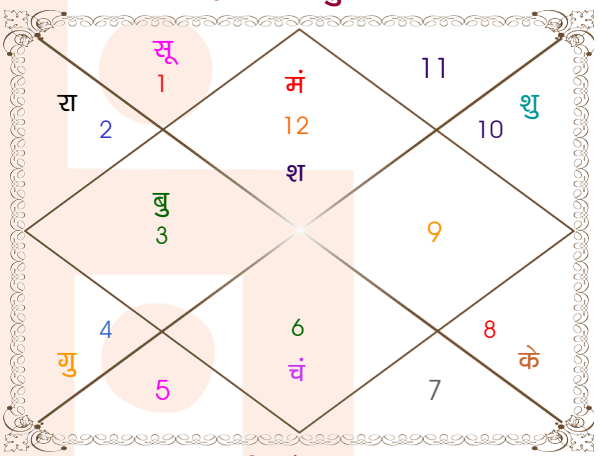

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

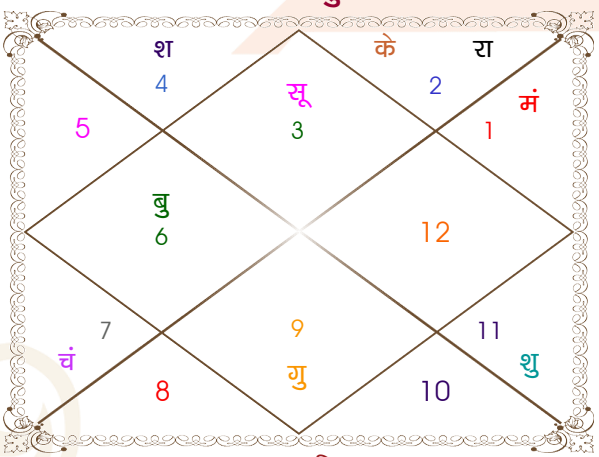

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

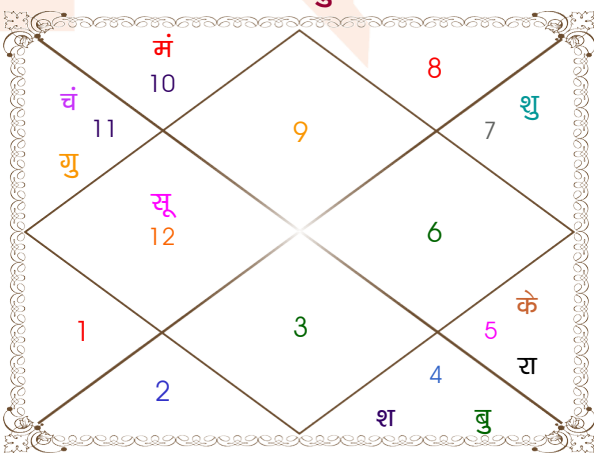

उपासनाज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

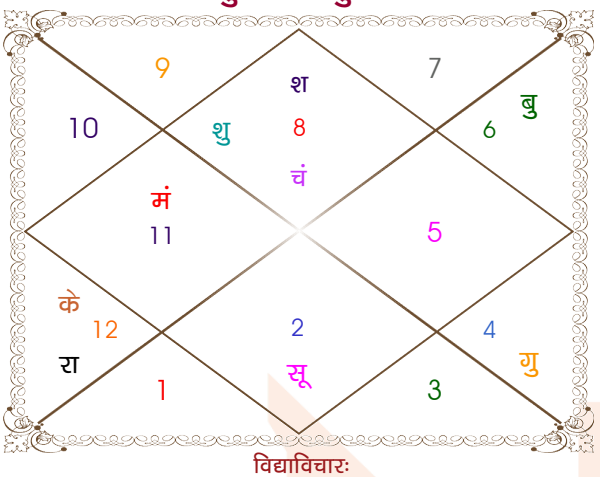

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

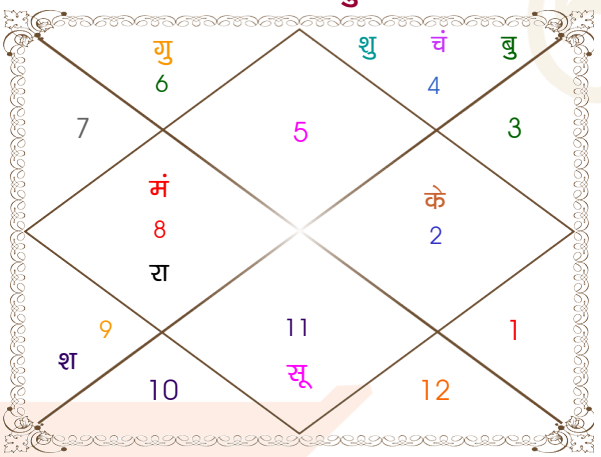

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

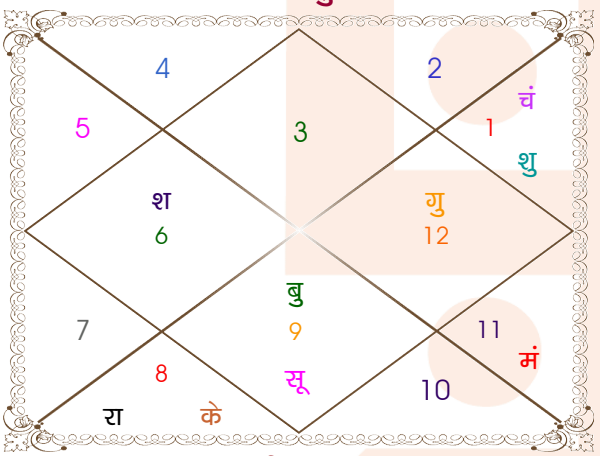

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

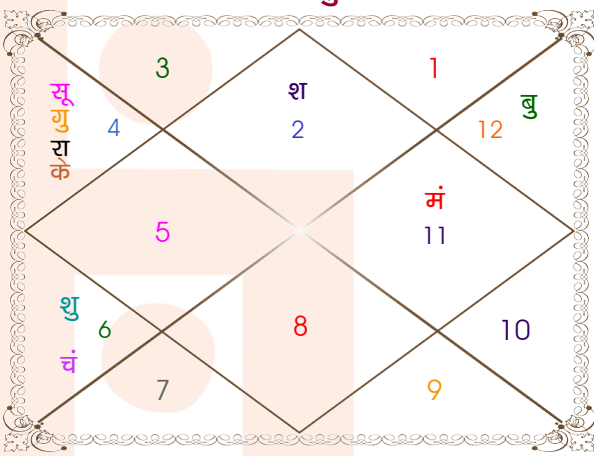

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

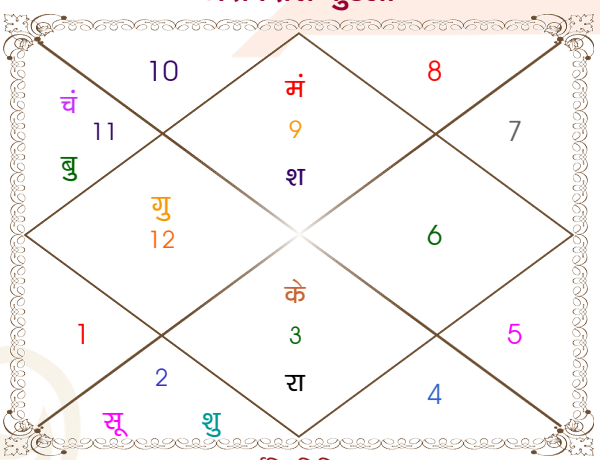

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

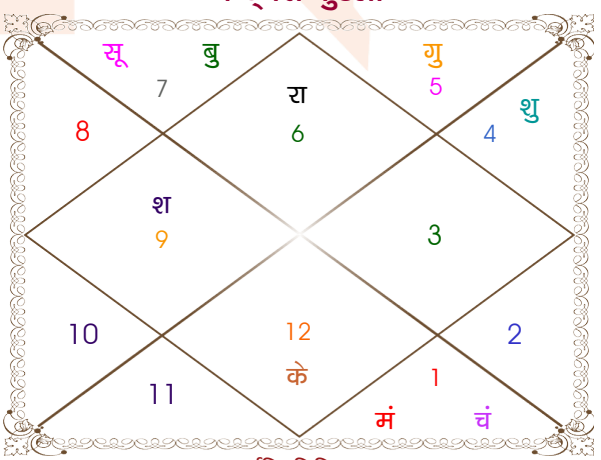

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	धनु	सिंह	धनु	धनु	मक	धनु	मक	कर्क	मक
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	धनु	मेष	सिंह	धनु	मेष	वृष	धनु	मक	मीन	कन्या
चतुर्थांश	कुंभ	मीन	सिंह	मीन	मिथु	कर्क	धनु	मक	मेष	तुला
सप्तमांश	धनु	कुंभ	सिंह	मक	मेष	तुला	धनु	सिंह	मिथु	धनु
नवमांश	कन्या	कर्क	वृष	मिथु	कन्या	वृष	वृष	कुंभ	कुंभ	सिंह
दशमांश	कुंभ	मीन	कन्या	कुंभ	वृष	कुंभ	मक	तुला	वृश्चि	वृष
द्वादशांश	मीन	मेष	कन्या	मीन	मिथु	कर्क	मक	मीन	वृष	वृश्चि
षोडशांश	मिथु	मिथु	तुला	मेष	कन्या	धनु	कुंभ	कर्क	वृष	वृष
विंशांश	धनु	मीन	कुंभ	मक	कर्क	कुंभ	तुला	कर्क	सिंह	सिंह
चतुर्विंशांश	वृश्चि	वृष	वृश्चि	कुंभ	कन्या	कर्क	वृश्चि	वृश्चि	मीन	मीन
सप्तविंशांश	सिंह	कुंभ	कर्क	वृश्चि	कर्क	कन्या	कर्क	धनु	वृश्चि	वृष
त्रिंशांश	मिथु	धनु	मेष	कुंभ	धनु	मीन	मेष	कन्या	वृश्चि	वृश्चि
खवेदांश	वृष	कर्क	कन्या	कुंभ	मीन	कर्क	कन्या	वृष	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	धनु	वृष	कुंभ	धनु	कुंभ	मीन	वृष	धनु	मिथु	मिथु
षष्ट्यंश	कन्या	तुला	मेष	मेष	तुला	सिंह	कर्क	धनु	कन्या	मीन

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	0 ---	1 ---	3 उत्तम	5 कन्दुक
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	7 कल्पवृक्ष
शुक्र	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
शनि	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
राहु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
केतु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	13.80	9.10	13.80	14.15	10.40	15.15	17.10	8.65	10.70
सप्तवर्ग	13.40	9.18	13.75	13.43	10.55	15.03	15.85	8.43	10.33
दशवर्ग	11.68	8.58	16.40	12.55	13.43	12.20	12.48	7.68	11.05
षोडशवर्ग	11.35	8.53	15.78	13.90	13.08	12.98	13.10	8.03	10.63

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	सम	मित्र	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	20	30	43	29	4	22	35
सप्तवर्गज बल	105	45	107	99	86	103	126
ओजयुग्मक बल	15	15	30	15	0	15	15
केन्द्र बल	30	60	30	30	15	30	15
द्रेष्काण बल	0	0	15	15	0	0	0
कुल स्थान बल	170	150	225	189	105	170	190
कुल दिग्बल	8	25	7	20	11	55	46
नतोन्नत बल	8	52	52	60	8	8	52
पक्ष बल	18	85	18	18	42	42	18
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	15	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	0	14	0	59	7	0	56
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	86	150	114	137	118	156	125
कुल चेष्टाबल	0	0	0	16	13	4	8
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	6	-21	6	4	6	8	1
कुल षट्बल	330	356	370	392	287	436	379
रूप षट्बल	5.5	5.9	6.2	6.5	4.8	7.3	6.3
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.1	1.0	1.2	0.9	0.7	1.3	1.3
संबंधित पद	4	5	3	6	7	1	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	5.66	35.47	3.56	21.44	6.99	9.53	17.18
कष्ट फल	48.07	23.08	31.50	36.91	51.27	45.94	36.07

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	330	392	436	370	287	379	379	287	370	436	392	356
भावदिग्बल	30	50	40	30	10	40	0	20	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	56	66	8	10	4	7	25	39	62	56	43	75
कुल भाव बल	416	507	483	410	301	427	404	346	482	551	475	451
रूप भाव बल	6.9	8.5	8.1	6.8	5.0	7.1	6.7	5.8	8.0	9.2	7.9	7.5
संबंधित पद	8	2	3	9	12	7	10	11	4	1	5	6

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

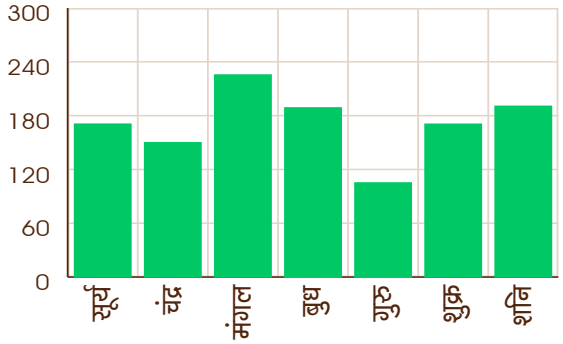

दिग्बल

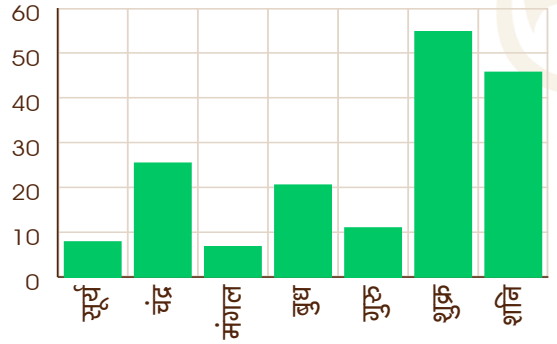

कालबल

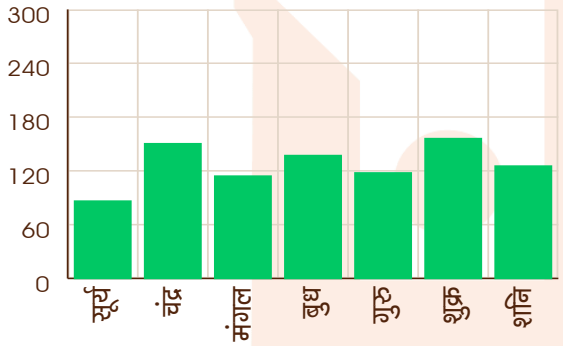

चेष्टाबल

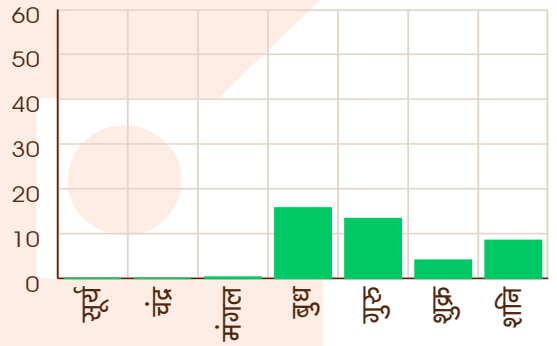

नैसर्गिक बल

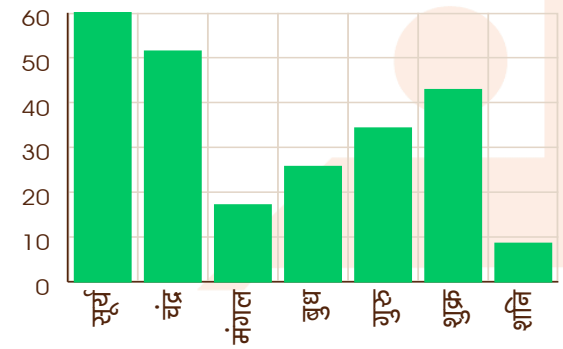

दृग्बल

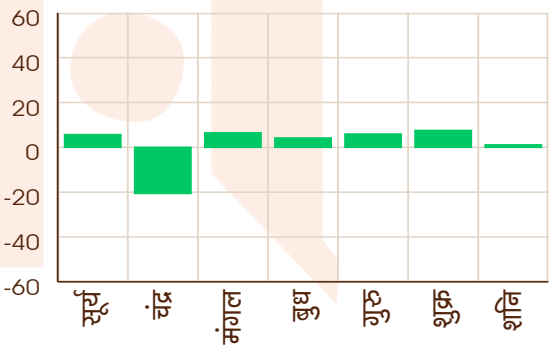

रूप षट्बल

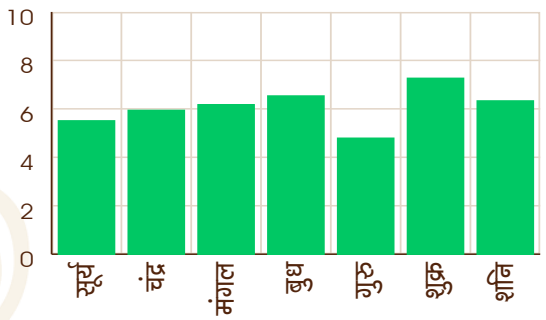

न्यूनतम षट्बल

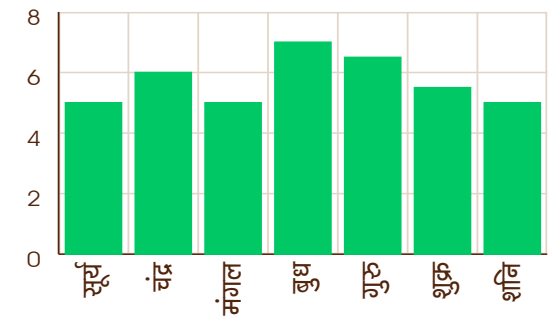

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

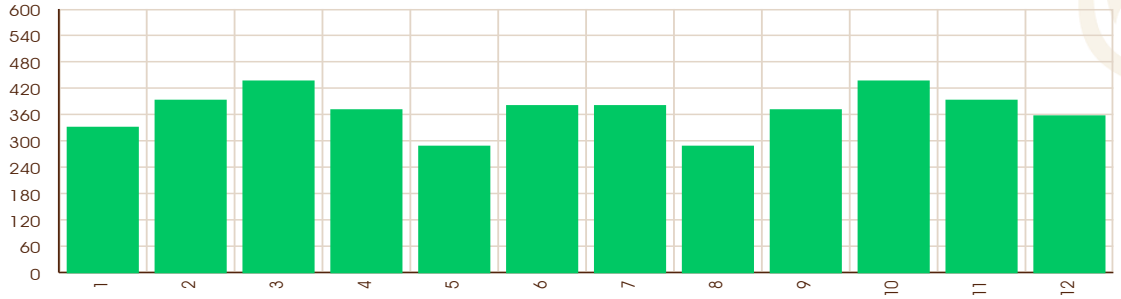

भावदिग्बल

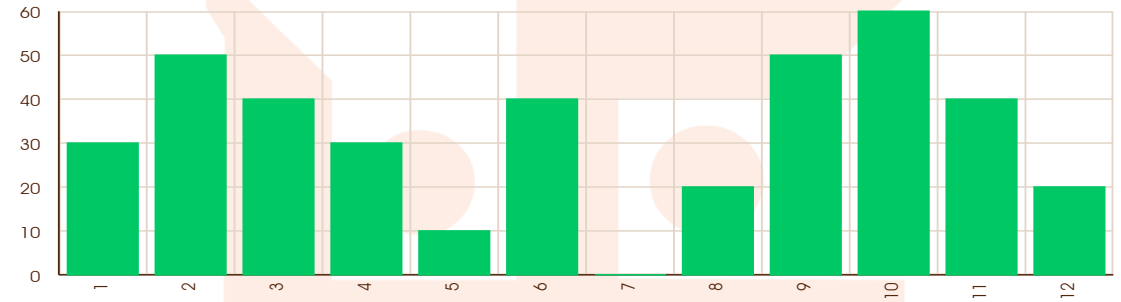

भावदृष्टि बल

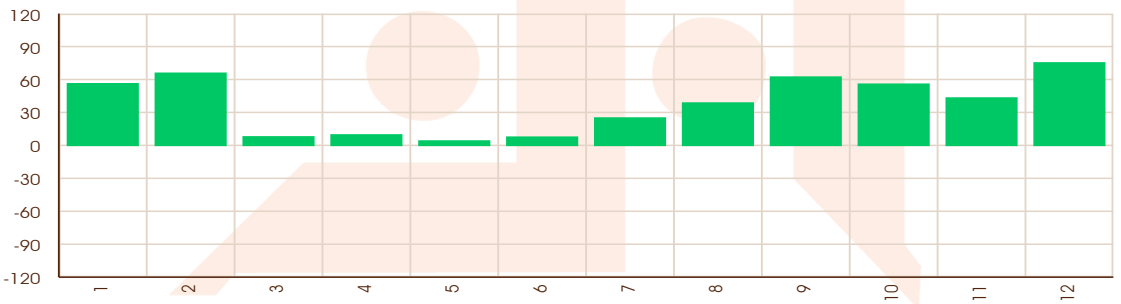

भाव बल

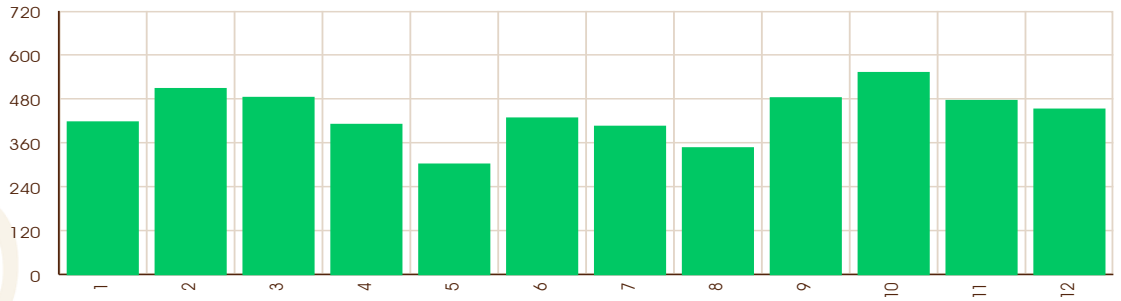

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

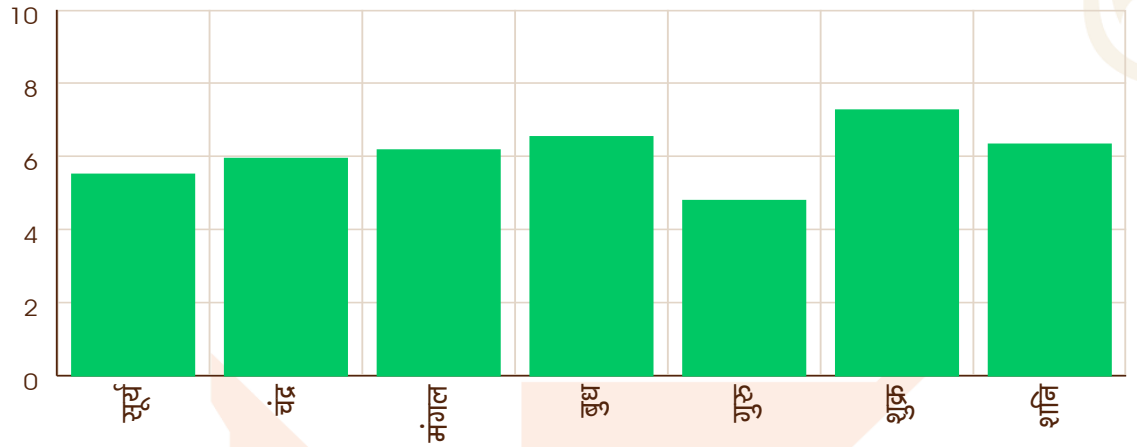

इष्ट - कष्ट फल

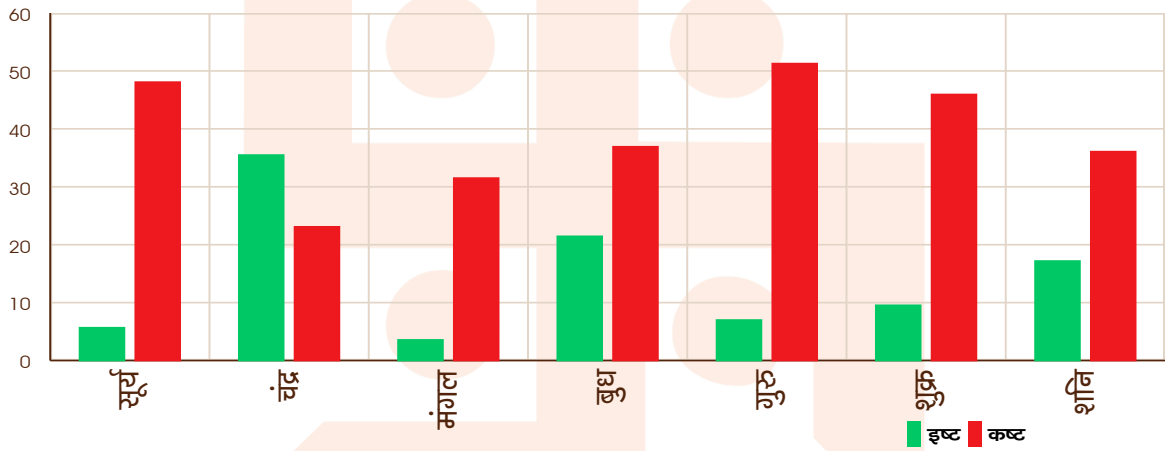

रूप भाव बल

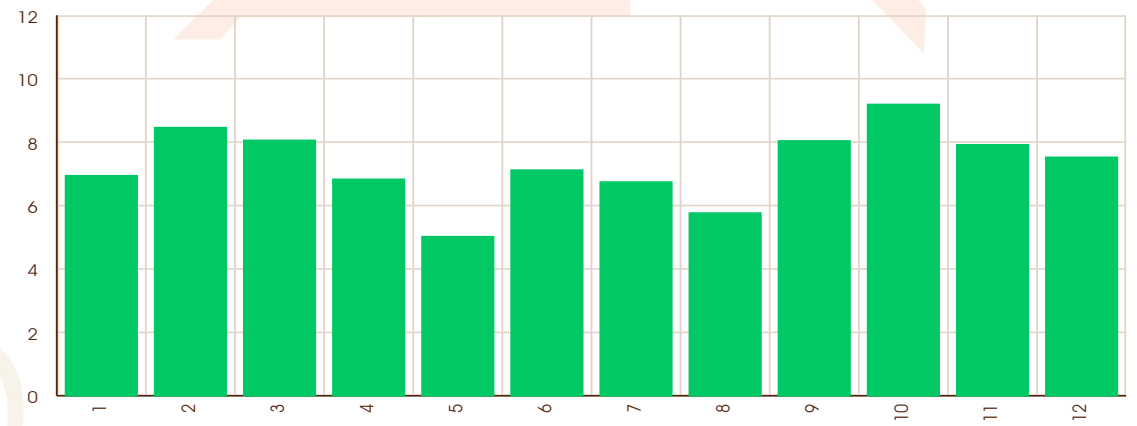

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	सिंह	18:48:39	--	--	पू०फाल्गुनी	2	11
गुलिक	गु	कर्क	04:38:53	--	--	पुष्य	1	8
काल	का	कर्क	26:20:10	--	--	आश्लेषा	3	9
मृत्यु	मृ	कन्या	11:26:10	--	--	हस्त	1	13
यमघंटक	यम	तुला	26:01:01	--	--	विशाखा	2	16
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	तुला	03:43:40	--	--	चित्रा	4	14
धूम	धू	मेष	24:42:51	--	--	भरणी	4	2
व्यतिपात	व्य	मीन	05:17:09	--	--	उ०भाद्रपद	1	26
परिवेश	परि	कन्या	05:17:09	--	--	उ०फाल्गुनी	3	12
इन्द्रचाप	इ	तुला	24:42:51	--	--	विशाखा	2	16
उपकेतु	उप	वृश्चि	11:22:51	--	--	अनुराधा	3	17

प्राणपद	:	मीन	01:02:21	कारकाँश लग्न	:	कुंभ	18:46:46
भाव लग्न	:	सिंह	03:21:49	होरा लग्न	:	मीन	25:20:48
घटी लग्न	:	मीन	01:17:43	वर्णद लग्न	:	सिंह	14:09:27

उपग्रह कुंडली

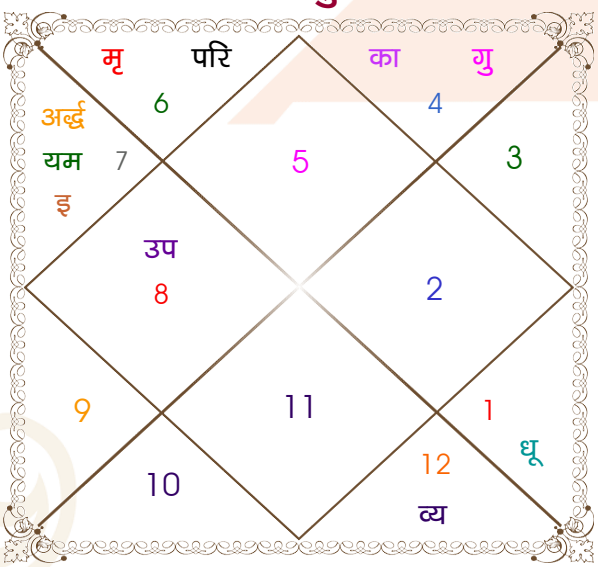

आरूढ़ कुंडली

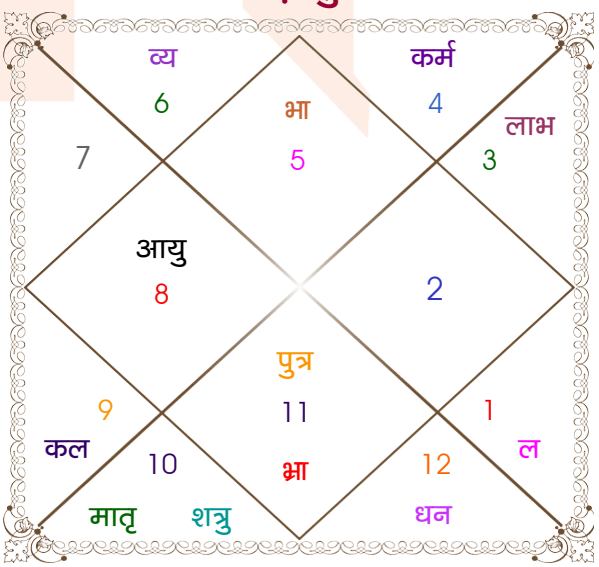

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षन्नाडी चक्र

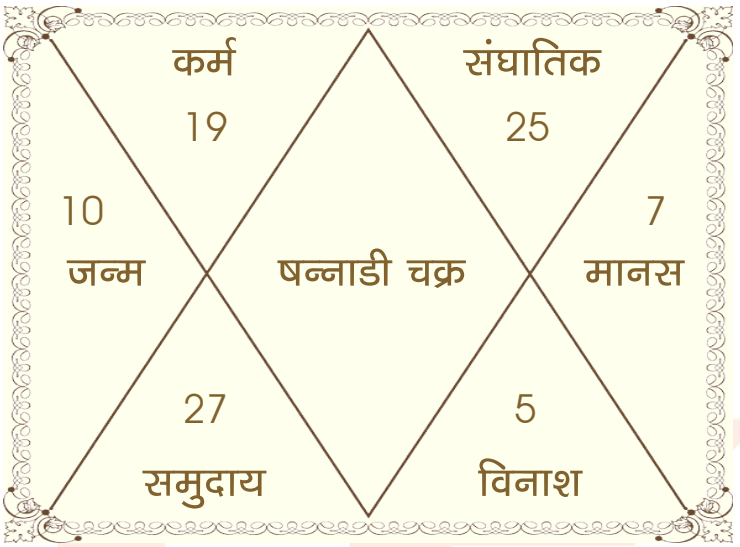

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
कुल	2	5	2	2	2	5	6	4	4	5	6	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	कुल
शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	7	2	1	4	6	3	5	5	6	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
कुल	2	4	2	1	3	4	4	3	2	3	8	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
कुल	4	5	3	4	4	4	4	3	7	5	5	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	6	4	5	5	4	5	3	5	6	5	2	6	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	9
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
कुल	3	1	3	5	5	4	2	3	7	5	8	6	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	3
बुध	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	6
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
कुल	3	1	2	1	6	5	2	2	3	6	6	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	कुल
शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
सूर्य	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	1	4	7	3	3	6	4	4	3	6	4	4	49

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	6	5	2	2	3	6	6	2	3	1	2	39
गुरु	5	4	5	3	5	6	5	2	6	6	4	5	56
मंगल	3	4	4	3	2	3	8	3	2	4	2	1	39
सूर्य	2	5	6	4	4	5	6	5	2	5	2	2	48
शुक्र	5	4	2	3	7	5	8	6	3	1	3	5	52
बुध	4	4	4	3	7	5	5	6	4	5	3	4	54
चंद्र	5	5	6	3	3	4	7	2	1	4	6	3	49
बिन्दु	25	32	32	21	30	31	45	30	20	28	21	22	337
रेखा	31	24	24	35	26	25	11	26	36	28	35	34	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	3	4	0	1	0	5	4	1	0	0	0	18
गुरु	0	0	1	1	0	2	1	0	1	2	0	3	11
मंगल	1	1	2	2	0	0	6	2	0	1	0	0	15
सूर्य	0	0	4	2	2	0	4	3	0	0	0	0	15
शुक्र	2	3	0	0	4	4	6	3	0	0	1	2	25
बुध	0	0	1	0	3	1	2	3	0	1	0	1	12
चंद्र	4	1	0	1	2	0	1	0	0	0	0	1	10
रेखा	7	8	12	6	12	7	25	15	2	4	1	7	106

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	3	4	0	1	0	2	4	1	0	0	0	15
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	2	0	2	9
मंगल	1	1	2	2	0	0	5	1	0	1	0	0	13
सूर्य	0	0	4	2	2	0	4	3	0	0	0	0	15
शुक्र	2	3	0	0	4	4	3	1	0	0	1	2	20
बुध	0	0	0	0	3	0	2	3	0	1	0	1	10
चंद्र	4	0	0	1	2	0	0	0	0	0	0	1	8
रेखा	7	7	11	6	12	5	17	12	2	4	1	6	90

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	112	64	89	85	67	168	127
ग्रह पिंड	10	10	15	30	55	20	30
शोध्य पिंड	122	74	104	115	122	188	157

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

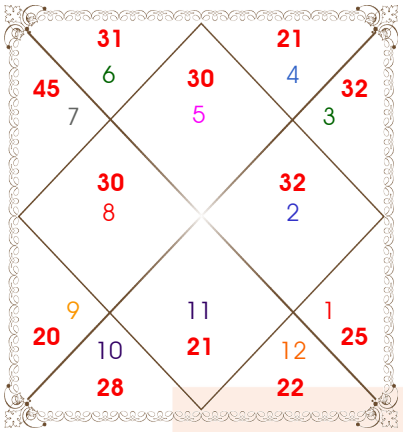

सूर्य का अष्टकवर्ग

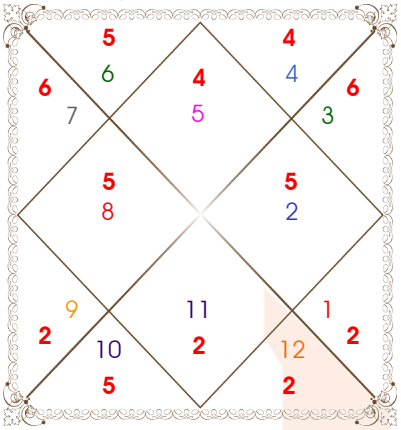

चंद्र का अष्टकवर्ग

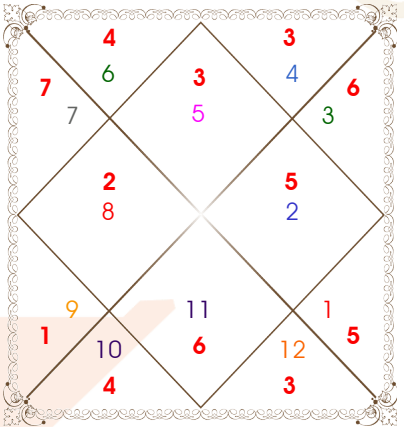

मंगल का अष्टकवर्ग

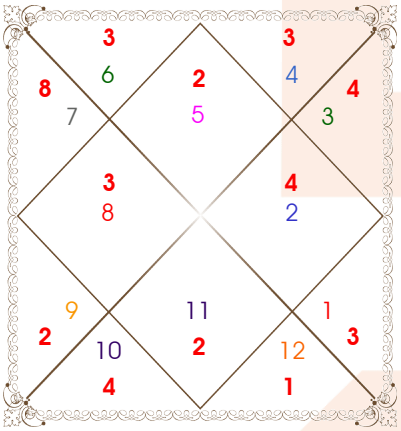

बुध का अष्टकवर्ग

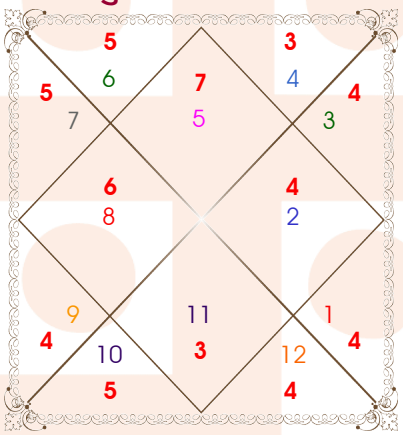

गुरू का अष्टकवर्ग

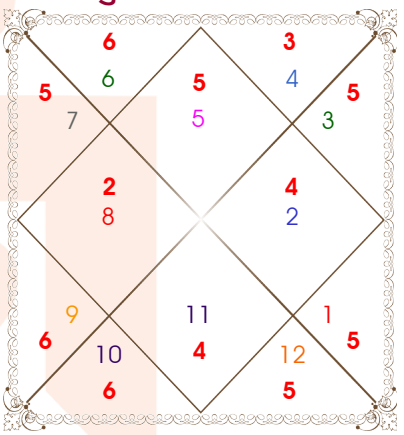

शुक्र का अष्टकवर्ग

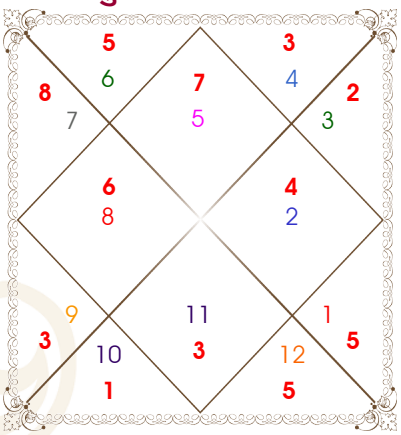

शनि का अष्टकवर्ग

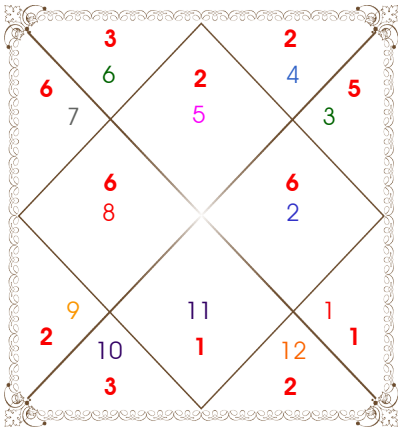

लग्न का अष्टकवर्ग

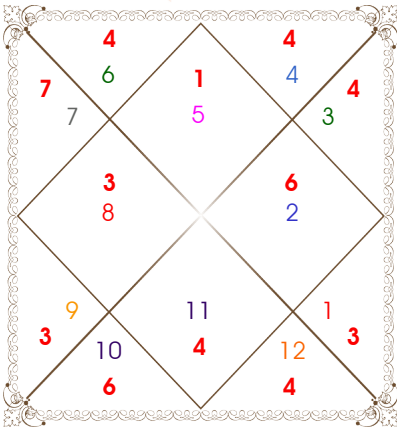

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

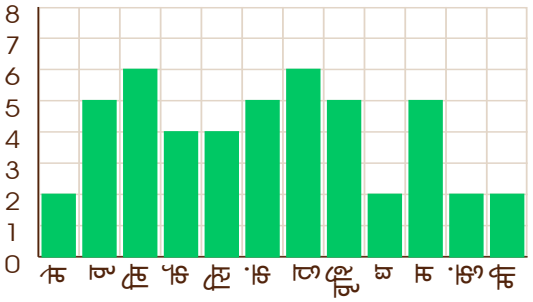

चन्द्र

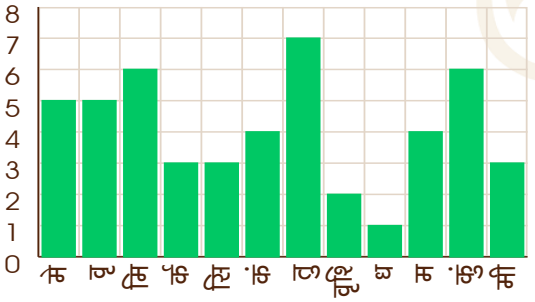

मंगल

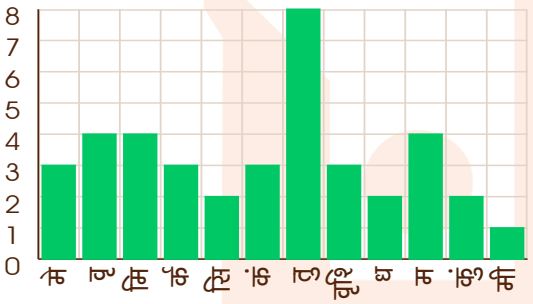

बुध

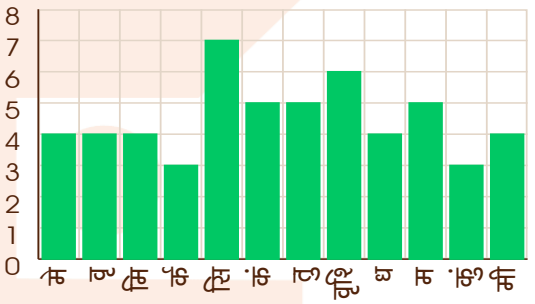

गुरु

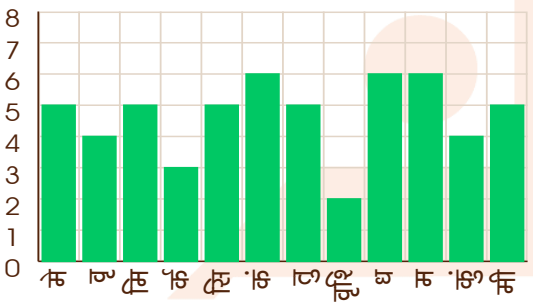

शुक्र

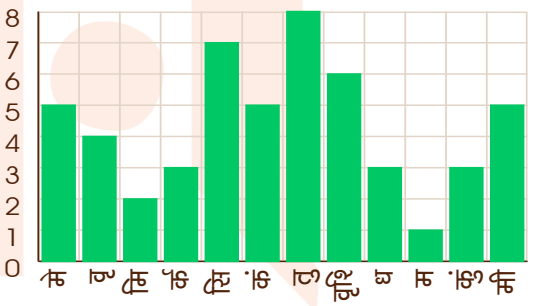

शनि

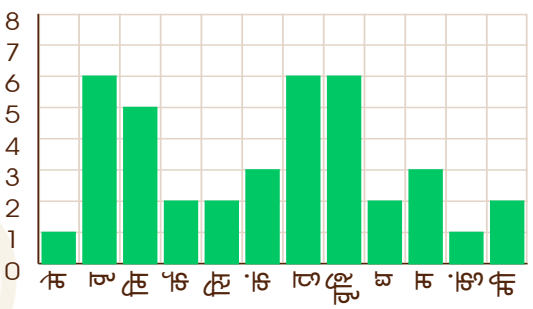

लग्न

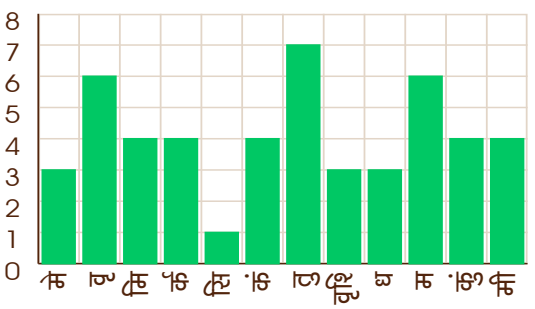

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

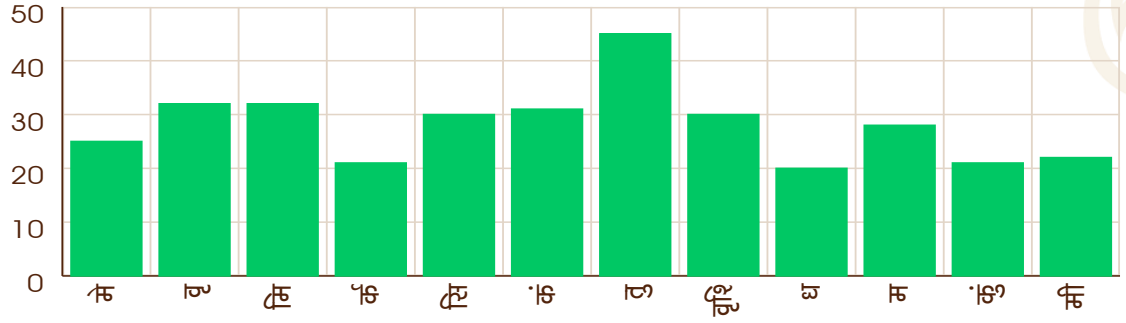

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

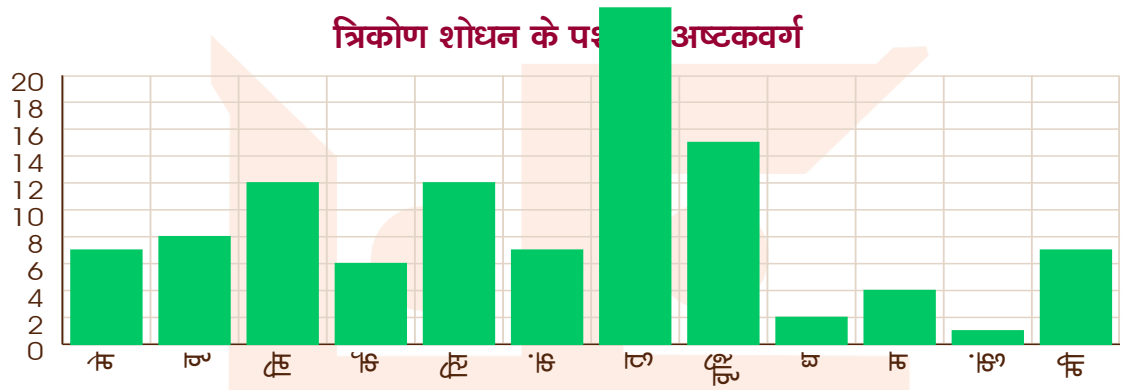

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

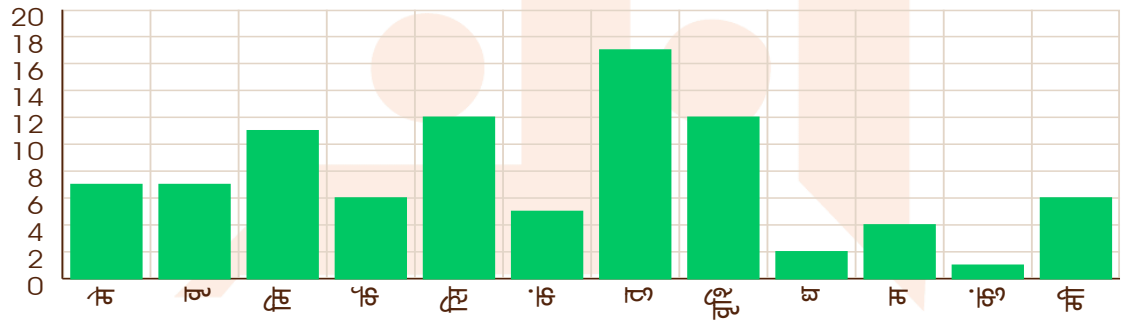

शोध्य पिंड

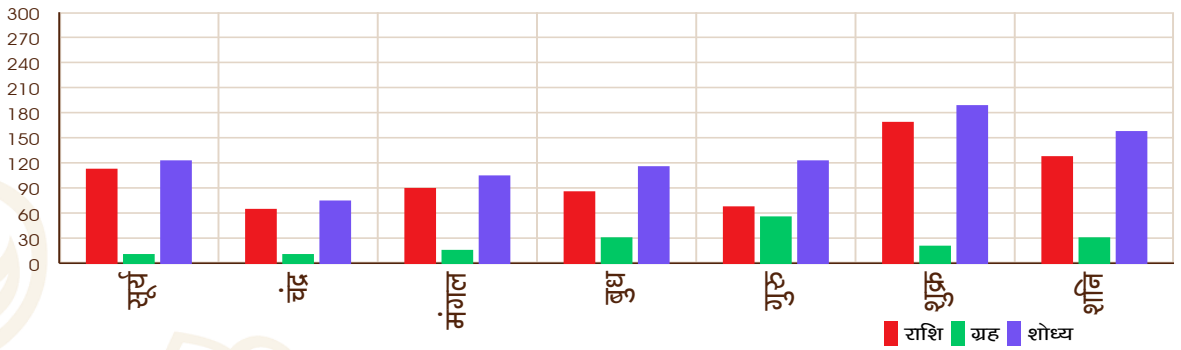

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 4 वर्ष 10 मास 14 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
26/12/1961		10/11/1966		10/11/1986		09/11/1992		10/11/2002	
10/11/1966		10/11/1986		09/11/1992		10/11/2002		10/11/2009	
	00/00/0000	शुक्र	11/03/1970	सूर्य	28/02/1987	चंद्र	10/09/1993	मंगल	08/04/2003
	00/00/0000	सूर्य	12/03/1971	चंद्र	29/08/1987	मंगल	11/04/1994	राहु	26/04/2004
	26/12/1961	चंद्र	09/11/1972	मंगल	04/01/1988	राहु	11/10/1995	गुरु	02/04/2005
चंद्र	14/05/1962	मंगल	10/01/1974	राहु	28/11/1988	गुरु	09/02/1997	शनि	11/05/2006
मंगल	11/10/1962	राहु	09/01/1977	गुरु	16/09/1989	शनि	10/09/1998	बुध	09/05/2007
राहु	29/10/1963	गुरु	10/09/1979	शनि	29/08/1990	बुध	10/02/2000	केतु	05/10/2007
गुरु	04/10/1964	शनि	10/11/1982	बुध	05/07/1991	केतु	10/09/2000	शुक्र	04/12/2008
शनि	13/11/1965	बुध	10/09/1985	केतु	10/11/1991	शुक्र	11/05/2002	सूर्य	11/04/2009
बुध	10/11/1966	केतु	10/11/1986	शुक्र	09/11/1992	सूर्य	10/11/2002	चंद्र	10/11/2009

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
10/11/2009		10/11/2027		10/11/2043		10/11/2062		10/11/2079	
10/11/2027		10/11/2043		10/11/2062		10/11/2079		00/00/0000	
राहु	23/07/2012	गुरु	28/12/2029	शनि	13/11/2046	बुध	08/04/2065	केतु	07/04/2080
गुरु	16/12/2014	शनि	11/07/2032	बुध	23/07/2049	केतु	05/04/2066	शुक्र	07/06/2081
शनि	22/10/2017	बुध	17/10/2034	केतु	01/09/2050	शुक्र	03/02/2069	सूर्य	13/10/2081
बुध	11/05/2020	केतु	22/09/2035	शुक्र	01/11/2053	सूर्य	10/12/2069	चंद्र	26/12/2081
केतु	29/05/2021	शुक्र	23/05/2038	सूर्य	14/10/2054	चंद्र	12/05/2071		00/00/0000
शुक्र	29/05/2024	सूर्य	12/03/2039	चंद्र	14/05/2056	मंगल	08/05/2072		00/00/0000
सूर्य	23/04/2025	चंद्र	11/07/2040	मंगल	23/06/2057	राहु	25/11/2074		00/00/0000
चंद्र	23/10/2026	मंगल	17/06/2041	राहु	29/04/2060	गुरु	02/03/2077		00/00/0000
मंगल	10/11/2027	राहु	10/11/2043	गुरु	10/11/2062	शनि	10/11/2079		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 4 वर्ष 10 मा 16 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
26/12/1961		14/05/1962		11/10/1962		29/10/1963		04/10/1964	
14/05/1962		11/10/1962		29/10/1963		04/10/1964		13/11/1965	
	00/00/0000	मंगल	23/05/1962	राहु	07/12/1962	गुरु	13/12/1963	शनि	07/12/1964
	00/00/0000	राहु	14/06/1962	गुरु	27/01/1963	शनि	05/02/1964	बुध	02/02/1965
	26/12/1961	गुरु	04/07/1962	शनि	29/03/1963	बुध	25/03/1964	केतु	26/02/1965
गुरु	12/01/1962	शनि	28/07/1962	बुध	22/05/1963	केतु	14/04/1964	शुक्र	04/05/1965
शनि	15/02/1962	बुध	18/08/1962	केतु	14/06/1963	शुक्र	09/06/1964	सूर्य	25/05/1965
बुध	17/03/1962	केतु	27/08/1962	शुक्र	17/08/1963	सूर्य	26/06/1964	चंद्र	27/06/1965
केतु	29/03/1962	शुक्र	21/09/1962	सूर्य	05/09/1963	चंद्र	25/07/1964	मंगल	21/07/1965
शुक्र	04/05/1962	सूर्य	28/09/1962	चंद्र	07/10/1963	मंगल	14/08/1964	राहु	20/09/1965
सूर्य	14/05/1962	चंद्र	11/10/1962	मंगल	29/10/1963	राहु	04/10/1964	गुरु	13/11/1965

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
13/11/1965		10/11/1966		11/03/1970		12/03/1971		09/11/1972	
10/11/1966		11/03/1970		12/03/1971		09/11/1972		10/01/1974	
बुध	03/01/1966	शुक्र	01/06/1967	सूर्य	30/03/1970	चंद्र	01/05/1971	मंगल	04/12/1972
केतु	24/01/1966	सूर्य	01/08/1967	चंद्र	29/04/1970	मंगल	06/06/1971	राहु	06/02/1973
शुक्र	26/03/1966	चंद्र	10/11/1967	मंगल	20/05/1970	राहु	05/09/1971	गुरु	04/04/1973
सूर्य	13/04/1966	मंगल	20/01/1968	राहु	14/07/1970	गुरु	25/11/1971	शनि	11/06/1973
चंद्र	13/05/1966	राहु	21/07/1968	गुरु	01/09/1970	शनि	01/03/1972	बुध	10/08/1973
मंगल	03/06/1966	गुरु	30/12/1968	शनि	29/10/1970	बुध	26/05/1972	केतु	04/09/1973
राहु	27/07/1966	शनि	11/07/1969	बुध	20/12/1970	केतु	01/07/1972	शुक्र	14/11/1973
गुरु	14/09/1966	बुध	30/12/1969	केतु	10/01/1971	शुक्र	10/10/1972	सूर्य	05/12/1973
शनि	10/11/1966	केतु	11/03/1970	शुक्र	12/03/1971	सूर्य	09/11/1972	चंद्र	10/01/1974

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
10/01/1974		09/01/1977		10/09/1979		10/11/1982		10/09/1985	
09/01/1977		10/09/1979		10/11/1982		10/09/1985		10/11/1986	
राहु	23/06/1974	गुरु	19/05/1977	शनि	11/03/1980	बुध	06/04/1983	केतु	05/10/1985
गुरु	16/11/1974	शनि	20/10/1977	बुध	22/08/1980	केतु	05/06/1983	शुक्र	15/12/1985
शनि	09/05/1975	बुध	07/03/1978	केतु	29/10/1980	शुक्र	24/11/1983	सूर्य	05/01/1986
बुध	11/10/1975	केतु	03/05/1978	शुक्र	10/05/1981	सूर्य	15/01/1984	चंद्र	10/02/1986
केतु	14/12/1975	शुक्र	13/10/1978	सूर्य	06/07/1981	चंद्र	10/04/1984	मंगल	06/03/1986
शुक्र	13/06/1976	सूर्य	30/11/1978	चंद्र	11/10/1981	मंगल	10/06/1984	राहु	09/05/1986
सूर्य	07/08/1976	चंद्र	19/02/1979	मंगल	17/12/1981	राहु	12/11/1984	गुरु	05/07/1986
चंद्र	06/11/1976	मंगल	17/04/1979	राहु	09/06/1982	गुरु	30/03/1985	शनि	11/09/1986
मंगल	09/01/1977	राहु	10/09/1979	गुरु	10/11/1982	शनि	10/09/1985	बुध	10/11/1986

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
10/11/1986		28/02/1987		29/08/1987		04/01/1988		28/11/1988	
28/02/1987		29/08/1987		04/01/1988		28/11/1988		16/09/1989	
सूर्य	15/11/1986	चंद्र	15/03/1987	मंगल	06/09/1987	राहु	22/02/1988	गुरु	06/01/1989
चंद्र	25/11/1986	मंगल	25/03/1987	राहु	25/09/1987	गुरु	06/04/1988	शनि	21/02/1989
मंगल	01/12/1986	राहु	22/04/1987	गुरु	12/10/1987	शनि	28/05/1988	बुध	03/04/1989
राहु	17/12/1986	गुरु	16/05/1987	शनि	01/11/1987	बुध	14/07/1988	केतु	20/04/1989
गुरु	01/01/1987	शनि	14/06/1987	बुध	19/11/1987	केतु	02/08/1988	शुक्र	08/06/1989
शनि	18/01/1987	बुध	10/07/1987	केतु	27/11/1987	शुक्र	26/09/1988	सूर्य	23/06/1989
बुध	03/02/1987	केतु	21/07/1987	शुक्र	18/12/1987	सूर्य	12/10/1988	चंद्र	17/07/1989
केतु	09/02/1987	शुक्र	20/08/1987	सूर्य	24/12/1987	चंद्र	09/11/1988	मंगल	03/08/1989
शुक्र	28/02/1987	सूर्य	29/08/1987	चंद्र	04/01/1988	मंगल	28/11/1988	राहु	16/09/1989

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
16/09/1989		29/08/1990		05/07/1991		10/11/1991		09/11/1992	
29/08/1990		05/07/1991		10/11/1991		09/11/1992		10/09/1993	
शनि	10/11/1989	बुध	12/10/1990	केतु	13/07/1991	शुक्र	10/01/1992	चंद्र	05/12/1992
बुध	29/12/1989	केतु	30/10/1990	शुक्र	03/08/1991	सूर्य	28/01/1992	मंगल	23/12/1992
केतु	18/01/1990	शुक्र	21/12/1990	सूर्य	10/08/1991	चंद्र	28/02/1992	राहु	06/02/1993
शुक्र	17/03/1990	सूर्य	05/01/1991	चंद्र	20/08/1991	मंगल	20/03/1992	गुरु	19/03/1993
सूर्य	03/04/1990	चंद्र	31/01/1991	मंगल	28/08/1991	राहु	14/05/1992	शनि	06/05/1993
चंद्र	02/05/1990	मंगल	18/02/1991	राहु	16/09/1991	गुरु	02/07/1992	बुध	18/06/1993
मंगल	23/05/1990	राहु	06/04/1991	गुरु	03/10/1991	शनि	28/08/1992	केतु	06/07/1993
राहु	14/07/1990	गुरु	17/05/1991	शनि	23/10/1991	बुध	19/10/1992	शुक्र	26/08/1993
गुरु	29/08/1990	शनि	05/07/1991	बुध	10/11/1991	केतु	09/11/1992	सूर्य	10/09/1993

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
10/09/1993		11/04/1994		11/10/1995		09/02/1997		10/09/1998	
11/04/1994		11/10/1995		09/02/1997		10/09/1998		10/02/2000	
मंगल	22/09/1993	राहु	02/07/1994	गुरु	15/12/1995	शनि	11/05/1997	बुध	22/11/1998
राहु	24/10/1993	गुरु	13/09/1994	शनि	01/03/1996	बुध	01/08/1997	केतु	23/12/1998
गुरु	22/11/1993	शनि	09/12/1994	बुध	09/05/1996	केतु	04/09/1997	शुक्र	19/03/1999
शनि	25/12/1993	बुध	24/02/1995	केतु	06/06/1996	शुक्र	09/12/1997	सूर्य	14/04/1999
बुध	25/01/1994	केतु	28/03/1995	शुक्र	26/08/1996	सूर्य	07/01/1998	चंद्र	27/05/1999
केतु	06/02/1994	शुक्र	28/06/1995	सूर्य	20/09/1996	चंद्र	24/02/1998	मंगल	26/06/1999
शुक्र	13/03/1994	सूर्य	25/07/1995	चंद्र	30/10/1996	मंगल	30/03/1998	राहु	12/09/1999
सूर्य	24/03/1994	चंद्र	09/09/1995	मंगल	28/11/1996	राहु	25/06/1998	गुरु	20/11/1999
चंद्र	11/04/1994	मंगल	11/10/1995	राहु	09/02/1997	गुरु	10/09/1998	शनि	10/02/2000

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु	
10/02/2000	
10/09/2000	
केतु	22/02/2000
शुक्र	28/03/2000
सूर्य	08/04/2000
चंद्र	26/04/2000
मंगल	08/05/2000
राहु	09/06/2000
गुरु	08/07/2000
शनि	10/08/2000
बुध	10/09/2000

चंद्र - शुक्र	
10/09/2000	
11/05/2002	
शुक्र	20/12/2000
सूर्य	19/01/2001
चंद्र	11/03/2001
मंगल	16/04/2001
राहु	16/07/2001
गुरु	05/10/2001
शनि	10/01/2002
बुध	06/04/2002
केतु	11/05/2002

चंद्र - सूर्य	
11/05/2002	
10/11/2002	
सूर्य	20/05/2002
चंद्र	05/06/2002
मंगल	15/06/2002
राहु	13/07/2002
गुरु	06/08/2002
शनि	04/09/2002
बुध	30/09/2002
केतु	11/10/2002
शुक्र	10/11/2002

मंगल - मंगल	
10/11/2002	
08/04/2003	
मंगल	19/11/2002
राहु	11/12/2002
गुरु	31/12/2002
शनि	24/01/2003
बुध	14/02/2003
केतु	22/02/2003
शुक्र	19/03/2003
सूर्य	27/03/2003
चंद्र	08/04/2003

मंगल - राहु	
08/04/2003	
26/04/2004	
राहु	05/06/2003
गुरु	26/07/2003
शनि	24/09/2003
बुध	18/11/2003
केतु	10/12/2003
शुक्र	12/02/2004
सूर्य	02/03/2004
चंद्र	03/04/2004
मंगल	26/04/2004

मंगल - गुरु	
26/04/2004	
02/04/2005	
गुरु	10/06/2004
शनि	03/08/2004
बुध	20/09/2004
केतु	10/10/2004
शुक्र	06/12/2004
सूर्य	23/12/2004
चंद्र	20/01/2005
मंगल	09/02/2005
राहु	02/04/2005

मंगल - शनि	
02/04/2005	
11/05/2006	
शनि	05/06/2005
बुध	01/08/2005
केतु	25/08/2005
शुक्र	31/10/2005
सूर्य	20/11/2005
चंद्र	24/12/2005
मंगल	17/01/2006
राहु	18/03/2006
गुरु	11/05/2006

मंगल - बुध	
11/05/2006	
09/05/2007	
बुध	02/07/2006
केतु	23/07/2006
शुक्र	21/09/2006
सूर्य	09/10/2006
चंद्र	08/11/2006
मंगल	30/11/2006
राहु	23/01/2007
गुरु	12/03/2007
शनि	09/05/2007

मंगल - केतु	
09/05/2007	
05/10/2007	
केतु	17/05/2007
शुक्र	11/06/2007
सूर्य	19/06/2007
चंद्र	01/07/2007
मंगल	10/07/2007
राहु	01/08/2007
गुरु	21/08/2007
शनि	14/09/2007
बुध	05/10/2007

मंगल - शुक्र	
05/10/2007	
04/12/2008	
शुक्र	15/12/2007
सूर्य	05/01/2008
चंद्र	10/02/2008
मंगल	05/03/2008
राहु	08/05/2008
गुरु	04/07/2008
शनि	10/09/2008
बुध	09/11/2008
केतु	04/12/2008

मंगल - सूर्य	
04/12/2008	
11/04/2009	
सूर्य	10/12/2008
चंद्र	21/12/2008
मंगल	28/12/2008
राहु	16/01/2009
गुरु	03/02/2009
शनि	23/02/2009
बुध	13/03/2009
केतु	20/03/2009
शुक्र	11/04/2009

मंगल - चंद्र	
11/04/2009	
10/11/2009	
चंद्र	28/04/2009
मंगल	11/05/2009
राहु	12/06/2009
गुरु	10/07/2009
शनि	13/08/2009
बुध	12/09/2009
केतु	25/09/2009
शुक्र	30/10/2009
सूर्य	10/11/2009

राहु - राहु	
10/11/2009	
23/07/2012	
राहु	07/04/2010
गुरु	16/08/2010
शनि	19/01/2011
बुध	08/06/2011
केतु	04/08/2011
शुक्र	16/01/2012
सूर्य	05/03/2012
चंद्र	26/05/2012
मंगल	23/07/2012

राहु - गुरु	
23/07/2012	
16/12/2014	
गुरु	17/11/2012
शनि	05/04/2013
बुध	07/08/2013
केतु	27/09/2013
शुक्र	20/02/2014
सूर्य	05/04/2014
चंद्र	17/06/2014
मंगल	07/08/2014
राहु	16/12/2014

राहु - शनि	
16/12/2014	
22/10/2017	
शनि	30/05/2015
बुध	25/10/2015
केतु	24/12/2015
शुक्र	15/06/2016
सूर्य	06/08/2016
चंद्र	01/11/2016
मंगल	31/12/2016
राहु	06/06/2017
गुरु	22/10/2017

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
22/10/2017		11/05/2020		29/05/2021		29/05/2024		23/04/2025	
11/05/2020		29/05/2021		29/05/2024		23/04/2025		23/10/2026	
बुध	03/03/2018	केतु	02/06/2020	शुक्र	28/11/2021	सूर्य	15/06/2024	चंद्र	07/06/2025
केतु	27/04/2018	शुक्र	05/08/2020	सूर्य	22/01/2022	चंद्र	12/07/2024	मंगल	09/07/2025
शुक्र	29/09/2018	सूर्य	24/08/2020	चंद्र	23/04/2022	मंगल	31/07/2024	राहु	30/09/2025
सूर्य	15/11/2018	चंद्र	25/09/2020	मंगल	26/06/2022	राहु	18/09/2024	गुरु	12/12/2025
चंद्र	31/01/2019	मंगल	18/10/2020	राहु	07/12/2022	गुरु	01/11/2024	शनि	08/03/2026
मंगल	26/03/2019	राहु	14/12/2020	गुरु	02/05/2023	शनि	23/12/2024	बुध	25/05/2026
राहु	13/08/2019	गुरु	03/02/2021	शनि	23/10/2023	बुध	08/02/2025	केतु	26/06/2026
गुरु	15/12/2019	शनि	05/04/2021	बुध	26/03/2024	केतु	27/02/2025	शुक्र	25/09/2026
शनि	11/05/2020	बुध	29/05/2021	केतु	29/05/2024	शुक्र	23/04/2025	सूर्य	23/10/2026

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
23/10/2026		10/11/2027		28/12/2029		11/07/2032		17/10/2034	
10/11/2027		28/12/2029		11/07/2032		17/10/2034		22/09/2035	
मंगल	14/11/2026	गुरु	22/02/2028	शनि	24/05/2030	बुध	05/11/2032	केतु	05/11/2034
राहु	11/01/2027	शनि	24/06/2028	बुध	02/10/2030	केतु	23/12/2032	शुक्र	01/01/2035
गुरु	03/03/2027	बुध	13/10/2028	केतु	25/11/2030	शुक्र	10/05/2033	सूर्य	18/01/2035
शनि	02/05/2027	केतु	27/11/2028	शुक्र	28/04/2031	सूर्य	21/06/2033	चंद्र	16/02/2035
बुध	26/06/2027	शुक्र	06/04/2029	सूर्य	13/06/2031	चंद्र	29/08/2033	मंगल	08/03/2035
केतु	18/07/2027	सूर्य	15/05/2029	चंद्र	30/08/2031	मंगल	16/10/2033	राहु	28/04/2035
शुक्र	20/09/2027	चंद्र	19/07/2029	मंगल	23/10/2031	राहु	17/02/2034	गुरु	12/06/2035
सूर्य	09/10/2027	मंगल	03/09/2029	राहु	09/03/2032	गुरु	08/06/2034	शनि	05/08/2035
चंद्र	10/11/2027	राहु	28/12/2029	गुरु	11/07/2032	शनि	17/10/2034	बुध	22/09/2035

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
22/09/2035		23/05/2038		12/03/2039		11/07/2040		17/06/2041	
23/05/2038		12/03/2039		11/07/2040		17/06/2041		10/11/2043	
शुक्र	03/03/2036	सूर्य	07/06/2038	चंद्र	21/04/2039	मंगल	31/07/2040	राहु	26/10/2041
सूर्य	21/04/2036	चंद्र	01/07/2038	मंगल	20/05/2039	राहु	20/09/2040	गुरु	20/02/2042
चंद्र	11/07/2036	मंगल	19/07/2038	राहु	01/08/2039	गुरु	04/11/2040	शनि	09/07/2042
मंगल	06/09/2036	राहु	31/08/2038	गुरु	05/10/2039	शनि	28/12/2040	बुध	10/11/2042
राहु	30/01/2037	गुरु	09/10/2038	शनि	21/12/2039	बुध	14/02/2041	केतु	31/12/2042
गुरु	08/06/2037	शनि	25/11/2038	बुध	28/02/2040	केतु	06/03/2041	शुक्र	26/05/2043
शनि	10/11/2037	बुध	05/01/2039	केतु	27/03/2040	शुक्र	02/05/2041	सूर्य	09/07/2043
बुध	28/03/2038	केतु	22/01/2039	शुक्र	16/06/2040	सूर्य	19/05/2041	चंद्र	20/09/2043
केतु	23/05/2038	शुक्र	12/03/2039	सूर्य	11/07/2040	चंद्र	17/06/2041	मंगल	10/11/2043

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
10/11/2043		13/11/2046		23/07/2049		01/09/2050		01/11/2053	
13/11/2046		23/07/2049		01/09/2050		01/11/2053		14/10/2054	
शनि	02/05/2044	बुध	01/04/2047	केतु	16/08/2049	शुक्र	13/03/2051	सूर्य	18/11/2053
बुध	05/10/2044	केतु	29/05/2047	शुक्र	22/10/2049	सूर्य	10/05/2051	चंद्र	17/12/2053
केतु	08/12/2044	शुक्र	08/11/2047	सूर्य	11/11/2049	चंद्र	14/08/2051	मंगल	06/01/2054
शुक्र	09/06/2045	सूर्य	28/12/2047	चंद्र	15/12/2049	मंगल	20/10/2051	राहु	27/02/2054
सूर्य	03/08/2045	चंद्र	19/03/2048	मंगल	08/01/2050	राहु	11/04/2052	गुरु	14/04/2054
चंद्र	03/11/2045	मंगल	15/05/2048	राहु	10/03/2050	गुरु	12/09/2052	शनि	08/06/2054
मंगल	06/01/2046	राहु	09/10/2048	गुरु	02/05/2050	शनि	14/03/2053	बुध	27/07/2054
राहु	19/06/2046	गुरु	17/02/2049	शनि	06/07/2050	बुध	25/08/2053	केतु	17/08/2054
गुरु	13/11/2046	शनि	23/07/2049	बुध	01/09/2050	केतु	01/11/2053	शुक्र	14/10/2054

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
14/10/2054		14/05/2056		23/06/2057		29/04/2060		10/11/2062	
14/05/2056		23/06/2057		29/04/2060		10/11/2062		08/04/2065	
चंद्र	01/12/2054	मंगल	06/06/2056	राहु	26/11/2057	गुरु	30/08/2060	बुध	15/03/2063
मंगल	03/01/2055	राहु	06/08/2056	गुरु	14/04/2058	शनि	24/01/2061	केतु	05/05/2063
राहु	31/03/2055	गुरु	29/09/2056	शनि	25/09/2058	बुध	04/06/2061	शुक्र	28/09/2063
गुरु	16/06/2055	शनि	02/12/2056	बुध	20/02/2059	केतु	28/07/2061	सूर्य	11/11/2063
शनि	16/09/2055	बुध	29/01/2057	केतु	22/04/2059	शुक्र	29/12/2061	चंद्र	24/01/2064
बुध	07/12/2055	केतु	21/02/2057	शुक्र	12/10/2059	सूर्य	13/02/2062	मंगल	15/03/2064
केतु	10/01/2056	शुक्र	30/04/2057	सूर्य	03/12/2059	चंद्र	01/05/2062	राहु	25/07/2064
शुक्र	15/04/2056	सूर्य	20/05/2057	चंद्र	28/02/2060	मंगल	24/06/2062	गुरु	19/11/2064
सूर्य	14/05/2056	चंद्र	23/06/2057	मंगल	29/04/2060	राहु	10/11/2062	शनि	08/04/2065

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
08/04/2065		05/04/2066		03/02/2069		10/12/2069		12/05/2071	
05/04/2066		03/02/2069		10/12/2069		12/05/2071		08/05/2072	
केतु	29/04/2065	शुक्र	24/09/2066	सूर्य	18/02/2069	चंद्र	22/01/2070	मंगल	02/06/2071
शुक्र	28/06/2065	सूर्य	15/11/2066	चंद्र	16/03/2069	मंगल	21/02/2070	राहु	26/07/2071
सूर्य	16/07/2065	चंद्र	09/02/2067	मंगल	03/04/2069	राहु	10/05/2070	गुरु	12/09/2071
चंद्र	15/08/2065	मंगल	11/04/2067	राहु	20/05/2069	गुरु	18/07/2070	शनि	09/11/2071
मंगल	06/09/2065	राहु	13/09/2067	गुरु	30/06/2069	शनि	08/10/2070	बुध	30/12/2071
राहु	30/10/2065	गुरु	29/01/2068	शनि	18/08/2069	बुध	20/12/2070	केतु	20/01/2072
गुरु	17/12/2065	शनि	11/07/2068	बुध	01/10/2069	केतु	19/01/2071	शुक्र	20/03/2072
शनि	12/02/2066	बुध	04/12/2068	केतु	19/10/2069	शुक्र	16/04/2071	सूर्य	08/04/2072
बुध	05/04/2066	केतु	03/02/2069	शुक्र	10/12/2069	सूर्य	12/05/2071	चंद्र	08/05/2072

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - चंद्र - गुरु		राहु - चंद्र - शनि		राहु - चंद्र - बुध		राहु - चंद्र - केतु	
30/09/2025 02:32		12/12/2025 03:44		08/03/2026 21:39		25/05/2026 12:26	
12/12/2025 03:44		08/03/2026 21:39		25/05/2026 12:26		26/06/2026 11:27	
गुरु	09/10/2025 20:18	शनि	25/12/2025 21:22	बुध	19/03/2026 21:33	केतु	27/05/2026 09:11
शनि	21/10/2025 09:53	बुध	07/01/2026 04:19	केतु	24/03/2026 10:13	शुक्र	01/06/2026 17:01
बुध	31/10/2025 18:15	केतु	12/01/2026 05:45	शुक्र	06/04/2026 08:41	सूर्य	03/06/2026 07:22
केतु	05/11/2025 00:31	शुक्र	26/01/2026 16:45	सूर्य	10/04/2026 05:49	चंद्र	05/06/2026 23:17
शुक्र	17/11/2025 04:43	सूर्य	31/01/2026 00:50	चंद्र	16/04/2026 17:03	मंगल	07/06/2026 20:02
सूर्य	20/11/2025 20:23	चंद्र	07/02/2026 06:20	मंगल	21/04/2026 05:42	राहु	12/06/2026 15:05
चंद्र	26/11/2025 22:29	मंगल	12/02/2026 07:47	राहु	02/05/2026 21:07	गुरु	16/06/2026 21:21
मंगल	01/12/2025 04:45	राहु	25/02/2026 08:04	गुरु	13/05/2026 05:30	शनि	21/06/2026 22:48
राहु	12/12/2025 03:44	गुरु	08/03/2026 21:39	शनि	25/05/2026 12:26	बुध	26/06/2026 11:27

राहु - चंद्र - शुक्र		राहु - चंद्र - सूर्य		राहु - मंगल - मंगल		राहु - मंगल - राहु	
26/06/2026 11:27		25/09/2026 18:57		23/10/2026 04:24		14/11/2026 13:20	
25/09/2026 18:57		23/10/2026 04:24		14/11/2026 13:20		11/01/2027 01:58	
शुक्र	11/07/2026 16:42	सूर्य	27/09/2026 03:50	मंगल	24/10/2026 11:44	राहु	23/11/2026 04:25
सूर्य	16/07/2026 06:17	चंद्र	29/09/2026 10:37	राहु	27/10/2026 20:16	गुरु	30/11/2026 20:30
चंद्र	23/07/2026 20:54	मंगल	01/10/2026 00:58	गुरु	30/10/2026 19:51	शनि	09/12/2026 23:07
मंगल	29/07/2026 04:45	राहु	05/10/2026 03:35	शनि	03/11/2026 08:52	बुध	18/12/2026 02:42
राहु	11/08/2026 21:28	गुरु	08/10/2026 19:15	बुध	06/11/2026 12:56	केतु	21/12/2026 11:14
गुरु	24/08/2026 01:40	शनि	13/10/2026 03:21	केतु	07/11/2026 20:15	शुक्र	31/12/2026 01:21
शनि	07/09/2026 12:39	बुध	17/10/2026 00:29	शुक्र	11/11/2026 13:44	सूर्य	02/01/2027 22:23
बुध	20/09/2026 11:07	केतु	18/10/2026 14:50	सूर्य	12/11/2026 16:35	चंद्र	07/01/2027 17:26
केतु	25/09/2026 18:57	शुक्र	23/10/2026 04:24	चंद्र	14/11/2026 13:20	मंगल	11/01/2027 01:58

राहु - मंगल - गुरु		राहु - मंगल - शनि		राहु - मंगल - बुध		राहु - मंगल - केतु	
11/01/2027 01:58		03/03/2027 05:13		02/05/2027 22:33		26/06/2027 06:30	
03/03/2027 05:13		02/05/2027 22:33		26/06/2027 06:30		18/07/2027 15:25	
गुरु	17/01/2027 21:36	शनि	12/03/2027 19:57	बुध	10/05/2027 15:17	केतु	27/06/2027 13:49
शनि	25/01/2027 23:55	बुध	21/03/2027 10:25	केतु	13/05/2027 19:21	शुक्र	01/07/2027 07:18
बुध	02/02/2027 05:46	केतु	24/03/2027 23:26	शुक्र	22/05/2027 20:40	सूर्य	02/07/2027 10:09
केतु	05/02/2027 05:22	शुक्र	04/04/2027 02:19	सूर्य	25/05/2027 13:52	चंद्र	04/07/2027 06:54
शुक्र	13/02/2027 17:54	सूर्य	07/04/2027 03:11	चंद्र	30/05/2027 02:32	मंगल	05/07/2027 14:13
सूर्य	16/02/2027 07:16	चंद्र	12/04/2027 04:38	मंगल	02/06/2027 06:36	राहु	08/07/2027 22:45
चंद्र	20/02/2027 13:32	मंगल	15/04/2027 17:39	राहु	10/06/2027 10:11	गुरु	11/07/2027 22:21
मंगल	23/02/2027 13:07	राहु	24/04/2027 20:15	गुरु	17/06/2027 16:03	शनि	15/07/2027 11:21
राहु	03/03/2027 05:13	गुरु	02/05/2027 22:33	शनि	26/06/2027 06:30	बुध	18/07/2027 15:25

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - मंगल - शुक्र	
18/07/2027 15:25	
20/09/2027 13:28	
शुक्र	29/07/2027 07:06
सूर्य	01/08/2027 11:48
चंद्र	06/08/2027 19:38
मंगल	10/08/2027 13:07
राहु	20/08/2027 03:14
गुरु	28/08/2027 15:46
शनि	07/09/2027 18:39
बुध	16/09/2027 19:59
केतु	20/09/2027 13:28

राहु - मंगल - सूर्य	
20/09/2027 13:28	
09/10/2027 17:41	
सूर्य	21/09/2027 12:29
चंद्र	23/09/2027 02:50
मंगल	24/09/2027 05:41
राहु	27/09/2027 02:42
गुरु	29/09/2027 16:04
शनि	02/10/2027 16:56
बुध	05/10/2027 10:08
केतु	06/10/2027 12:59
शुक्र	09/10/2027 17:41

राहु - मंगल - चंद्र	
09/10/2027 17:41	
10/11/2027 16:42	
चंद्र	12/10/2027 09:36
मंगल	14/10/2027 06:21
राहु	19/10/2027 01:24
गुरु	23/10/2027 07:40
शनि	28/10/2027 09:07
बुध	01/11/2027 21:47
केतु	03/11/2027 18:31
शुक्र	09/11/2027 02:21
सूर्य	10/11/2027 16:42

गुरु - गुरु - गुरु	
10/11/2027 16:42	
22/02/2028 14:09	
गुरु	24/11/2027 13:10
शनि	10/12/2027 23:58
बुध	25/12/2027 17:12
केतु	31/12/2027 18:39
शुक्र	18/01/2028 02:13
सूर्य	23/01/2028 06:54
चंद्र	31/01/2028 22:41
मंगल	07/02/2028 00:08
राहु	22/02/2028 14:09

गुरु - गुरु - शनि	
22/02/2028 14:09	
24/06/2028 23:06	
शनि	13/03/2028 02:58
बुध	30/03/2028 14:26
केतु	06/04/2028 19:09
शुक्र	27/04/2028 08:39
सूर्य	03/05/2028 12:42
चंद्र	13/05/2028 19:27
मंगल	21/05/2028 00:10
राहु	08/06/2028 12:19
गुरु	24/06/2028 23:06

गुरु - गुरु - बुध	
24/06/2028 23:06	
13/10/2028 08:23	
बुध	10/07/2028 14:25
केतु	17/07/2028 00:58
शुक्र	04/08/2028 10:31
सूर्य	09/08/2028 22:58
चंद्र	19/08/2028 03:45
मंगल	25/08/2028 14:17
राहु	11/09/2028 03:41
गुरु	25/09/2028 20:55
शनि	13/10/2028 08:23

गुरु - गुरु - केतु	
13/10/2028 08:23	
27/11/2028 19:16	
केतु	16/10/2028 00:01
शुक्र	23/10/2028 13:50
सूर्य	25/10/2028 20:23
चंद्र	29/10/2028 15:17
मंगल	01/11/2028 06:55
राहु	08/11/2028 02:33
गुरु	14/11/2028 04:00
शनि	21/11/2028 08:44
बुध	27/11/2028 19:16

गुरु - गुरु - शुक्र	
27/11/2028 19:16	
06/04/2029 16:04	
शुक्र	19/12/2028 10:44
सूर्य	25/12/2028 22:34
चंद्र	05/01/2029 18:18
मंगल	13/01/2029 08:07
राहु	01/02/2029 19:38
गुरु	19/02/2029 03:13
शनि	11/03/2029 16:42
बुध	30/03/2029 02:15
केतु	06/04/2029 16:04

गुरु - गुरु - सूर्य	
06/04/2029 16:04	
15/05/2029 15:06	
सूर्य	08/04/2029 14:49
चंद्र	11/04/2029 20:44
मंगल	14/04/2029 03:17
राहु	19/04/2029 23:32
गुरु	25/04/2029 04:13
शनि	01/05/2029 08:16
बुध	06/05/2029 20:43
केतु	09/05/2029 03:16
शुक्र	15/05/2029 15:06

गुरु - गुरु - चंद्र	
15/05/2029 15:06	
19/07/2029 13:30	
चंद्र	21/05/2029 00:58
मंगल	24/05/2029 19:53
राहु	03/06/2029 13:38
गुरु	12/06/2029 05:26
शनि	22/06/2029 12:10
बुध	01/07/2029 16:57
केतु	05/07/2029 11:51
शुक्र	16/07/2029 07:35
सूर्य	19/07/2029 13:30

गुरु - गुरु - मंगल	
19/07/2029 13:30	
03/09/2029 00:23	
मंगल	22/07/2029 05:09
राहु	29/07/2029 00:46
गुरु	04/08/2029 02:13
शनि	11/08/2029 06:57
बुध	17/08/2029 17:29
केतु	20/08/2029 09:07
शुक्र	27/08/2029 22:56
सूर्य	30/08/2029 05:29
चंद्र	03/09/2029 00:23

गुरु - गुरु - राहु	
03/09/2029 00:23	
28/12/2029 21:30	
राहु	20/09/2029 13:09
गुरु	06/10/2029 03:10
शनि	24/10/2029 15:19
बुध	10/11/2029 04:42
केतु	17/11/2029 00:20
शुक्र	06/12/2029 11:52
सूर्य	12/12/2029 08:07
चंद्र	22/12/2029 01:53
मंगल	28/12/2029 21:30

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - शनि - शनि	
28/12/2029 21:30	
24/05/2030 09:39	
शनि	21/01/2030 02:14
बुध	10/02/2030 20:21
केतु	19/02/2030 09:27
शुक्र	15/03/2030 19:29
सूर्य	23/03/2030 03:17
चंद्र	04/04/2030 08:18
मंगल	12/04/2030 21:24
राहु	04/05/2030 20:50
गुरु	24/05/2030 09:39

गुरु - शनि - बुध	
24/05/2030 09:39	
02/10/2030 11:40	
बुध	11/06/2030 23:20
केतु	19/06/2030 14:51
शुक्र	11/07/2030 11:11
सूर्य	18/07/2030 00:29
चंद्र	28/07/2030 22:39
मंगल	05/08/2030 14:11
राहु	25/08/2030 06:05
गुरु	11/09/2030 17:33
शनि	02/10/2030 11:40

गुरु - शनि - केतु	
02/10/2030 11:40	
25/11/2030 11:05	
केतु	05/10/2030 15:14
शुक्र	14/10/2030 15:08
सूर्य	17/10/2030 07:54
चंद्र	21/10/2030 19:52
मंगल	24/10/2030 23:26
राहु	02/11/2030 01:44
गुरु	09/11/2030 06:28
शनि	17/11/2030 19:34
बुध	25/11/2030 11:05

गुरु - शनि - शुक्र	
25/11/2030 11:05	
28/04/2031 16:17	
शुक्र	21/12/2030 03:57
सूर्य	28/12/2030 21:01
चंद्र	10/01/2031 17:27
मंगल	19/01/2031 17:21
राहु	11/02/2031 20:32
गुरु	04/03/2031 10:01
शनि	28/03/2031 20:03
बुध	19/04/2031 16:23
केतु	28/04/2031 16:17

गुरु - शनि - सूर्य	
28/04/2031 16:17	
13/06/2031 22:39	
सूर्य	30/04/2031 23:48
चंद्र	04/05/2031 20:20
मंगल	07/05/2031 13:06
राहु	14/05/2031 11:40
गुरु	20/05/2031 15:43
शनि	27/05/2031 23:31
बुध	03/06/2031 12:49
केतु	06/06/2031 05:35
शुक्र	13/06/2031 22:39

गुरु - शनि - चंद्र	
13/06/2031 22:39	
30/08/2031 01:15	
चंद्र	20/06/2031 08:52
मंगल	24/06/2031 20:49
राहु	06/07/2031 10:24
गुरु	16/07/2031 17:09
शनि	28/07/2031 22:10
बुध	08/08/2031 20:20
केतु	13/08/2031 08:17
शुक्र	26/08/2031 04:43
सूर्य	30/08/2031 01:15

गुरु - शनि - मंगल	
30/08/2031 01:15	
23/10/2031 00:40	
मंगल	02/09/2031 04:49
राहु	10/09/2031 07:08
गुरु	17/09/2031 11:51
शनि	26/09/2031 00:57
बुध	03/10/2031 16:29
केतु	06/10/2031 20:02
शुक्र	15/10/2031 19:57
सूर्य	18/10/2031 12:43
चंद्र	23/10/2031 00:40

गुरु - शनि - राहु	
23/10/2031 00:40	
09/03/2032 19:45	
राहु	12/11/2031 20:20
गुरु	01/12/2031 08:28
शनि	23/12/2031 07:54
बुध	11/01/2032 23:48
केतु	20/01/2032 02:07
शुक्र	12/02/2032 05:17
सूर्य	19/02/2032 03:51
चंद्र	01/03/2032 17:26
मंगल	09/03/2032 19:45

गुरु - शनि - गुरु	
09/03/2032 19:45	
11/07/2032 04:42	
गुरु	26/03/2032 06:33
शनि	14/04/2032 19:22
बुध	02/05/2032 06:50
केतु	09/05/2032 11:33
शुक्र	30/05/2032 01:03
सूर्य	05/06/2032 05:06
चंद्र	15/06/2032 11:50
मंगल	22/06/2032 16:34
राहु	11/07/2032 04:42

गुरु - बुध - बुध	
11/07/2032 04:42	
05/11/2032 11:34	
बुध	27/07/2032 19:29
केतु	03/08/2032 15:41
शुक्र	23/08/2032 04:49
सूर्य	29/08/2032 01:34
चंद्र	07/09/2032 20:08
मंगल	14/09/2032 16:20
राहु	02/10/2032 06:34
गुरु	17/10/2032 21:53
शनि	05/11/2032 11:34

गुरु - बुध - केतु	
05/11/2032 11:34	
23/12/2032 18:38	
केतु	08/11/2032 07:11
शुक्र	16/11/2032 08:21
सूर्य	18/11/2032 18:19
चंद्र	22/11/2032 18:54
मंगल	25/11/2032 14:31
राहु	02/12/2032 20:22
गुरु	09/12/2032 06:55
शनि	16/12/2032 22:26
बुध	23/12/2032 18:38

गुरु - बुध - शुक्र	
23/12/2032 18:38	
10/05/2033 18:14	
शुक्र	15/01/2033 18:34
सूर्य	22/01/2033 16:08
चंद्र	03/02/2033 04:06
मंगल	11/02/2033 05:17
राहु	03/03/2033 22:01
गुरु	22/03/2033 07:34
शनि	13/04/2033 03:54
बुध	02/05/2033 17:03
केतु	10/05/2033 18:14

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - बुध - सूर्य		गुरु - बुध - चंद्र		गुरु - बुध - मंगल		गुरु - बुध - राहु	
10/05/2033 18:14		21/06/2033 03:42		29/08/2033 03:30		16/10/2033 10:34	
21/06/2033 03:42		29/08/2033 03:30		16/10/2033 10:34		17/02/2034 15:00	
सूर्य	12/05/2033 19:54	चंद्र	26/06/2033 21:41	मंगल	31/08/2033 23:07	राहु	04/11/2033 01:38
चंद्र	16/05/2033 06:41	मंगल	30/06/2033 22:17	राहु	08/09/2033 04:59	गुरु	20/11/2033 15:02
मंगल	18/05/2033 16:39	राहु	11/07/2033 06:39	गुरु	14/09/2033 15:31	शनि	10/12/2033 06:56
राहु	24/05/2033 21:40	गुरु	20/07/2033 11:25	शनि	22/09/2033 07:02	बुध	27/12/2033 21:09
गुरु	30/05/2033 10:08	शनि	31/07/2033 09:35	बुध	29/09/2033 03:14	केतु	04/01/2034 03:01
शनि	05/06/2033 23:26	बुध	10/08/2033 04:10	केतु	01/10/2033 22:51	शुक्र	24/01/2034 19:45
बुध	11/06/2033 20:10	केतु	14/08/2033 04:45	शुक्र	10/10/2033 00:02	सूर्य	31/01/2034 00:47
केतु	14/06/2033 06:08	शुक्र	25/08/2033 16:43	सूर्य	12/10/2033 09:59	चंद्र	10/02/2034 09:09
शुक्र	21/06/2033 03:42	सूर्य	29/08/2033 03:30	चंद्र	16/10/2033 10:34	मंगल	17/02/2034 15:00

गुरु - बुध - गुरु		गुरु - बुध - शनि		गुरु - केतु - केतु		गुरु - केतु - शुक्र	
17/02/2034 15:00		08/06/2034 00:17		17/10/2034 02:18		05/11/2034 23:34	
08/06/2034 00:17		17/10/2034 02:18		05/11/2034 23:34		01/01/2035 19:10	
गुरु	04/03/2034 08:15	शनि	28/06/2034 18:24	केतु	18/10/2034 06:09	शुक्र	15/11/2034 10:50
शनि	21/03/2034 19:43	बुध	17/07/2034 08:06	शुक्र	21/10/2034 13:41	सूर्य	18/11/2034 07:01
बुध	06/04/2034 11:02	केतु	24/07/2034 23:37	सूर्य	22/10/2034 13:33	चंद्र	23/11/2034 00:39
केतु	12/04/2034 21:34	शुक्र	15/08/2034 19:57	चंद्र	24/10/2034 05:20	मंगल	26/11/2034 08:11
शुक्र	01/05/2034 07:07	सूर्य	22/08/2034 09:15	मंगल	25/10/2034 09:10	राहु	04/12/2034 20:44
सूर्य	06/05/2034 19:35	चंद्र	02/09/2034 07:25	राहु	28/10/2034 08:45	गुरु	12/12/2034 10:33
चंद्र	16/05/2034 00:21	मंगल	09/09/2034 22:56	गुरु	31/10/2034 00:23	शनि	21/12/2034 10:27
मंगल	22/05/2034 10:54	राहु	29/09/2034 14:50	शनि	03/11/2034 03:57	बुध	29/12/2034 11:37
राहु	08/06/2034 00:17	गुरु	17/10/2034 02:18	बुध	05/11/2034 23:34	केतु	01/01/2035 19:10

गुरु - केतु - सूर्य		गुरु - केतु - चंद्र		गुरु - केतु - मंगल		गुरु - केतु - राहु	
01/01/2035 19:10		18/01/2035 20:15		16/02/2035 06:03		08/03/2035 03:18	
18/01/2035 20:15		16/02/2035 06:03		08/03/2035 03:18		28/04/2035 06:33	
सूर्य	02/01/2035 15:37	चंद्र	21/01/2035 05:04	मंगल	17/02/2035 09:53	राहु	15/03/2035 19:24
चंद्र	04/01/2035 01:43	मंगल	22/01/2035 20:50	राहु	20/02/2035 09:29	गुरु	22/03/2035 15:02
मंगल	05/01/2035 01:34	राहु	27/01/2035 03:06	गुरु	23/02/2035 01:07	शनि	30/03/2035 17:20
राहु	07/01/2035 14:56	गुरु	30/01/2035 22:01	शनि	26/02/2035 04:41	बुध	06/04/2035 23:12
गुरु	09/01/2035 21:29	शनि	04/02/2035 09:58	बुध	01/03/2035 00:17	केतु	09/04/2035 22:47
शनि	12/01/2035 14:15	बुध	08/02/2035 10:33	केतु	02/03/2035 04:08	शुक्र	18/04/2035 11:20
बुध	15/01/2035 00:12	केतु	10/02/2035 02:19	शुक्र	05/03/2035 11:40	सूर्य	21/04/2035 00:41
केतु	16/01/2035 00:04	शुक्र	14/02/2035 19:57	सूर्य	06/03/2035 11:32	चंद्र	25/04/2035 06:58
शुक्र	18/01/2035 20:15	सूर्य	16/02/2035 06:03	चंद्र	08/03/2035 03:18	मंगल	28/04/2035 06:33

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - चंद्र - गुरु - शुक्र	
05/11/2025 00:31	
17/11/2025 04:43	
शुक्र	07/11/2025 01:13
सूर्य	07/11/2025 15:50
चंद्र	08/11/2025 16:11
मंगल	09/11/2025 09:14
राहु	11/11/2025 05:03
गुरु	12/11/2025 20:01
शनि	14/11/2025 18:17
बुध	16/11/2025 11:41
केतु	17/11/2025 04:43

राहु - चंद्र - गुरु - सूर्य	
17/11/2025 04:43	
20/11/2025 20:23	
सूर्य	17/11/2025 09:06
चंद्र	17/11/2025 16:25
मंगल	17/11/2025 21:31
राहु	18/11/2025 10:40
गुरु	18/11/2025 22:22
शनि	19/11/2025 12:14
बुध	20/11/2025 00:40
केतु	20/11/2025 05:46
शुक्र	20/11/2025 20:23

राहु - चंद्र - गुरु - चंद्र	
20/11/2025 20:23	
26/11/2025 22:29	
चंद्र	21/11/2025 08:33
मंगल	21/11/2025 17:05
राहु	22/11/2025 15:00
गुरु	23/11/2025 10:29
शनि	24/11/2025 09:36
बुध	25/11/2025 06:18
केतु	25/11/2025 14:50
शुक्र	26/11/2025 15:11
सूर्य	26/11/2025 22:29

राहु - चंद्र - गुरु - मंगल	
26/11/2025 22:29	
01/12/2025 04:45	
मंगल	27/11/2025 04:27
राहु	27/11/2025 19:47
गुरु	28/11/2025 09:25
शनि	29/11/2025 01:37
बुध	29/11/2025 16:06
केतु	29/11/2025 22:04
शुक्र	30/11/2025 15:07
सूर्य	30/11/2025 20:14
चंद्र	01/12/2025 04:45

राहु - चंद्र - गुरु - राहु	
01/12/2025 04:45	
12/12/2025 03:44	
राहु	02/12/2025 20:12
गुरु	04/12/2025 07:16
शनि	06/12/2025 00:54
बुध	07/12/2025 14:09
केतु	08/12/2025 05:30
शुक्र	10/12/2025 01:20
सूर्य	10/12/2025 14:29
चंद्र	11/12/2025 12:24
मंगल	12/12/2025 03:44

राहु - चंद्र - शनि - शनि	
12/12/2025 03:44	
25/12/2025 21:22	
शनि	14/12/2025 07:56
बुध	16/12/2025 06:37
केतु	17/12/2025 01:51
शुक्र	19/12/2025 08:48
सूर्य	20/12/2025 01:16
चंद्र	21/12/2025 04:45
मंगल	21/12/2025 23:58
राहु	24/12/2025 01:25
गुरु	25/12/2025 21:22

राहु - चंद्र - शनि - बुध	
25/12/2025 21:22	
07/01/2026 04:19	
बुध	27/12/2025 15:09
केतु	28/12/2025 08:22
शुक्र	30/12/2025 09:31
सूर्य	31/12/2025 00:16
चंद्र	01/01/2026 00:50
मंगल	01/01/2026 18:03
राहु	03/01/2026 14:17
गुरु	05/01/2026 05:37
शनि	07/01/2026 04:19

राहु - चंद्र - शनि - केतु	
07/01/2026 04:19	
12/01/2026 05:45	
केतु	07/01/2026 11:24
शुक्र	08/01/2026 07:38
सूर्य	08/01/2026 13:42
चंद्र	08/01/2026 23:50
मंगल	09/01/2026 06:55
राहु	10/01/2026 01:08
गुरु	10/01/2026 17:19
शनि	11/01/2026 12:33
बुध	12/01/2026 05:45

राहु - चंद्र - शनि - शुक्र	
12/01/2026 05:45	
26/01/2026 16:45	
शुक्र	14/01/2026 15:35
सूर्य	15/01/2026 08:56
चंद्र	16/01/2026 13:51
मंगल	17/01/2026 10:06
राहु	19/01/2026 14:08
गुरु	21/01/2026 12:24
शनि	23/01/2026 19:21
बुध	25/01/2026 20:30
केतु	26/01/2026 16:45

राहु - चंद्र - शनि - सूर्य	
26/01/2026 16:45	
31/01/2026 00:50	
सूर्य	26/01/2026 21:57
चंद्र	27/01/2026 06:37
मंगल	27/01/2026 12:42
राहु	28/01/2026 04:19
गुरु	28/01/2026 18:11
शनि	29/01/2026 10:40
बुध	30/01/2026 01:25
केतु	30/01/2026 07:29
शुक्र	31/01/2026 00:50

राहु - चंद्र - शनि - चंद्र	
31/01/2026 00:50	
07/02/2026 06:20	
चंद्र	31/01/2026 15:18
मंगल	01/02/2026 01:25
राहु	02/02/2026 03:27
गुरु	03/02/2026 02:34
शनि	04/02/2026 06:03
बुध	05/02/2026 06:37
केतु	05/02/2026 16:45
शुक्र	06/02/2026 21:40
सूर्य	07/02/2026 06:20

राहु - चंद्र - शनि - मंगल	
07/02/2026 06:20	
12/02/2026 07:47	
मंगल	07/02/2026 13:25
राहु	08/02/2026 07:38
गुरु	08/02/2026 23:50
शनि	09/02/2026 19:03
बुध	10/02/2026 12:16
केतु	10/02/2026 19:21
शुक्र	11/02/2026 15:35
सूर्य	11/02/2026 21:40
चंद्र	12/02/2026 07:47

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - चंद्र - शनि - राहु	
12/02/2026 07:47	
25/02/2026 08:04	
राहु	14/02/2026 06:37
गुरु	16/02/2026 00:16
शनि	18/02/2026 01:42
बुध	19/02/2026 21:57
केतु	20/02/2026 16:10
शुक्र	22/02/2026 20:13
सूर्य	23/02/2026 11:50
चंद्र	24/02/2026 13:51
मंगल	25/02/2026 08:04

राहु - चंद्र - शनि - गुरु	
25/02/2026 08:04	
08/03/2026 21:39	
गुरु	26/02/2026 21:05
शनि	28/02/2026 17:02
बुध	02/03/2026 08:21
केतु	03/03/2026 00:33
शुक्र	04/03/2026 22:49
सूर्य	05/03/2026 12:42
चंद्र	06/03/2026 11:50
मंगल	07/03/2026 04:01
राहु	08/03/2026 21:39

राहु - चंद्र - बुध - बुध	
08/03/2026 21:39	
19/03/2026 21:33	
बुध	10/03/2026 11:03
केतु	11/03/2026 02:26
शुक्र	12/03/2026 22:25
सूर्य	13/03/2026 11:37
चंद्र	14/03/2026 09:36
मंगल	15/03/2026 01:00
राहु	16/03/2026 16:35
गुरु	18/03/2026 03:46
शनि	19/03/2026 21:33

राहु - चंद्र - बुध - केतु	
19/03/2026 21:33	
24/03/2026 10:13	
केतु	20/03/2026 03:53
शुक्र	20/03/2026 22:00
सूर्य	21/03/2026 03:26
चंद्र	21/03/2026 12:29
मंगल	21/03/2026 18:50
राहु	22/03/2026 11:08
गुरु	23/03/2026 01:37
शनि	23/03/2026 18:49
बुध	24/03/2026 10:13

राहु - चंद्र - बुध - शुक्र	
24/03/2026 10:13	
06/04/2026 08:41	
शुक्र	26/03/2026 13:57
सूर्य	27/03/2026 05:29
चंद्र	28/03/2026 07:21
मंगल	29/03/2026 01:28
राहु	31/03/2026 00:02
गुरु	01/04/2026 17:26
शनि	03/04/2026 18:35
बुध	05/04/2026 14:34
केतु	06/04/2026 08:41

राहु - चंद्र - बुध - सूर्य	
06/04/2026 08:41	
10/04/2026 05:49	
सूर्य	06/04/2026 13:20
चंद्र	06/04/2026 21:06
मंगल	07/04/2026 02:32
राहु	07/04/2026 16:30
गुरु	08/04/2026 04:55
शनि	08/04/2026 19:40
बुध	09/04/2026 08:51
केतु	09/04/2026 14:17
शुक्र	10/04/2026 05:49

राहु - चंद्र - बुध - चंद्र	
10/04/2026 05:49	
16/04/2026 17:03	
चंद्र	10/04/2026 18:45
मंगल	11/04/2026 03:48
राहु	12/04/2026 03:05
गुरु	12/04/2026 23:47
शनि	14/04/2026 00:22
बुध	14/04/2026 22:21
केतु	15/04/2026 07:25
शुक्र	16/04/2026 09:17
सूर्य	16/04/2026 17:03

राहु - चंद्र - बुध - मंगल	
16/04/2026 17:03	
21/04/2026 05:42	
मंगल	16/04/2026 23:23
राहु	17/04/2026 15:41
गुरु	18/04/2026 06:10
शनि	18/04/2026 23:23
बुध	19/04/2026 14:46
केतु	19/04/2026 21:07
शुक्र	20/04/2026 15:13
सूर्य	20/04/2026 20:39
चंद्र	21/04/2026 05:42

राहु - चंद्र - बुध - राहु	
21/04/2026 05:42	
02/05/2026 21:07	
राहु	22/04/2026 23:37
गुरु	24/04/2026 12:52
शनि	26/04/2026 09:07
बुध	28/04/2026 00:42
केतु	28/04/2026 17:00
शुक्र	30/04/2026 15:34
सूर्य	01/05/2026 05:32
चंद्र	02/05/2026 04:49
मंगल	02/05/2026 21:07

राहु - चंद्र - बुध - गुरु	
02/05/2026 21:07	
13/05/2026 05:30	
गुरु	04/05/2026 06:14
शनि	05/05/2026 21:34
बुध	07/05/2026 08:45
केतु	07/05/2026 23:14
शुक्र	09/05/2026 16:38
सूर्य	10/05/2026 05:03
चंद्र	11/05/2026 01:45
मंगल	11/05/2026 16:14
राहु	13/05/2026 05:30

राहु - चंद्र - बुध - शनि	
13/05/2026 05:30	
25/05/2026 12:26	
शनि	15/05/2026 04:12
बुध	16/05/2026 21:59
केतु	17/05/2026 15:11
शुक्र	19/05/2026 16:20
सूर्य	20/05/2026 07:05
चंद्र	21/05/2026 07:40
मंगल	22/05/2026 00:52
राहु	23/05/2026 21:06
गुरु	25/05/2026 12:26

राहु - चंद्र - केतु - केतु	
25/05/2026 12:26	
27/05/2026 09:11	
केतु	25/05/2026 15:03
शुक्र	25/05/2026 22:30
सूर्य	26/05/2026 00:44
चंद्र	26/05/2026 04:28
मंगल	26/05/2026 07:05
राहु	26/05/2026 13:47
गुरु	26/05/2026 19:45
शनि	27/05/2026 02:50
बुध	27/05/2026 09:11

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 9 वर्ष 0 मास 17 दिन

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
26/12/1961		13/01/1971		13/01/1985		13/01/2000		13/01/2016	
13/01/1971		13/01/1985		13/01/2000		13/01/2016		13/01/2033	
	00/00/0000	शनि	21/09/1972	केतु	22/12/1986	चंद्र	30/03/2002	बुध	11/07/2018
	26/12/1961	केतु	15/07/1974	चंद्र	16/01/1989	बुध	02/08/2004	शुक्र	01/03/2021
केतु	28/09/1962	चंद्र	19/06/1976	बुध	30/03/1991	शुक्र	26/01/2007	सूर्य	11/10/2022
चंद्र	14/07/1964	बुध	08/07/1978	शुक्र	27/07/1993	सूर्य	02/08/2008	मंगल	14/07/2024
बुध	10/06/1966	शुक्र	09/09/1980	सूर्य	28/12/1994	मंगल	30/03/2010	गुरु	10/06/2026
शुक्र	16/06/1968	सूर्य	07/01/1982	मंगल	17/07/1996	गुरु	13/01/2012	शनि	28/06/2028
सूर्य	09/09/1969	मंगल	20/06/1983	गुरु	23/03/1998	शनि	19/12/2013	केतु	09/09/2030
मंगल	13/01/1971	गुरु	13/01/1985	शनि	13/01/2000	केतु	13/01/2016	चंद्र	13/01/2033

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
13/01/2033		13/01/2051		13/01/2062		13/01/2074	
13/01/2051		13/01/2062		13/01/2074		00/00/0000	
शुक्र	30/10/2035	सूर्य	29/01/2052	मंगल	11/04/2063	गुरु	29/06/2075
सूर्य	14/07/2037	मंगल	20/03/2053	गुरु	15/08/2064	शनि	22/01/2077
मंगल	25/05/2039	गुरु	13/06/2054	शनि	26/01/2066	केतु	26/12/2077
गुरु	31/05/2041	शनि	11/10/2055	केतु	15/08/2067		00/00/0000
शनि	03/08/2043	केतु	14/03/2057	चंद्र	11/04/2069		00/00/0000
केतु	30/11/2045	चंद्र	19/09/2058	बुध	13/01/2071		00/00/0000
चंद्र	25/05/2048	बुध	30/04/2060	शुक्र	23/11/2072		00/00/0000
बुध	13/01/2051	शुक्र	13/01/2062	सूर्य	13/01/2074		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
26/12/1961		28/09/1962		14/07/1964		10/06/1966		16/06/1968	
28/09/1962		14/07/1964		10/06/1966		16/06/1968		09/09/1969	
	00/00/0000	चंद्र	28/12/1962	बुध	24/10/1964	शुक्र	02/10/1966	सूर्य	28/07/1968
	00/00/0000	बुध	02/04/1963	शुक्र	09/02/1965	सूर्य	11/12/1966	मंगल	13/09/1968
	26/12/1961	शुक्र	13/07/1963	सूर्य	16/04/1965	मंगल	25/02/1967	गुरु	03/11/1968
शुक्र	07/01/1962	सूर्य	13/09/1963	मंगल	27/06/1965	गुरु	19/05/1967	शनि	27/12/1968
सूर्य	06/03/1962	मंगल	20/11/1963	गुरु	13/09/1965	शनि	16/08/1967	केतु	23/02/1969
मंगल	08/05/1962	गुरु	01/02/1964	शनि	06/12/1965	केतु	19/11/1967	चंद्र	26/04/1969
गुरु	16/07/1962	शनि	20/04/1964	केतु	06/03/1966	चंद्र	29/02/1968	बुध	01/07/1969
शनि	28/09/1962	केतु	14/07/1964	चंद्र	10/06/1966	बुध	16/06/1968	शुक्र	09/09/1969

गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध	
09/09/1969		13/01/1971		21/09/1972		15/07/1974		19/06/1976	
13/01/1971		21/09/1972		15/07/1974		19/06/1976		08/07/1978	
मंगल	30/10/1969	शनि	29/03/1971	केतु	16/12/1972	चंद्र	20/10/1974	बुध	07/10/1976
गुरु	24/12/1969	केतु	17/06/1971	चंद्र	17/03/1973	बुध	31/01/1975	शुक्र	31/01/1977
शनि	21/02/1970	चंद्र	10/09/1971	बुध	22/06/1973	शुक्र	21/05/1975	सूर्य	12/04/1977
केतु	26/04/1970	बुध	09/12/1971	शुक्र	03/10/1973	सूर्य	27/07/1975	मंगल	29/06/1977
चंद्र	02/07/1970	शुक्र	14/03/1972	सूर्य	04/12/1973	मंगल	08/10/1975	गुरु	21/09/1977
बुध	12/09/1970	सूर्य	11/05/1972	मंगल	11/02/1974	गुरु	26/12/1975	शनि	20/12/1977
शुक्र	28/11/1970	मंगल	14/07/1972	गुरु	26/04/1974	शनि	20/03/1976	केतु	27/03/1978
सूर्य	13/01/1971	गुरु	21/09/1972	शनि	15/07/1974	केतु	19/06/1976	चंद्र	08/07/1978

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु	
08/07/1978		09/09/1980		07/01/1982		20/06/1983		13/01/1985	
09/09/1980		07/01/1982		20/06/1983		13/01/1985		22/12/1986	
शुक्र	08/11/1978	सूर्य	25/10/1980	मंगल	02/03/1982	गुरु	23/08/1983	केतु	14/04/1985
सूर्य	23/01/1979	मंगल	14/12/1980	गुरु	01/05/1982	शनि	31/10/1983	चंद्र	21/07/1985
मंगल	15/04/1979	गुरु	06/02/1981	शनि	04/07/1982	केतु	13/01/1984	बुध	02/11/1985
गुरु	13/07/1979	शनि	06/04/1981	केतु	10/09/1982	चंद्र	01/04/1984	शुक्र	20/02/1986
शनि	16/10/1979	केतु	07/06/1981	चंद्र	22/11/1982	बुध	24/06/1984	सूर्य	28/04/1986
केतु	27/01/1980	चंद्र	13/08/1981	बुध	07/02/1983	शुक्र	21/09/1984	मंगल	10/07/1986
चंद्र	15/05/1980	बुध	23/10/1981	शुक्र	01/05/1983	सूर्य	14/11/1984	गुरु	28/09/1986
बुध	09/09/1980	शुक्र	07/01/1982	सूर्य	20/06/1983	मंगल	13/01/1985	शनि	22/12/1986

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल	
22/12/1986		16/01/1989		30/03/1991		27/07/1993		28/12/1994	
16/01/1989		30/03/1991		27/07/1993		28/12/1994		17/07/1996	
चंद्र	05/04/1987	बुध	14/05/1989	शुक्र	09/08/1991	सूर्य	14/09/1993	मंगल	25/02/1995
बुध	25/07/1987	शुक्र	15/09/1989	सूर्य	28/10/1991	मंगल	07/11/1993	गुरु	30/04/1995
शुक्र	19/11/1987	सूर्य	30/11/1989	मंगल	24/01/1992	गुरु	04/01/1994	शनि	07/07/1995
सूर्य	30/01/1988	मंगल	21/02/1990	गुरु	29/04/1992	शनि	08/03/1994	केतु	18/09/1995
मंगल	17/04/1988	गुरु	22/05/1990	शनि	09/08/1992	केतु	14/05/1994	चंद्र	06/12/1995
गुरु	11/07/1988	शनि	27/08/1990	केतु	27/11/1992	चंद्र	25/07/1994	बुध	27/02/1996
शनि	10/10/1988	केतु	09/12/1990	चंद्र	24/03/1993	बुध	09/10/1994	शुक्र	25/05/1996
केतु	16/01/1989	चंद्र	30/03/1991	बुध	27/07/1993	शुक्र	28/12/1994	सूर्य	17/07/1996

केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र	
17/07/1996		23/03/1998		13/01/2000		30/03/2002		02/08/2004	
23/03/1998		13/01/2000		30/03/2002		02/08/2004		26/01/2007	
गुरु	24/09/1996	शनि	11/06/1998	चंद्र	04/05/2000	बुध	02/08/2002	शुक्र	21/12/2004
शनि	07/12/1996	केतु	05/09/1998	बुध	30/08/2000	शुक्र	13/12/2002	सूर्य	17/03/2005
केतु	25/02/1997	चंद्र	05/12/1998	शुक्र	02/01/2001	सूर्य	04/03/2003	मंगल	19/06/2005
चंद्र	20/05/1997	बुध	12/03/1999	सूर्य	19/03/2001	मंगल	01/06/2003	गुरु	28/09/2005
बुध	18/08/1997	शुक्र	22/06/1999	मंगल	11/06/2001	गुरु	05/09/2003	शनि	16/01/2006
शुक्र	22/11/1997	सूर्य	24/08/1999	गुरु	09/09/2001	शनि	17/12/2003	केतु	13/05/2006
सूर्य	19/01/1998	मंगल	31/10/1999	शनि	15/12/2001	केतु	06/04/2004	चंद्र	15/09/2006
मंगल	23/03/1998	गुरु	13/01/2000	केतु	30/03/2002	चंद्र	02/08/2004	बुध	26/01/2007

चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु	
26/01/2007		02/08/2008		30/03/2010		13/01/2012		19/12/2013	
02/08/2008		30/03/2010		13/01/2012		19/12/2013		13/01/2016	
सूर्य	19/03/2007	मंगल	04/10/2008	गुरु	11/06/2010	शनि	08/04/2012	केतु	27/03/2014
मंगल	16/05/2007	गुरु	10/12/2008	शनि	29/08/2010	केतु	08/07/2012	चंद्र	09/07/2014
गुरु	17/07/2007	शनि	21/02/2009	केतु	22/11/2010	चंद्र	13/10/2012	बुध	27/10/2014
शनि	22/09/2007	केतु	10/05/2009	चंद्र	20/02/2011	बुध	24/01/2013	शुक्र	22/02/2015
केतु	02/12/2007	चंद्र	02/08/2009	बुध	27/05/2011	शुक्र	14/05/2013	सूर्य	04/05/2015
चंद्र	17/02/2008	बुध	29/10/2009	शुक्र	06/09/2011	सूर्य	20/07/2013	मंगल	22/07/2015
बुध	08/05/2008	शुक्र	31/01/2010	सूर्य	07/11/2011	मंगल	01/10/2013	गुरु	14/10/2015
शुक्र	02/08/2008	सूर्य	30/03/2010	मंगल	13/01/2012	गुरु	19/12/2013	शनि	13/01/2016

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु	
13/01/2016		11/07/2018		01/03/2021		11/10/2022		14/07/2024	
11/07/2018		01/03/2021		11/10/2022		14/07/2024		10/06/2026	
बुध	26/05/2016	शुक्र	08/12/2018	सूर्य	26/04/2021	मंगल	16/12/2022	गुरु	30/09/2024
शुक्र	14/10/2016	सूर्य	09/03/2019	मंगल	26/06/2021	गुरु	26/02/2023	शनि	23/12/2024
सूर्य	08/01/2017	मंगल	17/06/2019	गुरु	31/08/2021	शनि	15/05/2023	केतु	23/03/2025
मंगल	12/04/2017	गुरु	03/10/2019	शनि	10/11/2021	केतु	06/08/2023	चंद्र	27/06/2025
गुरु	23/07/2017	शनि	27/01/2020	केतु	25/01/2022	चंद्र	02/11/2023	बुध	07/10/2025
शनि	10/11/2017	केतु	31/05/2020	चंद्र	16/04/2022	बुध	05/02/2024	शुक्र	23/01/2026
केतु	08/03/2018	चंद्र	11/10/2020	बुध	11/07/2022	शुक्र	14/05/2024	सूर्य	30/03/2026
चंद्र	11/07/2018	बुध	01/03/2021	शुक्र	11/10/2022	सूर्य	14/07/2024	मंगल	10/06/2026

बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
10/06/2026		28/06/2028		09/09/2030		13/01/2033		30/10/2035	
28/06/2028		09/09/2030		13/01/2033		30/10/2035		14/07/2037	
शनि	08/09/2026	केतु	10/10/2028	चंद्र	05/01/2031	शुक्र	20/06/2033	सूर्य	28/12/2035
केतु	14/12/2026	चंद्र	29/01/2029	बुध	11/05/2031	सूर्य	25/09/2033	मंगल	02/03/2036
चंद्र	28/03/2027	बुध	27/05/2029	शुक्र	21/09/2031	मंगल	08/01/2034	गुरु	10/05/2036
बुध	16/07/2027	शुक्र	28/09/2029	सूर्य	11/12/2031	गुरु	03/05/2034	शनि	25/07/2036
शुक्र	09/11/2027	सूर्य	13/12/2029	मंगल	09/03/2032	शनि	03/09/2034	केतु	13/10/2036
सूर्य	19/01/2028	मंगल	06/03/2030	गुरु	13/06/2032	केतु	13/01/2035	चंद्र	07/01/2037
मंगल	05/04/2028	गुरु	04/06/2030	शनि	24/09/2032	चंद्र	02/06/2035	बुध	09/04/2037
गुरु	28/06/2028	शनि	09/09/2030	केतु	13/01/2033	बुध	30/10/2035	शुक्र	14/07/2037

शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र	
14/07/2037		25/05/2039		31/05/2041		03/08/2043		30/11/2045	
25/05/2039		31/05/2041		03/08/2043		30/11/2045		25/05/2048	
मंगल	23/09/2037	गुरु	16/08/2039	शनि	04/09/2041	केतु	21/11/2043	चंद्र	04/04/2046
गुरु	08/12/2037	शनि	13/11/2039	केतु	16/12/2041	चंद्र	17/03/2044	बुध	15/08/2046
शनि	28/02/2038	केतु	16/02/2040	चंद्र	04/04/2042	बुध	20/07/2044	शुक्र	03/01/2047
केतु	27/05/2038	चंद्र	28/05/2040	बुध	29/07/2042	शुक्र	28/11/2044	सूर्य	30/03/2047
चंद्र	29/08/2038	बुध	13/09/2040	शुक्र	29/11/2042	सूर्य	17/02/2045	मंगल	01/07/2047
बुध	06/12/2038	शुक्र	05/01/2041	सूर्य	13/02/2043	मंगल	16/05/2045	गुरु	11/10/2047
शुक्र	22/03/2039	सूर्य	16/03/2041	मंगल	06/05/2043	गुरु	19/08/2045	शनि	28/01/2048
सूर्य	25/05/2039	मंगल	31/05/2041	गुरु	03/08/2043	शनि	30/11/2045	केतु	25/05/2048

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
25/05/2048		13/01/2051		29/01/2052		20/03/2053		13/06/2054	
13/01/2051		29/01/2052		20/03/2053		13/06/2054		11/10/2055	
बुध	13/10/2048	सूर्य	18/02/2051	मंगल	12/03/2052	गुरु	09/05/2053	शनि	11/08/2054
शुक्र	11/03/2049	मंगल	30/03/2051	गुरु	28/04/2052	शनि	03/07/2053	केतु	12/10/2054
सूर्य	11/06/2049	गुरु	11/05/2051	शनि	17/06/2052	केतु	30/08/2053	चंद्र	18/12/2054
मंगल	18/09/2049	शनि	26/06/2051	केतु	10/08/2052	चंद्र	31/10/2053	बुध	27/02/2055
गुरु	04/01/2050	केतु	15/08/2051	चंद्र	06/10/2052	बुध	05/01/2054	शुक्र	14/05/2055
शनि	01/05/2050	चंद्र	06/10/2051	बुध	06/12/2052	शुक्र	16/03/2054	सूर्य	29/06/2055
केतु	02/09/2050	बुध	01/12/2051	शुक्र	08/02/2053	सूर्य	28/04/2054	मंगल	18/08/2055
चंद्र	13/01/2051	शुक्र	29/01/2052	सूर्य	20/03/2053	मंगल	13/06/2054	गुरु	11/10/2055

सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल	
11/10/2055		14/03/2057		19/09/2058		30/04/2060		13/01/2062	
14/03/2057		19/09/2058		30/04/2060		13/01/2062		11/04/2063	
केतु	17/12/2055	चंद्र	29/05/2057	बुध	14/12/2058	शुक्र	04/08/2060	मंगल	01/03/2062
चंद्र	27/02/2056	बुध	18/08/2057	शुक्र	15/03/2059	सूर्य	02/10/2060	गुरु	21/04/2062
बुध	13/05/2056	शुक्र	12/11/2057	सूर्य	10/05/2059	मंगल	06/12/2060	शनि	14/06/2062
शुक्र	02/08/2056	सूर्य	04/01/2058	मंगल	10/07/2059	गुरु	14/02/2061	केतु	12/08/2062
सूर्य	20/09/2056	मंगल	02/03/2058	गुरु	14/09/2059	शनि	30/04/2061	चंद्र	14/10/2062
मंगल	13/11/2056	गुरु	03/05/2058	शनि	24/11/2059	केतु	20/07/2061	बुध	19/12/2062
गुरु	10/01/2057	शनि	09/07/2058	केतु	08/02/2060	चंद्र	14/10/2061	शुक्र	27/02/2063
शनि	14/03/2057	केतु	19/09/2058	चंद्र	30/04/2060	बुध	13/01/2062	सूर्य	11/04/2063

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध	
11/04/2063		15/08/2064		26/01/2066		15/08/2067		11/04/2069	
15/08/2064		26/01/2066		15/08/2067		11/04/2069		13/01/2071	
गुरु	05/06/2063	शनि	17/10/2064	केतु	09/04/2066	चंद्र	07/11/2067	बुध	14/07/2069
शनि	04/08/2063	केतु	25/12/2064	चंद्र	26/06/2066	बुध	03/02/2068	शुक्र	22/10/2069
केतु	06/10/2063	चंद्र	08/03/2065	बुध	17/09/2066	शुक्र	07/05/2068	सूर्य	22/12/2069
चंद्र	13/12/2063	बुध	24/05/2065	शुक्र	14/12/2066	सूर्य	03/07/2068	मंगल	26/02/2070
बुध	23/02/2064	शुक्र	14/08/2065	सूर्य	06/02/2067	मंगल	04/09/2068	गुरु	09/05/2070
शुक्र	09/05/2064	सूर्य	04/10/2065	मंगल	05/04/2067	गुरु	11/11/2068	शनि	26/07/2070
सूर्य	25/06/2064	मंगल	27/11/2065	गुरु	08/06/2067	शनि	23/01/2069	केतु	17/10/2070
मंगल	15/08/2064	गुरु	26/01/2066	शनि	15/08/2067	केतु	11/04/2069	चंद्र	13/01/2071

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 2 मास 29 दिन

केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष	
26/12/1961		27/03/1965		27/07/1978		27/07/1982		27/03/1989	
27/03/1965		27/07/1978		27/07/1982		27/03/1989		25/11/1993	
	00/00/0000	शुक्र	16/06/1967	सूर्य	08/10/1978	चंद्र	15/02/1983	मंगल	04/07/1989
	00/00/0000	सूर्य	15/02/1968	चंद्र	07/02/1979	मंगल	07/07/1983	राहु	17/03/1990
	26/12/1961	चंद्र	27/03/1969	मंगल	03/05/1979	राहु	06/07/1984	गुरु	30/10/1990
चंद्र	29/03/1962	मंगल	05/01/1970	राहु	08/12/1979	गुरु	27/05/1985	शनि	27/07/1991
मंगल	06/07/1962	राहु	05/01/1972	गुरु	20/06/1980	शनि	16/06/1986	बुध	24/03/1992
राहु	19/03/1963	गुरु	16/10/1973	शनि	06/02/1981	बुध	27/05/1987	केतु	02/07/1992
गुरु	01/11/1963	शनि	26/11/1975	बुध	01/09/1981	केतु	16/10/1987	शुक्र	12/04/1993
शनि	28/07/1964	बुध	16/10/1977	केतु	25/11/1981	शुक्र	25/11/1988	सूर्य	06/07/1993
बुध	27/03/1965	केतु	27/07/1978	शुक्र	27/07/1982	सूर्य	27/03/1989	चंद्र	25/11/1993

राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष	
25/11/1993		25/11/2005		26/07/2016		27/03/2029		26/07/2040	
25/11/2005		26/07/2016		27/03/2029		26/07/2040		00/00/0000	
राहु	14/09/1995	गुरु	29/04/2007	शनि	29/07/2018	बुध	03/11/2030	केतु	03/11/2040
गुरु	20/04/1997	शनि	05/01/2009	बुध	14/05/2020	केतु	03/07/2031	शुक्र	14/08/2041
शनि	15/03/1999	बुध	11/07/2010	केतु	08/02/2021	शुक्र	23/05/2033	सूर्य	07/11/2041
बुध	25/11/2000	केतु	23/02/2011	शुक्र	21/03/2023	सूर्य	16/12/2033	चंद्र	26/12/2041
केतु	08/08/2001	शुक्र	03/12/2012	सूर्य	08/11/2023	चंद्र	26/11/2034		00/00/0000
शुक्र	08/08/2003	सूर्य	16/06/2013	चंद्र	27/11/2024	मंगल	25/07/2035		00/00/0000
सूर्य	14/03/2004	चंद्र	07/05/2014	मंगल	24/08/2025	राहु	06/04/2037		00/00/0000
चंद्र	15/03/2005	मंगल	20/12/2014	राहु	19/07/2027	गुरु	10/10/2038		00/00/0000
मंगल	25/11/2005	राहु	26/07/2016	गुरु	27/03/2029	शनि	26/07/2040		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
26/12/1961		29/03/1962		06/07/1962		19/03/1963		01/11/1963	
29/03/1962		06/07/1962		19/03/1963		01/11/1963		28/07/1964	
	00/00/0000	मंगल	04/04/1962	राहु	14/08/1962	गुरु	18/04/1963	शनि	14/12/1963
	00/00/0000	राहु	19/04/1962	गुरु	17/09/1962	शनि	24/05/1963	बुध	21/01/1964
	26/12/1961	गुरु	02/05/1962	शनि	27/10/1962	बुध	26/06/1963	केतु	06/02/1964
गुरु	06/01/1962	शनि	18/05/1962	बुध	03/12/1962	केतु	09/07/1963	शुक्र	22/03/1964
शनि	29/01/1962	बुध	01/06/1962	केतु	18/12/1962	शुक्र	16/08/1963	सूर्य	05/04/1964
बुध	18/02/1962	केतु	07/06/1962	शुक्र	29/01/1963	सूर्य	27/08/1963	चंद्र	27/04/1964
केतु	26/02/1962	शुक्र	23/06/1962	सूर्य	11/02/1963	चंद्र	15/09/1963	मंगल	13/05/1964
शुक्र	22/03/1962	सूर्य	28/06/1962	चंद्र	04/03/1963	मंगल	28/09/1963	राहु	22/06/1964
सूर्य	29/03/1962	चंद्र	06/07/1962	मंगल	19/03/1963	राहु	01/11/1963	गुरु	28/07/1964

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
28/07/1964		27/03/1965		16/06/1967		15/02/1968		27/03/1969	
27/03/1965		16/06/1967		15/02/1968		27/03/1969		05/01/1970	
बुध	01/09/1964	शुक्र	09/08/1965	सूर्य	29/06/1967	चंद्र	20/03/1968	मंगल	12/04/1969
केतु	15/09/1964	सूर्य	19/09/1965	चंद्र	19/07/1967	मंगल	12/04/1968	राहु	25/05/1969
शुक्र	25/10/1964	चंद्र	25/11/1965	मंगल	02/08/1967	राहु	12/06/1968	गुरु	02/07/1969
सूर्य	06/11/1964	मंगल	12/01/1966	राहु	08/09/1967	गुरु	05/08/1968	शनि	16/08/1969
चंद्र	26/11/1964	राहु	13/05/1966	गुरु	10/10/1967	शनि	09/10/1968	बुध	25/09/1969
मंगल	10/12/1964	गुरु	30/08/1966	शनि	18/11/1967	बुध	05/12/1968	केतु	12/10/1969
राहु	15/01/1965	शनि	05/01/1967	बुध	22/12/1967	केतु	29/12/1968	शुक्र	28/11/1969
गुरु	17/02/1965	बुध	30/04/1967	केतु	05/01/1968	शुक्र	06/03/1969	सूर्य	12/12/1969
शनि	27/03/1965	केतु	16/06/1967	शुक्र	15/02/1968	सूर्य	27/03/1969	चंद्र	05/01/1970

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
05/01/1970		05/01/1972		16/10/1973		26/11/1975		16/10/1977	
05/01/1972		16/10/1973		26/11/1975		16/10/1977		27/07/1978	
राहु	24/04/1970	गुरु	01/04/1972	शनि	15/02/1974	बुध	03/03/1976	केतु	01/11/1977
गुरु	31/07/1970	शनि	13/07/1972	बुध	04/06/1974	केतु	12/04/1976	शुक्र	19/12/1977
शनि	23/11/1970	बुध	13/10/1972	केतु	19/07/1974	शुक्र	05/08/1976	सूर्य	02/01/1978
बुध	07/03/1971	केतु	20/11/1972	शुक्र	25/11/1974	सूर्य	08/09/1976	चंद्र	25/01/1978
केतु	19/04/1971	शुक्र	08/03/1973	सूर्य	02/01/1975	चंद्र	05/11/1976	मंगल	11/02/1978
शुक्र	18/08/1971	सूर्य	09/04/1973	चंद्र	07/03/1975	मंगल	15/12/1976	राहु	26/03/1978
सूर्य	24/09/1971	चंद्र	02/06/1973	मंगल	21/04/1975	राहु	28/03/1977	गुरु	03/05/1978
चंद्र	24/11/1971	मंगल	10/07/1973	राहु	15/08/1975	गुरु	28/06/1977	शनि	17/06/1978
मंगल	05/01/1972	राहु	16/10/1973	गुरु	26/11/1975	शनि	16/10/1977	बुध	27/07/1978

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
27/07/1978		08/10/1978		07/02/1979		03/05/1979		08/12/1979	
08/10/1978		07/02/1979		03/05/1979		08/12/1979		20/06/1980	
सूर्य	30/07/1978	चंद्र	18/10/1978	मंगल	12/02/1979	राहु	05/06/1979	गुरु	03/01/1980
चंद्र	06/08/1978	मंगल	25/10/1978	राहु	24/02/1979	गुरु	04/07/1979	शनि	03/02/1980
मंगल	10/08/1978	राहु	12/11/1978	गुरु	08/03/1979	शनि	08/08/1979	बुध	01/03/1980
राहु	21/08/1978	गुरु	29/11/1978	शनि	21/03/1979	बुध	08/09/1979	केतु	13/03/1980
गुरु	30/08/1978	शनि	18/12/1978	बुध	02/04/1979	केतु	20/09/1979	शुक्र	14/04/1980
शनि	11/09/1978	बुध	04/01/1979	केतु	07/04/1979	शुक्र	27/10/1979	सूर्य	24/04/1980
बुध	21/09/1978	केतु	11/01/1979	शुक्र	21/04/1979	सूर्य	07/11/1979	चंद्र	10/05/1980
केतु	26/09/1978	शुक्र	31/01/1979	सूर्य	26/04/1979	चंद्र	25/11/1979	मंगल	22/05/1980
शुक्र	08/10/1978	सूर्य	07/02/1979	चंद्र	03/05/1979	मंगल	08/12/1979	राहु	20/06/1980

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
20/06/1980		06/02/1981		01/09/1981		25/11/1981		27/07/1982	
06/02/1981		01/09/1981		25/11/1981		27/07/1982		15/02/1983	
शनि	26/07/1980	बुध	07/03/1981	केतु	06/09/1981	शुक्र	05/01/1982	चंद्र	13/08/1982
बुध	28/08/1980	केतु	19/03/1981	शुक्र	20/09/1981	सूर्य	17/01/1982	मंगल	25/08/1982
केतु	11/09/1980	शुक्र	23/04/1981	सूर्य	24/09/1981	चंद्र	06/02/1982	राहु	24/09/1982
शुक्र	19/10/1980	सूर्य	03/05/1981	चंद्र	02/10/1981	मंगल	21/02/1982	गुरु	21/10/1982
सूर्य	31/10/1980	चंद्र	21/05/1981	मंगल	07/10/1981	राहु	29/03/1982	शनि	22/11/1982
चंद्र	19/11/1980	मंगल	02/06/1981	राहु	19/10/1981	गुरु	01/05/1982	बुध	21/12/1982
मंगल	03/12/1980	राहु	03/07/1981	गुरु	31/10/1981	शनि	08/06/1982	केतु	02/01/1983
राहु	06/01/1981	गुरु	30/07/1981	शनि	13/11/1981	बुध	13/07/1982	शुक्र	05/02/1983
गुरु	06/02/1981	शनि	01/09/1981	बुध	25/11/1981	केतु	27/07/1982	सूर्य	15/02/1983

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
15/02/1983		07/07/1983		06/07/1984		27/05/1985		16/06/1986	
07/07/1983		06/07/1984		27/05/1985		16/06/1986		27/05/1987	
मंगल	23/02/1983	राहु	31/08/1983	गुरु	18/08/1984	शनि	27/07/1985	बुध	04/08/1986
राहु	16/03/1983	गुरु	18/10/1983	शनि	09/10/1984	बुध	19/09/1985	केतु	24/08/1986
गुरु	04/04/1983	शनि	15/12/1983	बुध	24/11/1984	केतु	12/10/1985	शुक्र	21/10/1986
शनि	27/04/1983	बुध	05/02/1984	केतु	13/12/1984	शुक्र	15/12/1985	सूर्य	07/11/1986
बुध	17/05/1983	केतु	26/02/1984	शुक्र	05/02/1985	सूर्य	03/01/1986	चंद्र	06/12/1986
केतु	25/05/1983	शुक्र	27/04/1984	सूर्य	21/02/1985	चंद्र	04/02/1986	मंगल	26/12/1986
शुक्र	18/06/1983	सूर्य	15/05/1984	चंद्र	20/03/1985	मंगल	27/02/1986	राहु	16/02/1987
सूर्य	25/06/1983	चंद्र	15/06/1984	मंगल	08/04/1985	राहु	26/04/1986	गुरु	03/04/1987
चंद्र	07/07/1983	मंगल	06/07/1984	राहु	27/05/1985	गुरु	16/06/1986	शनि	27/05/1987

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
27/05/1987		16/10/1987		25/11/1988		27/03/1989		04/07/1989	
16/10/1987		25/11/1988		27/03/1989		04/07/1989		17/03/1990	
केतु	04/06/1987	शुक्र	23/12/1987	सूर्य	01/12/1988	मंगल	02/04/1989	राहु	12/08/1989
शुक्र	28/06/1987	सूर्य	12/01/1988	चंद्र	11/12/1988	राहु	16/04/1989	गुरु	15/09/1989
सूर्य	05/07/1987	चंद्र	15/02/1988	मंगल	18/12/1988	गुरु	30/04/1989	शनि	25/10/1989
चंद्र	17/07/1987	मंगल	10/03/1988	राहु	06/01/1989	शनि	15/05/1989	बुध	30/11/1989
मंगल	25/07/1987	राहु	09/05/1988	गुरु	22/01/1989	बुध	30/05/1989	केतु	15/12/1989
राहु	16/08/1987	गुरु	03/07/1988	शनि	10/02/1989	केतु	04/06/1989	शुक्र	27/01/1990
गुरु	04/09/1987	शनि	05/09/1988	बुध	27/02/1989	शुक्र	21/06/1989	सूर्य	09/02/1990
शनि	26/09/1987	बुध	01/11/1988	केतु	06/03/1989	सूर्य	26/06/1989	चंद्र	02/03/1990
बुध	16/10/1987	केतु	25/11/1988	शुक्र	27/03/1989	चंद्र	04/07/1989	मंगल	17/03/1990

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
17/03/1990		30/10/1990		27/07/1991		24/03/1992		02/07/1992	
30/10/1990		27/07/1991		24/03/1992		02/07/1992		12/04/1993	
गुरु	16/04/1990	शनि	12/12/1990	बुध	30/08/1991	केतु	30/03/1992	शुक्र	18/08/1992
शनि	22/05/1990	बुध	19/01/1991	केतु	13/09/1991	शुक्र	16/04/1992	सूर्य	01/09/1992
बुध	23/06/1990	केतु	04/02/1991	शुक्र	24/10/1991	सूर्य	21/04/1992	चंद्र	25/09/1992
केतु	07/07/1990	शुक्र	21/03/1991	सूर्य	05/11/1991	चंद्र	29/04/1992	मंगल	12/10/1992
शुक्र	14/08/1990	सूर्य	03/04/1991	चंद्र	25/11/1991	मंगल	05/05/1992	राहु	23/11/1992
सूर्य	25/08/1990	चंद्र	26/04/1991	मंगल	09/12/1991	राहु	20/05/1992	गुरु	31/12/1992
चंद्र	13/09/1990	मंगल	12/05/1991	राहु	14/01/1992	गुरु	02/06/1992	शनि	14/02/1993
मंगल	26/09/1990	राहु	21/06/1991	गुरु	15/02/1992	शनि	18/06/1992	बुध	26/03/1993
राहु	30/10/1990	गुरु	27/07/1991	शनि	24/03/1992	बुध	02/07/1992	केतु	12/04/1993

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
12/04/1993		06/07/1993		25/11/1993		14/09/1995		20/04/1997	
06/07/1993		25/11/1993		14/09/1995		20/04/1997		15/03/1999	
सूर्य	16/04/1993	चंद्र	18/07/1993	राहु	04/03/1994	गुरु	01/12/1995	शनि	08/08/1997
चंद्र	23/04/1993	मंगल	26/07/1993	गुरु	31/05/1994	शनि	02/03/1996	बुध	14/11/1997
मंगल	28/04/1993	राहु	17/08/1993	शनि	12/09/1994	बुध	24/05/1996	केतु	25/12/1997
राहु	11/05/1993	गुरु	05/09/1993	बुध	14/12/1994	केतु	27/06/1996	शुक्र	19/04/1998
गुरु	22/05/1993	शनि	27/09/1993	केतु	21/01/1995	शुक्र	02/10/1996	सूर्य	24/05/1998
शनि	05/06/1993	बुध	17/10/1993	शुक्र	11/05/1995	सूर्य	01/11/1996	चंद्र	21/07/1998
बुध	17/06/1993	केतु	26/10/1993	सूर्य	13/06/1995	चंद्र	19/12/1996	मंगल	30/08/1998
केतु	22/06/1993	शुक्र	18/11/1993	चंद्र	06/08/1995	मंगल	22/01/1997	राहु	13/12/1998
शुक्र	06/07/1993	सूर्य	25/11/1993	मंगल	14/09/1995	राहु	20/04/1997	गुरु	15/03/1999

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
15/03/1999		25/11/2000		08/08/2001		08/08/2003		14/03/2004	
25/11/2000		08/08/2001		08/08/2003		14/03/2004		15/03/2005	
बुध	11/06/1999	केतु	10/12/2000	शुक्र	07/12/2001	सूर्य	19/08/2003	चंद्र	14/04/2004
केतु	17/07/1999	शुक्र	22/01/2001	सूर्य	13/01/2002	चंद्र	06/09/2003	मंगल	05/05/2004
शुक्र	29/10/1999	सूर्य	03/02/2001	चंद्र	15/03/2002	मंगल	19/09/2003	राहु	29/06/2004
सूर्य	29/11/1999	चंद्र	25/02/2001	मंगल	26/04/2002	राहु	22/10/2003	गुरु	17/08/2004
चंद्र	20/01/2000	मंगल	12/03/2001	राहु	14/08/2002	गुरु	20/11/2003	शनि	13/10/2004
मंगल	25/02/2000	राहु	19/04/2001	गुरु	19/11/2002	शनि	25/12/2003	बुध	04/12/2004
राहु	28/05/2000	गुरु	23/05/2001	शनि	15/03/2003	बुध	25/01/2004	केतु	25/12/2004
गुरु	19/08/2000	शनि	02/07/2001	बुध	27/06/2003	केतु	07/02/2004	शुक्र	24/02/2005
शनि	25/11/2000	बुध	08/08/2001	केतु	08/08/2003	शुक्र	14/03/2004	सूर्य	15/03/2005

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
15/03/2005		25/11/2005		29/04/2007		05/01/2009		11/07/2010	
25/11/2005		29/04/2007		05/01/2009		11/07/2010		23/02/2011	
मंगल	30/03/2005	गुरु	03/02/2006	शनि	04/08/2007	बुध	24/03/2009	केतु	24/07/2010
राहु	07/05/2005	शनि	26/04/2006	बुध	31/10/2007	केतु	25/04/2009	शुक्र	31/08/2010
गुरु	10/06/2005	बुध	08/07/2006	केतु	06/12/2007	शुक्र	26/07/2009	सूर्य	11/09/2010
शनि	20/07/2005	केतु	08/08/2006	शुक्र	18/03/2008	सूर्य	23/08/2009	चंद्र	30/09/2010
बुध	26/08/2005	शुक्र	02/11/2006	सूर्य	17/04/2008	चंद्र	08/10/2009	मंगल	13/10/2010
केतु	10/09/2005	सूर्य	28/11/2006	चंद्र	08/06/2008	मंगल	09/11/2009	राहु	16/11/2010
शुक्र	22/10/2005	चंद्र	11/01/2007	मंगल	14/07/2008	राहु	31/01/2010	गुरु	17/12/2010
सूर्य	04/11/2005	मंगल	10/02/2007	राहु	14/10/2008	गुरु	14/04/2010	शनि	22/01/2011
चंद्र	25/11/2005	राहु	29/04/2007	गुरु	05/01/2009	शनि	11/07/2010	बुध	23/02/2011

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
23/02/2011		03/12/2012		16/06/2013		07/05/2014		20/12/2014	
03/12/2012		16/06/2013		07/05/2014		20/12/2014		26/07/2016	
शुक्र	11/06/2011	सूर्य	13/12/2012	चंद्र	13/07/2013	मंगल	20/05/2014	राहु	18/03/2015
सूर्य	14/07/2011	चंद्र	29/12/2012	मंगल	01/08/2013	राहु	23/06/2014	गुरु	03/06/2015
चंद्र	06/09/2011	मंगल	09/01/2013	राहु	19/09/2013	गुरु	23/07/2014	शनि	04/09/2015
मंगल	13/10/2011	राहु	08/02/2013	गुरु	01/11/2013	शनि	28/08/2014	बुध	26/11/2015
राहु	19/01/2012	गुरु	06/03/2013	शनि	22/12/2013	बुध	29/09/2014	केतु	30/12/2015
गुरु	14/04/2012	शनि	06/04/2013	बुध	06/02/2014	केतु	13/10/2014	शुक्र	05/04/2016
शनि	26/07/2012	बुध	03/05/2013	केतु	25/02/2014	शुक्र	20/11/2014	सूर्य	04/05/2016
बुध	26/10/2012	केतु	14/05/2013	शुक्र	20/04/2014	सूर्य	01/12/2014	चंद्र	22/06/2016
केतु	03/12/2012	शुक्र	16/06/2013	सूर्य	07/05/2014	चंद्र	20/12/2014	मंगल	26/07/2016

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
26/07/2016		29/07/2018		14/05/2020		08/02/2021		21/03/2023	
29/07/2018		14/05/2020		08/02/2021		21/03/2023		08/11/2023	
शनि	19/11/2016	बुध	30/10/2018	केतु	30/05/2020	शुक्र	17/06/2021	सूर्य	02/04/2023
बुध	03/03/2017	केतु	07/12/2018	शुक्र	14/07/2020	सूर्य	25/07/2021	चंद्र	21/04/2023
केतु	15/04/2017	शुक्र	26/03/2019	सूर्य	27/07/2020	चंद्र	27/09/2021	मंगल	05/05/2023
शुक्र	15/08/2017	सूर्य	28/04/2019	चंद्र	19/08/2020	मंगल	11/11/2021	राहु	08/06/2023
सूर्य	20/09/2017	चंद्र	22/06/2019	मंगल	04/09/2020	राहु	07/03/2022	गुरु	09/07/2023
चंद्र	21/11/2017	मंगल	30/07/2019	राहु	14/10/2020	गुरु	18/06/2022	शनि	15/08/2023
मंगल	02/01/2018	राहु	05/11/2019	गुरु	19/11/2020	शनि	18/10/2022	बुध	16/09/2023
राहु	22/04/2018	गुरु	31/01/2020	शनि	01/01/2021	बुध	04/02/2023	केतु	30/09/2023
गुरु	29/07/2018	शनि	14/05/2020	बुध	08/02/2021	केतु	21/03/2023	शुक्र	08/11/2023

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
08/11/2023		27/11/2024		24/08/2025		19/07/2027		27/03/2029	
27/11/2024		24/08/2025		19/07/2027		27/03/2029		03/11/2030	
चंद्र	10/12/2023	मंगल	13/12/2024	राहु	06/12/2025	गुरु	09/10/2027	बुध	18/06/2029
मंगल	01/01/2024	राहु	22/01/2025	गुरु	09/03/2026	शनि	15/01/2028	केतु	22/07/2029
राहु	28/02/2024	गुरु	27/02/2025	शनि	26/06/2026	बुध	11/04/2028	शुक्र	28/10/2029
गुरु	19/04/2024	शनि	11/04/2025	बुध	03/10/2026	केतु	17/05/2028	सूर्य	26/11/2029
शनि	19/06/2024	बुध	19/05/2025	केतु	12/11/2026	शुक्र	28/08/2028	चंद्र	14/01/2030
बुध	13/08/2024	केतु	04/06/2025	शुक्र	08/03/2027	सूर्य	28/09/2028	मंगल	17/02/2030
केतु	05/09/2024	शुक्र	19/07/2025	सूर्य	12/04/2027	चंद्र	18/11/2028	राहु	16/05/2030
शुक्र	08/11/2024	सूर्य	01/08/2025	चंद्र	08/06/2027	मंगल	24/12/2028	गुरु	02/08/2030
सूर्य	27/11/2024	चंद्र	24/08/2025	मंगल	19/07/2027	राहु	27/03/2029	शनि	03/11/2030

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
03/11/2030		03/07/2031		23/05/2033		16/12/2033		26/11/2034	
03/07/2031		23/05/2033		16/12/2033		26/11/2034		25/07/2035	
केतु	17/11/2030	शुक्र	26/10/2031	सूर्य	02/06/2033	चंद्र	13/01/2034	मंगल	10/12/2034
शुक्र	28/12/2030	सूर्य	29/11/2031	चंद्र	19/06/2033	मंगल	02/02/2034	राहु	15/01/2035
सूर्य	09/01/2031	चंद्र	26/01/2032	मंगल	01/07/2033	राहु	26/03/2034	गुरु	16/02/2035
चंद्र	29/01/2031	मंगल	06/03/2032	राहु	01/08/2033	गुरु	11/05/2034	शनि	26/03/2035
मंगल	12/02/2031	राहु	17/06/2032	गुरु	29/08/2033	शनि	05/07/2034	बुध	29/04/2035
राहु	20/03/2031	गुरु	17/09/2032	शनि	01/10/2033	बुध	23/08/2034	केतु	14/05/2035
गुरु	21/04/2031	शनि	05/01/2033	बुध	30/10/2033	केतु	12/09/2034	शुक्र	23/06/2035
शनि	29/05/2031	बुध	12/04/2033	केतु	11/11/2033	शुक्र	08/11/2034	सूर्य	05/07/2035
बुध	03/07/2031	केतु	23/05/2033	शुक्र	16/12/2033	सूर्य	26/11/2034	चंद्र	25/07/2035

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 10 वर्ष 1 मास 9 दिन

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
26/12/1961		05/02/1972		05/02/1980		04/02/1997		05/02/2007	
05/02/1972		05/02/1980		04/02/1997		05/02/2007		05/02/2026	
	00/00/0000	मंगल	09/09/1972	बुध	10/10/1982	शनि	09/01/1998	गुरु	10/06/2010
	26/12/1961	बुध	13/12/1973	शनि	06/05/1984	गुरु	13/10/1999	राहु	20/07/2012
बुध	27/08/1962	शनि	09/09/1974	गुरु	04/05/1987	राहु	22/11/2000	शुक्र	30/03/2016
शनि	16/01/1964	गुरु	05/02/1976	राहु	24/03/1989	शुक्र	02/11/2002	सूर्य	20/04/2017
गुरु	06/09/1966	राहु	26/12/1976	शुक्र	13/07/1992	सूर्य	24/05/2003	चंद्र	10/12/2019
राहु	06/05/1968	शुक्र	17/07/1978	सूर्य	23/06/1993	चंद्र	12/10/2004	मंगल	07/05/2021
शुक्र	07/04/1971	सूर्य	26/12/1978	चंद्र	02/11/1995	मंगल	10/07/2005	बुध	03/05/2024
सूर्य	05/02/1972	चंद्र	05/02/1980	मंगल	04/02/1997	बुध	05/02/2007	शनि	05/02/2026

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
05/02/2026		05/02/2038		05/02/2059		04/02/2065	
05/02/2038		05/02/2059		04/02/2065		00/00/0000	
राहु	07/06/2027	शुक्र	07/03/2042	सूर्य	07/06/2059	चंद्र	07/03/2067
शुक्र	06/10/2029	सूर्य	07/05/2043	चंद्र	06/04/2060	मंगल	16/04/2068
सूर्य	06/06/2030	चंद्र	06/04/2046	मंगल	15/09/2060	बुध	26/12/2069
चंद्र	05/02/2032	मंगल	27/10/2047	बुध	26/08/2061		00/00/0000
मंगल	26/12/2032	बुध	15/02/2051	शनि	17/03/2062		00/00/0000
बुध	16/11/2034	शनि	25/01/2053	गुरु	07/04/2063		00/00/0000
शनि	27/12/2035	गुरु	06/10/2056	राहु	06/12/2063		00/00/0000
गुरु	05/02/2038	राहु	05/02/2059	शुक्र	04/02/2065		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
26/12/1961		27/08/1962		16/01/1964		06/09/1966		06/05/1968	
27/08/1962		16/01/1964		06/09/1966		06/05/1968		07/04/1971	
	00/00/0000	शनि	13/10/1962	गुरु	03/07/1964	राहु	12/11/1966	शुक्र	30/11/1968
	00/00/0000	गुरु	10/01/1963	राहु	18/10/1964	शुक्र	11/03/1967	सूर्य	28/01/1969
	00/00/0000	राहु	07/03/1963	शुक्र	24/04/1965	सूर्य	14/04/1967	चंद्र	25/06/1969
	26/12/1961	शुक्र	14/06/1963	सूर्य	16/06/1965	चंद्र	07/07/1967	मंगल	12/09/1969
शुक्र	07/01/1962	सूर्य	12/07/1963	चंद्र	28/10/1965	मंगल	21/08/1967	बुध	26/02/1970
सूर्य	24/02/1962	चंद्र	20/09/1963	मंगल	08/01/1966	बुध	25/11/1967	शनि	05/06/1970
चंद्र	24/06/1962	मंगल	28/10/1963	बुध	08/06/1966	शनि	20/01/1968	गुरु	09/12/1970
मंगल	27/08/1962	बुध	16/01/1964	शनि	06/09/1966	गुरु	06/05/1968	राहु	07/04/1971

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
07/04/1971		05/02/1972		09/09/1972		13/12/1973		09/09/1974	
05/02/1972		09/09/1972		13/12/1973		09/09/1974		05/02/1976	
सूर्य	24/04/1971	मंगल	21/02/1972	बुध	20/11/1972	शनि	07/01/1974	गुरु	09/12/1974
चंद्र	05/06/1971	बुध	26/03/1972	शनि	02/01/1973	गुरु	23/02/1974	राहु	04/02/1975
मंगल	27/06/1971	शनि	15/04/1972	गुरु	23/03/1973	राहु	25/03/1974	शुक्र	15/05/1975
बुध	14/08/1971	गुरु	23/05/1972	राहु	14/05/1973	शुक्र	17/05/1974	सूर्य	12/06/1975
शनि	12/09/1971	राहु	16/06/1972	शुक्र	11/08/1973	सूर्य	01/06/1974	चंद्र	23/08/1975
गुरु	04/11/1971	शुक्र	28/07/1972	सूर्य	06/09/1973	चंद्र	08/07/1974	मंगल	30/09/1975
राहु	08/12/1971	सूर्य	10/08/1972	चंद्र	08/11/1973	मंगल	28/07/1974	बुध	20/12/1975
शुक्र	05/02/1972	चंद्र	09/09/1972	मंगल	13/12/1973	बुध	09/09/1974	शनि	05/02/1976

मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध	
05/02/1976		26/12/1976		17/07/1978		26/12/1978		05/02/1980	
26/12/1976		17/07/1978		26/12/1978		05/02/1980		10/10/1982	
राहु	12/03/1976	शुक्र	15/04/1977	सूर्य	26/07/1978	चंद्र	21/02/1979	बुध	08/07/1980
शुक्र	14/05/1976	सूर्य	17/05/1977	चंद्र	18/08/1978	मंगल	23/03/1979	शनि	06/10/1980
सूर्य	01/06/1976	चंद्र	04/08/1977	मंगल	30/08/1978	बुध	26/05/1979	गुरु	27/03/1981
चंद्र	16/07/1976	मंगल	15/09/1977	बुध	24/09/1978	शनि	02/07/1979	राहु	14/07/1981
मंगल	10/08/1976	बुध	13/12/1977	शनि	09/10/1978	गुरु	12/09/1979	शुक्र	20/01/1982
बुध	30/09/1976	शनि	04/02/1978	गुरु	07/11/1978	राहु	27/10/1979	सूर्य	15/03/1982
शनि	30/10/1976	गुरु	15/05/1978	राहु	25/11/1978	शुक्र	14/01/1980	चंद्र	29/07/1982
गुरु	26/12/1976	राहु	17/07/1978	शुक्र	26/12/1978	सूर्य	05/02/1980	मंगल	10/10/1982

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
10/10/1982		06/05/1984		04/05/1987		24/03/1989		13/07/1992	
06/05/1984		04/05/1987		24/03/1989		13/07/1992		23/06/1993	
शनि	02/12/1982	गुरु	15/11/1984	राहु	19/07/1987	शुक्र	13/11/1989	सूर्य	01/08/1992
गुरु	13/03/1983	राहु	16/03/1985	शुक्र	01/12/1987	सूर्य	20/01/1990	चंद्र	18/09/1992
राहु	16/05/1983	शुक्र	14/10/1985	सूर्य	08/01/1988	चंद्र	06/07/1990	मंगल	14/10/1992
शुक्र	05/09/1983	सूर्य	14/12/1985	चंद्र	13/04/1988	मंगल	04/10/1990	बुध	07/12/1992
सूर्य	06/10/1983	चंद्र	15/05/1986	मंगल	03/06/1988	बुध	12/04/1991	शनि	08/01/1993
चंद्र	25/12/1983	मंगल	04/08/1986	बुध	19/09/1988	शनि	02/08/1991	गुरु	10/03/1993
मंगल	06/02/1984	बुध	23/01/1987	शनि	22/11/1988	गुरु	01/03/1992	राहु	17/04/1993
बुध	06/05/1984	शनि	04/05/1987	गुरु	24/03/1989	राहु	13/07/1992	शुक्र	23/06/1993

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु	
23/06/1993		02/11/1995		04/02/1997		09/01/1998		13/10/1999	
02/11/1995		04/02/1997		09/01/1998		13/10/1999		22/11/2000	
चंद्र	21/10/1993	मंगल	06/12/1995	शनि	08/03/1997	गुरु	02/05/1998	राहु	27/11/1999
मंगल	24/12/1993	बुध	17/02/1996	गुरु	06/05/1997	राहु	12/07/1998	शुक्र	14/02/2000
बुध	08/05/1994	शनि	30/03/1996	राहु	13/06/1997	शुक्र	14/11/1998	सूर्य	08/03/2000
शनि	27/07/1994	गुरु	19/06/1996	शुक्र	18/08/1997	सूर्य	20/12/1998	चंद्र	03/05/2000
गुरु	26/12/1994	राहु	10/08/1996	सूर्य	05/09/1997	चंद्र	19/03/1999	मंगल	02/06/2000
राहु	01/04/1995	शुक्र	07/11/1996	चंद्र	22/10/1997	मंगल	05/05/1999	बुध	05/08/2000
शुक्र	16/09/1995	सूर्य	02/12/1996	मंगल	16/11/1997	बुध	15/08/1999	शनि	12/09/2000
सूर्य	02/11/1995	चंद्र	04/02/1997	बुध	09/01/1998	शनि	13/10/1999	गुरु	22/11/2000

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
22/11/2000		02/11/2002		24/05/2003		12/10/2004		10/07/2005	
02/11/2002		24/05/2003		12/10/2004		10/07/2005		05/02/2007	
शुक्र	09/04/2001	सूर्य	13/11/2002	चंद्र	03/08/2003	मंगल	01/11/2004	बुध	08/10/2005
सूर्य	19/05/2001	चंद्र	12/12/2002	मंगल	09/09/2003	बुध	14/12/2004	शनि	01/12/2005
चंद्र	25/08/2001	मंगल	27/12/2002	बुध	28/11/2003	शनि	08/01/2005	गुरु	12/03/2006
मंगल	17/10/2001	बुध	28/01/2003	शनि	14/01/2004	गुरु	25/02/2005	राहु	15/05/2006
बुध	06/02/2002	शनि	15/02/2003	गुरु	12/04/2004	राहु	27/03/2005	शुक्र	03/09/2006
शनि	12/04/2002	गुरु	23/03/2003	राहु	08/06/2004	शुक्र	18/05/2005	सूर्य	05/10/2006
गुरु	15/08/2002	राहु	15/04/2003	शुक्र	14/09/2004	सूर्य	02/06/2005	चंद्र	24/12/2006
राहु	02/11/2002	शुक्र	24/05/2003	सूर्य	12/10/2004	चंद्र	10/07/2005	मंगल	05/02/2007

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
05/02/2007		10/06/2010		20/07/2012		30/03/2016		20/04/2017	
10/06/2010		20/07/2012		30/03/2016		20/04/2017		10/12/2019	
गुरु	08/09/2007	राहु	03/09/2010	शुक्र	08/04/2013	सूर्य	21/04/2016	चंद्र	01/09/2017
राहु	21/01/2008	शुक्र	31/01/2011	सूर्य	22/06/2013	चंद्र	13/06/2016	मंगल	11/11/2017
शुक्र	15/09/2008	सूर्य	15/03/2011	चंद्र	27/12/2013	मंगल	12/07/2016	बुध	12/04/2018
सूर्य	22/11/2008	चंद्र	30/06/2011	मंगल	06/04/2014	बुध	10/09/2016	शनि	10/07/2018
चंद्र	10/05/2009	मंगल	26/08/2011	बुध	04/11/2014	शनि	16/10/2016	गुरु	27/12/2018
मंगल	09/08/2009	बुध	26/12/2011	शनि	09/03/2015	गुरु	23/12/2016	राहु	13/04/2019
बुध	17/02/2010	शनि	06/03/2012	गुरु	01/11/2015	राहु	04/02/2017	शुक्र	17/10/2019
शनि	10/06/2010	गुरु	20/07/2012	राहु	30/03/2016	शुक्र	20/04/2017	सूर्य	10/12/2019

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
10/12/2019		07/05/2021		03/05/2024		05/02/2026		07/06/2027	
07/05/2021		03/05/2024		05/02/2026		07/06/2027		06/10/2029	
मंगल	17/01/2020	बुध	26/10/2021	शनि	02/07/2024	राहु	31/03/2026	शुक्र	19/11/2027
बुध	07/04/2020	शनि	04/02/2022	गुरु	23/10/2024	शुक्र	03/07/2026	सूर्य	06/01/2028
शनि	24/05/2020	गुरु	15/08/2022	राहु	02/01/2025	सूर्य	30/07/2026	चंद्र	03/05/2028
गुरु	23/08/2020	राहु	14/12/2022	शुक्र	07/05/2025	चंद्र	06/10/2026	मंगल	05/07/2028
राहु	19/10/2020	शुक्र	15/07/2023	सूर्य	12/06/2025	मंगल	11/11/2026	बुध	16/11/2028
शुक्र	27/01/2021	सूर्य	13/09/2023	चंद्र	09/09/2025	बुध	27/01/2027	शनि	03/02/2029
सूर्य	24/02/2021	चंद्र	12/02/2024	मंगल	26/10/2025	शनि	13/03/2027	गुरु	03/07/2029
चंद्र	07/05/2021	मंगल	03/05/2024	बुध	05/02/2026	गुरु	07/06/2027	राहु	06/10/2029

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
06/10/2029		06/06/2030		05/02/2032		26/12/2032		16/11/2034	
06/06/2030		05/02/2032		26/12/2032		16/11/2034		27/12/2035	
सूर्य	19/10/2029	चंद्र	30/08/2030	मंगल	29/02/2032	बुध	13/04/2033	शनि	23/12/2034
चंद्र	22/11/2029	मंगल	14/10/2030	बुध	20/04/2032	शनि	16/06/2033	गुरु	05/03/2035
मंगल	10/12/2029	बुध	18/01/2031	शनि	20/05/2032	गुरु	16/10/2033	राहु	19/04/2035
बुध	18/01/2030	शनि	15/03/2031	गुरु	16/07/2032	राहु	31/12/2033	शुक्र	07/07/2035
शनि	09/02/2030	गुरु	30/06/2031	राहु	22/08/2032	शुक्र	14/05/2034	सूर्य	29/07/2035
गुरु	24/03/2030	राहु	06/09/2031	शुक्र	24/10/2032	सूर्य	22/06/2034	चंद्र	24/09/2035
राहु	20/04/2030	शुक्र	02/01/2032	सूर्य	11/11/2032	चंद्र	26/09/2034	मंगल	24/10/2035
शुक्र	06/06/2030	सूर्य	05/02/2032	चंद्र	26/12/2032	मंगल	16/11/2034	बुध	27/12/2035

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
27/12/2035		05/02/2038		07/03/2042		07/05/2043		06/04/2046	
05/02/2038		07/03/2042		07/05/2043		06/04/2046		27/10/2047	
गुरु	10/05/2036	शुक्र	22/11/2038	सूर्य	31/03/2042	चंद्र	02/10/2043	मंगल	19/05/2046
राहु	04/08/2036	सूर्य	12/02/2039	चंद्र	29/05/2042	मंगल	20/12/2043	बुध	16/08/2046
शुक्र	01/01/2037	चंद्र	08/09/2039	मंगल	29/06/2042	बुध	05/06/2044	शनि	08/10/2046
सूर्य	13/02/2037	मंगल	27/12/2039	बुध	05/09/2042	शनि	11/09/2044	गुरु	16/01/2047
चंद्र	31/05/2037	बुध	18/08/2040	शनि	14/10/2042	गुरु	18/03/2045	राहु	20/03/2047
मंगल	27/07/2037	शनि	03/01/2041	गुरु	28/12/2042	राहु	14/07/2045	शुक्र	08/07/2047
बुध	25/11/2037	गुरु	22/09/2041	राहु	13/02/2043	शुक्र	06/02/2046	सूर्य	09/08/2047
शनि	05/02/2038	राहु	07/03/2042	शुक्र	07/05/2043	सूर्य	06/04/2046	चंद्र	27/10/2047

शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य	
27/10/2047		15/02/2051		25/01/2053		06/10/2056		05/02/2059	
15/02/2051		25/01/2053		06/10/2056		05/02/2059		07/06/2059	
बुध	04/05/2048	शनि	22/04/2051	गुरु	20/09/2053	राहु	08/01/2057	सूर्य	12/02/2059
शनि	24/08/2048	गुरु	25/08/2051	राहु	17/02/2054	शुक्र	23/06/2057	चंद्र	01/03/2059
गुरु	24/03/2049	राहु	12/11/2051	शुक्र	06/11/2054	सूर्य	09/08/2057	मंगल	10/03/2059
राहु	05/08/2049	शुक्र	29/03/2052	सूर्य	20/01/2055	चंद्र	06/12/2057	बुध	29/03/2059
शुक्र	28/03/2050	सूर्य	07/05/2052	चंद्र	26/07/2055	मंगल	07/02/2058	शनि	09/04/2059
सूर्य	03/06/2050	चंद्र	14/08/2052	मंगल	03/11/2055	बुध	21/06/2058	गुरु	30/04/2059
चंद्र	18/11/2050	मंगल	05/10/2052	बुध	03/06/2056	शनि	08/09/2058	राहु	14/05/2059
मंगल	15/02/2051	बुध	25/01/2053	शनि	06/10/2056	गुरु	05/02/2059	शुक्र	07/06/2059

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु	
07/06/2059		06/04/2060		15/09/2060		26/08/2061		17/03/2062	
06/04/2060		15/09/2060		26/08/2061		17/03/2062		07/04/2063	
चंद्र	19/07/2059	मंगल	18/04/2060	बुध	09/11/2060	शनि	14/09/2061	गुरु	24/05/2062
मंगल	10/08/2059	बुध	14/05/2060	शनि	11/12/2060	गुरु	20/10/2061	राहु	06/07/2062
बुध	27/09/2059	शनि	29/05/2060	गुरु	09/02/2061	राहु	11/11/2061	शुक्र	19/09/2062
शनि	26/10/2059	गुरु	26/06/2060	राहु	20/03/2061	शुक्र	21/12/2061	सूर्य	10/10/2062
गुरु	18/12/2059	राहु	14/07/2060	शुक्र	26/05/2061	सूर्य	01/01/2062	चंद्र	03/12/2062
राहु	21/01/2060	शुक्र	15/08/2060	सूर्य	14/06/2061	चंद्र	29/01/2062	मंगल	31/12/2062
शुक्र	20/03/2060	सूर्य	24/08/2060	चंद्र	01/08/2061	मंगल	13/02/2062	बुध	02/03/2063
सूर्य	06/04/2060	चंद्र	15/09/2060	मंगल	26/08/2061	बुध	17/03/2062	शनि	07/04/2063

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 3 वर्ष 5 मास 23 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
26/12/1961		**20/06/1965**		**20/06/1971**		**20/06/1978**		**20/06/1986**	
20/06/1965		**20/06/1971**		**20/06/1978**		**20/06/1986**		**20/06/1987**	
	26/12/1961	उल्क	20/06/1966	सिद्ध	29/10/1972	संक	30/03/1980	मंग	30/06/1986
उल्क	29/12/1961	सिद्ध	20/08/1967	संक	20/05/1974	मंग	19/06/1980	पिंग	20/07/1986
सिद्ध	19/12/1962	संक	19/12/1968	मंग	30/07/1974	पिंग	29/11/1980	धांय	20/08/1986
संक	29/01/1964	मंग	18/02/1969	पिंग	19/12/1974	धांय	30/07/1981	भ्राम	29/09/1986
मंग	20/03/1964	पिंग	20/06/1969	धांय	20/07/1975	भ्राम	20/06/1982	भद्रि	19/11/1986
पिंग	29/06/1964	धांय	19/12/1969	भ्राम	30/04/1976	भद्रि	31/07/1983	उल्क	19/01/1987
धांय	29/11/1964	भ्राम	20/08/1970	भद्रि	20/04/1977	उल्क	29/11/1984	सिद्ध	31/03/1987
भ्राम	20/06/1965	भद्रि	20/06/1971	उल्क	20/06/1978	सिद्ध	20/06/1986	संक	20/06/1987

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
20/06/1987		**20/06/1989**		**19/06/1992**		**19/06/1996**		**20/06/2001**	
20/06/1989		**19/06/1992**		**19/06/1996**		**20/06/2001**		**20/06/2007**	
पिंग	31/07/1987	धांय	19/09/1989	भ्राम	29/11/1992	भद्रि	28/02/1997	उल्क	20/06/2002
धांय	29/09/1987	भ्राम	19/01/1990	भद्रि	20/06/1993	उल्क	29/12/1997	सिद्ध	20/08/2003
भ्राम	20/12/1987	भद्रि	20/06/1990	उल्क	18/02/1994	सिद्ध	19/12/1998	संक	19/12/2004
भद्रि	30/03/1988	उल्क	19/12/1990	सिद्ध	29/11/1994	संक	29/01/2000	मंग	18/02/2005
उल्क	30/07/1988	सिद्ध	20/07/1991	संक	20/10/1995	मंग	20/03/2000	पिंग	20/06/2005
सिद्ध	19/12/1988	संक	20/03/1992	मंग	29/11/1995	पिंग	29/06/2000	धांय	19/12/2005
संक	30/05/1989	मंग	19/04/1992	पिंग	19/02/1996	धांय	29/11/2000	भ्राम	20/08/2006
मंग	20/06/1989	पिंग	19/06/1992	धांय	19/06/1996	भ्राम	20/06/2001	भद्रि	20/06/2007

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
20/06/2007		20/06/2014		20/06/2022		20/06/2023		20/06/2025	
20/06/2014		20/06/2022		20/06/2023		20/06/2025		19/06/2028	
सिद्ध	29/10/2008	संक	30/03/2016	मंग	30/06/2022	पिंग	31/07/2023	धांय	19/09/2025
संक	20/05/2010	मंग	19/06/2016	पिंग	20/07/2022	धांय	29/09/2023	भ्राम	19/01/2026
मंग	30/07/2010	पिंग	29/11/2016	धांय	20/08/2022	भ्राम	20/12/2023	भद्रि	20/06/2026
पिंग	19/12/2010	धांय	30/07/2017	भ्राम	29/09/2022	भद्रि	30/03/2024	उल्क	19/12/2026
धांय	20/07/2011	भ्राम	20/06/2018	भद्रि	19/11/2022	उल्क	30/07/2024	सिद्ध	20/07/2027
भ्राम	30/04/2012	भद्रि	31/07/2019	उल्क	19/01/2023	सिद्ध	19/12/2024	संक	20/03/2028
भद्रि	20/04/2013	उल्क	29/11/2020	सिद्ध	31/03/2023	संक	30/05/2025	मंग	19/04/2028
उल्क	20/06/2014	सिद्ध	20/06/2022	संक	20/06/2023	मंग	20/06/2025	पिंग	19/06/2028

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
19/06/2028		19/06/2032		20/06/2037		20/06/2043		20/06/2050	
19/06/2032		20/06/2037		20/06/2043		20/06/2050		20/06/2058	
भ्राम	29/11/2028	भद्रि	28/02/2033	उल्क	20/06/2038	सिद्ध	29/10/2044	संक	30/03/2052
भद्रि	20/06/2029	उल्क	29/12/2033	सिद्ध	20/08/2039	संक	20/05/2046	मंग	19/06/2052
उल्क	18/02/2030	सिद्ध	19/12/2034	संक	19/12/2040	मंग	30/07/2046	पिंग	29/11/2052
सिद्ध	29/11/2030	संक	29/01/2036	मंग	18/02/2041	पिंग	19/12/2046	धांय	30/07/2053
संक	20/10/2031	मंग	20/03/2036	पिंग	20/06/2041	धांय	20/07/2047	भ्राम	20/06/2054
मंग	29/11/2031	पिंग	29/06/2036	धांय	19/12/2041	भ्राम	30/04/2048	भद्रि	31/07/2055
पिंग	19/02/2032	धांय	29/11/2036	भ्राम	20/08/2042	भद्रि	20/04/2049	उल्क	29/11/2056
धांय	19/06/2032	भ्राम	20/06/2037	भद्रि	20/06/2043	उल्क	20/06/2050	सिद्ध	20/06/2058

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
20/06/2058		20/06/2059		20/06/2061		19/06/2064		19/06/2068	
20/06/2059		20/06/2061		19/06/2064		19/06/2068		00/00/0000	
मंग	30/06/2058	पिंग	31/07/2059	धांय	19/09/2061	भ्राम	29/11/2064	भद्रि	28/02/2069
पिंग	20/07/2058	धांय	29/09/2059	भ्राम	19/01/2062	भद्रि	20/06/2065	उल्क	26/12/2069
धांय	20/08/2058	भ्राम	20/12/2059	भद्रि	20/06/2062	उल्क	18/02/2066		00/00/0000
भ्राम	29/09/2058	भद्रि	30/03/2060	उल्क	19/12/2062	सिद्ध	29/11/2066		00/00/0000
भद्रि	19/11/2058	उल्क	30/07/2060	सिद्ध	20/07/2063	संक	20/10/2067		00/00/0000
उल्क	19/01/2059	सिद्ध	19/12/2060	संक	20/03/2064	मंग	29/11/2067		00/00/0000
सिद्ध	31/03/2059	संक	30/05/2061	मंग	19/04/2064	पिंग	19/02/2068		00/00/0000
संक	20/06/2059	मंग	20/06/2061	पिंग	19/06/2064	धांय	19/06/2068		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक	
19/09/2025		19/01/2026		20/06/2026		19/12/2026		20/07/2027	
19/01/2026		20/06/2026		19/12/2026		20/07/2027		20/03/2028	
भ्राम	02/10/2025	भद्रि	09/02/2026	उल्क	20/07/2026	सिद्ध	30/01/2027	संक	13/09/2027
भद्रि	19/10/2025	उल्क	06/03/2026	सिद्ध	25/08/2026	संक	18/03/2027	मंग	19/09/2027
उल्क	09/11/2025	सिद्ध	05/04/2026	संक	04/10/2026	मंग	24/03/2027	पिंग	03/10/2027
सिद्ध	02/12/2025	संक	08/05/2026	मंग	09/10/2026	पिंग	05/04/2027	धांय	23/10/2027
संक	29/12/2025	मंग	13/05/2026	पिंग	20/10/2026	धांय	23/04/2027	भ्राम	19/11/2027
मंग	02/01/2026	पिंग	21/05/2026	धांय	04/11/2026	भ्राम	16/05/2027	भद्रि	23/12/2027
पिंग	08/01/2026	धांय	03/06/2026	भ्राम	24/11/2026	भद्रि	15/06/2027	उल्क	02/02/2028
धांय	19/01/2026	भ्राम	20/06/2026	भद्रि	19/12/2026	उल्क	20/07/2027	सिद्ध	20/03/2028

धांय - मंग		धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क	
20/03/2028		19/04/2028		19/06/2028		29/11/2028		20/06/2029	
19/04/2028		19/06/2028		29/11/2028		20/06/2029		18/02/2030	
मंग	21/03/2028	पिंग	23/04/2028	भ्राम	07/07/2028	भद्रि	27/12/2028	उल्क	30/07/2029
पिंग	22/03/2028	धांय	28/04/2028	भद्रि	30/07/2028	उल्क	30/01/2029	सिद्ध	15/09/2029
धांय	25/03/2028	भ्राम	05/05/2028	उल्क	26/08/2028	सिद्ध	10/03/2029	संक	09/11/2029
भ्राम	28/03/2028	भद्रि	13/05/2028	सिद्ध	26/09/2028	संक	24/04/2029	मंग	15/11/2029
भद्रि	02/04/2028	उल्क	23/05/2028	संक	02/11/2028	मंग	30/04/2029	पिंग	29/11/2029
उल्क	07/04/2028	सिद्ध	04/06/2028	मंग	06/11/2028	पिंग	11/05/2029	धांय	19/12/2029
सिद्ध	13/04/2028	संक	18/06/2028	पिंग	15/11/2028	धांय	28/05/2029	भ्राम	15/01/2030
संक	19/04/2028	मंग	19/06/2028	धांय	29/11/2028	भ्राम	20/06/2029	भद्रि	18/02/2030

भ्राम - सिद्ध		भ्राम - संक		भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय	
18/02/2030		29/11/2030		20/10/2031		29/11/2031		19/02/2032	
29/11/2030		20/10/2031		29/11/2031		19/02/2032		19/06/2032	
सिद्ध	14/04/2030	संक	09/02/2031	मंग	21/10/2031	पिंग	04/12/2031	धांय	29/02/2032
संक	16/06/2030	मंग	18/02/2031	पिंग	23/10/2031	धांय	11/12/2031	भ्राम	13/03/2032
मंग	24/06/2030	पिंग	08/03/2031	धांय	27/10/2031	भ्राम	20/12/2031	भद्रि	30/03/2032
पिंग	10/07/2030	धांय	04/04/2031	भ्राम	31/10/2031	भद्रि	31/12/2031	उल्क	19/04/2032
धांय	03/08/2030	भ्राम	10/05/2031	भद्रि	06/11/2031	उल्क	13/01/2032	सिद्ध	13/05/2032
भ्राम	03/09/2030	भद्रि	25/06/2031	उल्क	12/11/2031	सिद्ध	29/01/2032	संक	09/06/2032
भद्रि	13/10/2030	उल्क	18/08/2031	सिद्ध	20/11/2031	संक	16/02/2032	मंग	13/06/2032
उल्क	29/11/2030	सिद्ध	20/10/2031	संक	29/11/2031	मंग	19/02/2032	पिंग	19/06/2032

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भद्रि - भद्रि		भद्रि - उल्क		भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग	
19/06/2032		28/02/2033		29/12/2033		19/12/2034		29/01/2036	
28/02/2033		29/12/2033		19/12/2034		29/01/2036		20/03/2036	
भद्रि	24/07/2032	उल्क	20/04/2033	सिद्ध	08/03/2034	संक	20/03/2035	मंग	31/01/2036
उल्क	05/09/2032	सिद्ध	18/06/2033	संक	26/05/2034	मंग	31/03/2035	पिंग	02/02/2036
सिद्ध	24/10/2032	संक	24/08/2033	मंग	05/06/2034	पिंग	22/04/2035	धांय	07/02/2036
संक	19/12/2032	मंग	02/09/2033	पिंग	25/06/2034	धांय	26/05/2035	भ्राम	12/02/2036
मंग	27/12/2032	पिंग	19/09/2033	धांय	24/07/2034	भ्राम	10/07/2035	भद्रि	19/02/2036
पिंग	10/01/2033	धांय	14/10/2033	भ्राम	02/09/2034	भद्रि	05/09/2035	उल्क	28/02/2036
धांय	31/01/2033	भ्राम	17/11/2033	भद्रि	21/10/2034	उल्क	11/11/2035	सिद्ध	09/03/2036
भ्राम	28/02/2033	भद्रि	29/12/2033	उल्क	19/12/2034	सिद्ध	29/01/2036	संक	20/03/2036

भद्रि - पिंग		भद्रि - धांय		भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध	
20/03/2036		29/06/2036		29/11/2036		20/06/2037		20/06/2038	
29/06/2036		29/11/2036		20/06/2037		20/06/2038		20/08/2039	
पिंग	26/03/2036	धांय	12/07/2036	भ्राम	21/12/2036	उल्क	19/08/2037	सिद्ध	11/09/2038
धांय	03/04/2036	भ्राम	29/07/2036	भद्रि	18/01/2037	सिद्ध	29/10/2037	संक	14/12/2038
भ्राम	14/04/2036	भद्रि	19/08/2036	उल्क	21/02/2037	संक	19/01/2038	मंग	26/12/2038
भद्रि	28/04/2036	उल्क	14/09/2036	सिद्ध	02/04/2037	मंग	29/01/2038	पिंग	19/01/2039
उल्क	15/05/2036	सिद्ध	13/10/2036	संक	17/05/2037	पिंग	18/02/2038	धांय	23/02/2039
सिद्ध	04/06/2036	संक	16/11/2036	मंग	22/05/2037	धांय	20/03/2038	भ्राम	12/04/2039
संक	27/06/2036	मंग	20/11/2036	पिंग	03/06/2037	भ्राम	30/04/2038	भद्रि	10/06/2039
मंग	29/06/2036	पिंग	29/11/2036	धांय	20/06/2037	भद्रि	20/06/2038	उल्क	20/08/2039

उल्क - संक		उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम	
20/08/2039		19/12/2040		18/02/2041		20/06/2041		19/12/2041	
19/12/2040		18/02/2041		20/06/2041		19/12/2041		20/08/2042	
संक	06/12/2039	मंग	21/12/2040	पिंग	25/02/2041	धांय	05/07/2041	भ्राम	15/01/2042
मंग	20/12/2039	पिंग	24/12/2040	धांय	07/03/2041	भ्राम	25/07/2041	भद्रि	18/02/2042
पिंग	16/01/2040	धांय	29/12/2040	भ्राम	20/03/2041	भद्रि	19/08/2041	उल्क	31/03/2042
धांय	25/02/2040	भ्राम	05/01/2041	भद्रि	06/04/2041	उल्क	19/09/2041	सिद्ध	17/05/2042
भ्राम	19/04/2040	भद्रि	13/01/2041	उल्क	26/04/2041	सिद्ध	24/10/2041	संक	10/07/2042
भद्रि	26/06/2040	उल्क	23/01/2041	सिद्ध	20/05/2041	संक	04/12/2041	मंग	17/07/2042
उल्क	15/09/2040	सिद्ध	04/02/2041	संक	16/06/2041	मंग	09/12/2041	पिंग	30/07/2042
सिद्ध	19/12/2040	संक	18/02/2041	मंग	20/06/2041	पिंग	19/12/2041	धांय	20/08/2042

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 7 वर्ष 0 मास 26 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : मघा - 2 अपसव्य
देह : तुला जीव : कन्या

तुला 16 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष	
26/12/1961		22/01/1969		22/01/1976		22/01/1986		22/01/1990	
22/01/1969		22/01/1976		22/01/1986		22/01/1990		22/01/1994	
	00/00/0000	वृश्चि	25/08/1969	मीन	06/04/1977	कुंभ	02/04/1986	मक	02/04/1990
	00/00/0000	मीन	29/06/1970	कुंभ	30/09/1977	मक	12/06/1986	धनु	25/09/1990
	00/00/0000	कुंभ	31/10/1970	मक	25/03/1978	धनु	05/12/1986	वृश्चि	27/01/1991
	00/00/0000	मक	03/03/1971	धनु	08/06/1979	वृश्चि	07/04/1987	तुला	04/11/1991
	26/12/1961	धनु	05/01/1972	वृश्चि	11/04/1980	तुला	14/01/1988	कन्या	11/04/1992
धनु	22/11/1962	वृश्चि	07/08/1972	तुला	16/03/1982	कन्या	20/06/1988	तुला	17/01/1993
वृश्चि	28/03/1964	तुला	13/12/1973	कन्या	16/04/1983	तुला	29/03/1989	वृश्चि	20/05/1993
तुला	29/04/1967	कन्या	17/09/1974	तुला	20/03/1985	वृश्चि	30/07/1989	मीन	13/11/1993
कन्या	22/01/1969	तुला	22/01/1976	वृश्चि	22/01/1986	मीन	22/01/1990	कुंभ	22/01/1994

धनु 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
22/01/1994		22/01/2004		22/01/2011		22/01/2027		22/01/2036	
22/01/2004		22/01/2011		22/01/2027		22/01/2036		00/00/0000	
धनु	07/04/1995	वृश्चि	25/08/2004	तुला	22/02/2014	कन्या	14/01/2028	तुला	22/02/2039
वृश्चि	09/02/1996	तुला	31/12/2005	कन्या	17/11/2015	तुला	08/10/2029	वृश्चि	29/06/2040
तुला	13/01/1998	कन्या	04/10/2006	तुला	18/12/2018	वृश्चि	13/07/2030	मीन	03/06/2042
कन्या	13/02/1999	तुला	09/02/2008	वृश्चि	24/04/2020	मीन	13/08/2031	कुंभ	12/03/2043
तुला	17/01/2001	वृश्चि	12/09/2008	मीन	29/03/2022	कुंभ	18/01/2032	मक	18/12/2043
वृश्चि	21/11/2001	मीन	17/07/2009	कुंभ	05/01/2023	मक	24/06/2032	धनु	26/12/2044
मीन	04/02/2003	कुंभ	17/11/2009	मक	13/10/2023	धनु	25/07/2033		00/00/0000
कुंभ	30/07/2003	मक	20/03/2010	धनु	16/09/2025	वृश्चि	29/04/2034		00/00/0000
मक	22/01/2004	धनु	22/01/2011	वृश्चि	22/01/2027	तुला	22/01/2036		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - वृश्चि		कन्या - कन्या		कन्या - तुला		कन्या - वृश्चि		कन्या - मीन	
16/09/2025		22/01/2027		14/01/2028		08/10/2029		13/07/2030	
22/01/2027		14/01/2028		08/10/2029		13/07/2030		13/08/2031	
वृश्चि	28/10/2025	कन्या	02/03/2027	तुला	15/05/2028	वृश्चि	01/11/2029	मीन	29/08/2030
तुला	31/01/2026	तुला	10/05/2027	वृश्चि	07/07/2028	मीन	04/12/2029	कुंभ	17/09/2030
कन्या	25/03/2026	वृश्चि	09/06/2027	मीन	22/09/2028	कुंभ	17/12/2029	मक	06/10/2030
तुला	28/06/2026	मीन	22/07/2027	कुंभ	22/10/2028	मक	31/12/2029	धनु	23/11/2030
वृश्चि	09/08/2026	कुंभ	08/08/2027	मक	22/11/2028	धनु	02/02/2030	वृश्चि	27/12/2030
मीन	07/10/2026	मक	25/08/2027	धनु	06/02/2029	वृश्चि	26/02/2030	तुला	13/03/2031
कुंभ	31/10/2026	धनु	07/10/2027	वृश्चि	31/03/2029	तुला	20/04/2030	कन्या	25/04/2031
मक	24/11/2026	वृश्चि	06/11/2027	तुला	01/08/2029	कन्या	20/05/2030	तुला	10/07/2031
धनु	22/01/2027	तुला	14/01/2028	कन्या	08/10/2029	तुला	13/07/2030	वृश्चि	13/08/2031

कन्या - कुंभ		कन्या - मक		कन्या - धनु		कन्या - वृश्चि		कन्या - तुला	
13/08/2031		18/01/2032		24/06/2032		25/07/2033		29/04/2034	
18/01/2032		24/06/2032		25/07/2033		29/04/2034		22/01/2036	
कुंभ	20/08/2031	मक	26/01/2032	धनु	11/08/2032	वृश्चि	18/08/2033	तुला	29/08/2034
मक	28/08/2031	धनु	14/02/2032	वृश्चि	14/09/2032	तुला	10/10/2033	कन्या	06/11/2034
धनु	16/09/2031	वृश्चि	27/02/2032	तुला	29/11/2032	कन्या	09/11/2033	तुला	08/03/2035
वृश्चि	29/09/2031	तुला	29/03/2032	कन्या	11/01/2033	तुला	02/01/2034	वृश्चि	30/04/2035
तुला	30/10/2031	कन्या	15/04/2032	तुला	28/03/2033	वृश्चि	25/01/2034	मीन	16/07/2035
कन्या	16/11/2031	तुला	15/05/2032	वृश्चि	01/05/2033	मीन	28/02/2034	कुंभ	15/08/2035
तुला	17/12/2031	वृश्चि	29/05/2032	मीन	17/06/2033	कुंभ	13/03/2034	मक	15/09/2035
वृश्चि	30/12/2031	मीन	17/06/2032	कुंभ	06/07/2033	मक	26/03/2034	धनु	30/11/2035
मीन	18/01/2032	कुंभ	24/06/2032	मक	25/07/2033	धनु	29/04/2034	वृश्चि	22/01/2036

तुला - तुला		तुला - वृश्चि		तुला - मीन		तुला - कुंभ		तुला - मक	
22/01/2036		22/02/2039		29/06/2040		03/06/2042		12/03/2043	
22/02/2039		29/06/2040		03/06/2042		12/03/2043		18/12/2043	
तुला	27/08/2036	वृश्चि	05/04/2039	मीन	22/09/2040	कुंभ	17/06/2042	मक	25/03/2043
वृश्चि	30/11/2036	मीन	03/06/2039	कुंभ	26/10/2040	मक	30/06/2042	धनु	28/04/2043
मीन	14/04/2037	कुंभ	27/06/2039	मक	29/11/2040	धनु	03/08/2042	वृश्चि	22/05/2043
कुंभ	08/06/2037	मक	20/07/2039	धनु	21/02/2041	वृश्चि	27/08/2042	तुला	15/07/2043
मक	01/08/2037	धनु	18/09/2039	वृश्चि	22/04/2041	तुला	20/10/2042	कन्या	15/08/2043
धनु	15/12/2037	वृश्चि	29/10/2039	तुला	04/09/2041	कन्या	20/11/2042	तुला	08/10/2043
वृश्चि	20/03/2038	तुला	01/02/2040	कन्या	20/11/2041	तुला	13/01/2043	वृश्चि	01/11/2043
तुला	23/10/2038	कन्या	26/03/2040	तुला	05/04/2042	वृश्चि	06/02/2043	मीन	05/12/2043
कन्या	22/02/2039	तुला	29/06/2040	वृश्चि	03/06/2042	मीन	12/03/2043	कुंभ	18/12/2043

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - धनु	
18/12/2043	
00/00/0000	
धनु	12/03/2044
वृश्चि	10/05/2044
तुला	23/09/2044
कन्या	09/12/2044
तुला	26/12/2044
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : सिंह 8 वर्ष 0 मास 0 दिन

सिंह 8 वर्ष	
26/12/1961	
26/12/1969	
कन्या	27/08/1962
तुला	27/04/1963
वृश्चि	27/12/1963
धनु	26/08/1964
मक	27/04/1965
कुंभ	26/12/1965
मीन	27/08/1966
मेष	27/04/1967
वृष	27/12/1967
मिथु	26/08/1968
कर्क	27/04/1969
सिंह	26/12/1969

कन्या 9 वर्ष	
26/12/1969	
27/12/1978	
तुला	26/09/1970
वृश्चि	27/06/1971
धनु	27/03/1972
मक	26/12/1972
कुंभ	26/09/1973
मीन	27/06/1974
मेष	28/03/1975
वृष	27/12/1975
मिथु	26/09/1976
कर्क	27/06/1977
सिंह	28/03/1978
कन्या	27/12/1978

तुला 2 वर्ष	
27/12/1978	
26/12/1980	
वृश्चि	26/02/1979
धनु	27/04/1979
मक	27/06/1979
कुंभ	27/08/1979
मीन	27/10/1979
मेष	27/12/1979
वृष	26/02/1980
मिथु	27/04/1980
कर्क	27/06/1980
सिंह	26/08/1980
कन्या	26/10/1980
तुला	26/12/1980

वृश्चिक 1 वर्ष	
26/12/1980	
26/12/1981	
तुला	26/01/1981
कन्या	25/02/1981
सिंह	28/03/1981
कर्क	27/04/1981
मिथु	27/05/1981
वृष	27/06/1981
मेष	27/07/1981
मीन	27/08/1981
कुंभ	26/09/1981
मक	27/10/1981
धनु	26/11/1981
वृश्चि	26/12/1981

धनु 1 वर्ष	
26/12/1981	
27/12/1982	
वृश्चि	26/01/1982
तुला	25/02/1982
कन्या	28/03/1982
सिंह	27/04/1982
कर्क	28/05/1982
मिथु	27/06/1982
वृष	28/07/1982
मेष	27/08/1982
मीन	26/09/1982
कुंभ	27/10/1982
मक	26/11/1982
धनु	27/12/1982

मकर 12 वर्ष	
27/12/1982	
27/12/1994	
धनु	27/12/1983
वृश्चि	26/12/1984
तुला	26/12/1985
कन्या	27/12/1986
सिंह	27/12/1987
कर्क	26/12/1988
मिथु	26/12/1989
वृष	27/12/1990
मेष	27/12/1991
मीन	26/12/1992
कुंभ	26/12/1993
मक	27/12/1994

कुम्भ 1 वर्ष	
27/12/1994	
27/12/1995	
मीन	26/01/1995
मेष	26/02/1995
वृष	28/03/1995
मिथु	27/04/1995
कर्क	28/05/1995
सिंह	27/06/1995
कन्या	28/07/1995
तुला	27/08/1995
वृश्चि	27/09/1995
धनु	27/10/1995
मक	27/11/1995
कुंभ	27/12/1995

मीन 2 वर्ष	
27/12/1995	
26/12/1997	
मेष	26/02/1996
वृष	27/04/1996
मिथु	27/06/1996
कर्क	26/08/1996
सिंह	26/10/1996
कन्या	26/12/1996
तुला	25/02/1997
वृश्चि	27/04/1997
धनु	27/06/1997
मक	27/08/1997
कुंभ	27/10/1997
मीन	26/12/1997

मेष 8 वर्ष	
26/12/1997	
26/12/2005	
वृष	27/08/1998
मिथु	27/04/1999
कर्क	27/12/1999
सिंह	26/08/2000
कन्या	27/04/2001
तुला	26/12/2001
वृश्चि	27/08/2002
धनु	27/04/2003
मक	27/12/2003
कुंभ	26/08/2004
मीन	27/04/2005
मेष	26/12/2005

वृष 7 वर्ष	
26/12/2005	
26/12/2012	
मेष	28/07/2006
मीन	26/02/2007
कुंभ	27/09/2007
मक	27/04/2008
धनु	26/11/2008
वृश्चि	27/06/2009
तुला	26/01/2010
कन्या	27/08/2010
सिंह	28/03/2011
कर्क	27/10/2011
मिथु	27/05/2012
वृष	26/12/2012

मिथुन 6 वर्ष	
26/12/2012	
27/12/2018	
वृष	27/06/2013
मेष	26/12/2013
मीन	27/06/2014
कुंभ	27/12/2014
मक	27/06/2015
धनु	27/12/2015
वृश्चि	27/06/2016
तुला	26/12/2016
कन्या	27/06/2017
सिंह	26/12/2017
कर्क	27/06/2018
मिथु	27/12/2018

कर्क 11 वर्ष	
27/12/2018	
26/12/2029	
मिथु	27/11/2019
वृष	26/10/2020
मेष	26/09/2021
मीन	27/08/2022
कुंभ	28/07/2023
मक	27/06/2024
धनु	27/05/2025
वृश्चि	27/04/2026
तुला	28/03/2027
कन्या	26/02/2028
सिंह	26/01/2029
कर्क	26/12/2029

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - वृश्चि		कर्क - तुला		कर्क - कन्या		कर्क - सिंह		कर्क - कर्क	
27/05/2025		27/04/2026		28/03/2027		26/02/2028		26/01/2029	
27/04/2026		28/03/2027		26/02/2028		26/01/2029		26/12/2029	
तुला	24/06/2025	वृश्चि	25/05/2026	तुला	25/04/2027	कन्या	25/03/2028	मिथु	23/02/2029
कन्या	22/07/2025	धनु	22/06/2026	वृश्चि	23/05/2027	तुला	22/04/2028	वृष	22/03/2029
सिंह	19/08/2025	मक	20/07/2026	धनु	20/06/2027	वृश्चि	20/05/2028	मेष	19/04/2029
कर्क	16/09/2025	कुंभ	17/08/2026	मक	18/07/2027	धनु	16/06/2028	मीन	17/05/2029
मिथु	14/10/2025	मीन	14/09/2026	कुंभ	15/08/2027	मक	14/07/2028	कुंभ	14/06/2029
वृष	11/11/2025	मेष	12/10/2026	मीन	11/09/2027	कुंभ	11/08/2028	मक	12/07/2029
मेष	09/12/2025	वृष	09/11/2026	मेष	09/10/2027	मीन	08/09/2028	धनु	09/08/2029
मीन	06/01/2026	मिथु	06/12/2026	वृष	06/11/2027	मेष	06/10/2028	वृश्चि	06/09/2029
कुंभ	02/02/2026	कर्क	03/01/2027	मिथु	04/12/2027	वृष	03/11/2028	तुला	04/10/2029
मक	02/03/2026	सिंह	31/01/2027	कर्क	01/01/2028	मिथु	01/12/2028	कन्या	01/11/2029
धनु	30/03/2026	कन्या	28/02/2027	सिंह	29/01/2028	कर्क	29/12/2028	सिंह	29/11/2029
वृश्चि	27/04/2026	तुला	28/03/2027	कन्या	26/02/2028	सिंह	26/01/2029	कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क		कर्क - कर्क		कर्क - कर्क		कर्क - कर्क		कर्क - कर्क	
26/01/2029		26/01/2029		26/01/2029		26/01/2029		26/01/2029	
26/12/2029		26/12/2029		26/12/2029		26/12/2029		26/12/2029	
मिथु	23/02/2029	मिथु	23/02/2029	मिथु	23/02/2029	मिथु	23/02/2029	मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029	वृष	22/03/2029	वृष	22/03/2029	वृष	22/03/2029	वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029	मेष	19/04/2029	मेष	19/04/2029	मेष	19/04/2029	मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029	मीन	17/05/2029	मीन	17/05/2029	मीन	17/05/2029	मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029	कुंभ	14/06/2029	कुंभ	14/06/2029	कुंभ	14/06/2029	कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029	मक	12/07/2029	मक	12/07/2029	मक	12/07/2029	मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029	धनु	09/08/2029	धनु	09/08/2029	धनु	09/08/2029	धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029	वृश्चि	06/09/2029	वृश्चि	06/09/2029	वृश्चि	06/09/2029	वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029	तुला	04/10/2029	तुला	04/10/2029	तुला	04/10/2029	तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029	कन्या	01/11/2029	कन्या	01/11/2029	कन्या	01/11/2029	कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029	सिंह	29/11/2029	सिंह	29/11/2029	सिंह	29/11/2029	सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029	कर्क	26/12/2029	कर्क	26/12/2029	कर्क	26/12/2029	कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क		कर्क - कर्क		कर्क - कर्क		कर्क - कर्क		कर्क - कर्क	
26/01/2029		26/01/2029		26/01/2029		26/01/2029		26/01/2029	
26/12/2029		26/12/2029		26/12/2029		26/12/2029		26/12/2029	
मिथु	23/02/2029	मिथु	23/02/2029	मिथु	23/02/2029	मिथु	23/02/2029	मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029	वृष	22/03/2029	वृष	22/03/2029	वृष	22/03/2029	वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029	मेष	19/04/2029	मेष	19/04/2029	मेष	19/04/2029	मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029	मीन	17/05/2029	मीन	17/05/2029	मीन	17/05/2029	मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029	कुंभ	14/06/2029	कुंभ	14/06/2029	कुंभ	14/06/2029	कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029	मक	12/07/2029	मक	12/07/2029	मक	12/07/2029	मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029	धनु	09/08/2029	धनु	09/08/2029	धनु	09/08/2029	धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029	वृश्चि	06/09/2029	वृश्चि	06/09/2029	वृश्चि	06/09/2029	वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029	तुला	04/10/2029	तुला	04/10/2029	तुला	04/10/2029	तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029	कन्या	01/11/2029	कन्या	01/11/2029	कन्या	01/11/2029	कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029	सिंह	29/11/2029	सिंह	29/11/2029	सिंह	29/11/2029	सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029	कर्क	26/12/2029	कर्क	26/12/2029	कर्क	26/12/2029	कर्क	26/12/2029

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

कर्क - कर्क	
26/01/2029	
26/12/2029	
मिथु	23/02/2029
वृष	22/03/2029
मेष	19/04/2029
मीन	17/05/2029
कुंभ	14/06/2029
मक	12/07/2029
धनु	09/08/2029
वृश्चि	06/09/2029
तुला	04/10/2029
कन्या	01/11/2029
सिंह	29/11/2029
कर्क	26/12/2029

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	98%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	95%	सन्तति सुख, भाग्योदय, सुख
पन्ना	बुध	88%	सन्तति सुख, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	78%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
मोती	चंद्र	53%	स्वास्थ्य, कम खर्च
गोमेद	राहु	50%	कम खर्च, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	25%	शत्रु व रोग, सन्तति कष्ट, दुर्घटना
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
लहसुनिया	केतु	0%	शत्रु व रोग

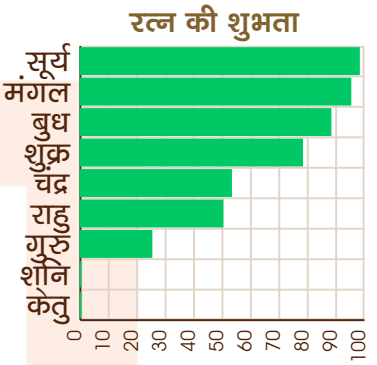

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	10/11/1966	86%	31%	100%	88%	25%	84%	0%	25%	22%
शुक्र	10/11/1986	86%	31%	95%	94%	25%	91%	0%	56%	9%
सूर्य	09/11/1992	100%	59%	100%	88%	38%	66%	0%	25%	0%
चंद्र	10/11/2002	100%	66%	95%	94%	25%	78%	0%	25%	0%
मंगल	10/11/2009	100%	59%	100%	75%	38%	78%	0%	25%	9%
राहु	10/11/2027	86%	31%	83%	88%	25%	84%	0%	62%	0%
गुरु	10/11/2043	100%	59%	100%	75%	50%	66%	0%	50%	0%
शनि	10/11/2062	86%	31%	83%	94%	25%	84%	2%	56%	0%
बुध	10/11/2079	100%	31%	95%	100%	25%	84%	0%	50%	0%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, मूंगा, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना व हीरा रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मोती एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

नीलम व लहसुनिया रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों

का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते है। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यो को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको चंचलता देने के साथ-साथ आपको बुद्धिमता देगा। यह रत्न आपको निर्णय लेने की योग्यता और विवेक क्षमता देगा। मूंगा रत्न के शुभ प्रभाव से आपकी

बुद्धि सहज होगी। आपको तकनीकी विषयों में शैक्षिक योग्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर होंगे। मंगल रत्न मूंगे की शुभता से आप शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर सफलता पा सकते है। मूंगा रत्न आपको उत्साही और ऊर्जा शक्ति से युक्त बनाये रखेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते है। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते है। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त, कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। रत्न की शुभता से वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी बनेंगे। यह रत्न आपको सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतोषी बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करेंगे। यह रत्न आपको अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव आपको लोभ भावना से बचायेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके कुटुंम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेश का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको कविताओं, ललितकलाओं और लेखन में गहरी रुचि देगा। संगत, कला और सौंदर्य सम्पन्न और सद्‌गुणी बनाएगा। आप आस्तिक और उदार व्यक्ति बनेंगे। हीरे रत्न प्रभाव से आप विद्वान, प्रतिभाशाली और अच्छे वक्ता सिद्ध होंगे। इस रत्न की शुभता से आप राजनीतिज्ञ मंत्री या न्यायाधीस भी हो सकते हैं। साथ ही यह रत्न वाहनों का सुख, उत्तम व विश्वसनीय मित्र देगा। संतान सुख के पक्ष से भी यह रत्न शुभदायक रहेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। अतः आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते है। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६

मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र लग्नेश सूर्य के मित्र है। चंद्र की शुभता प्राप्ति के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न आपकी व्यय संबंधी चिन्ताओं का अंत कर सकता है। मोती रत्न को धारण कर आप अपनी व्यावसायिक कार्यों की परेशानियों में कमी कर सकते है। मोती रत्न आपके मानसिक सुखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हानियों से बचाव करने में आप सफल हो सकते है। विदेश प्रवास के लिए भी इस रत्न को आप धारण कर सकते है। साथ ही यह रत्न आपको ऋणों से मुक्ति प्राप्त कर अस्पताल, जेल, कारावास इत्यादि से बच सकते है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। आप राहु ग्रह का गोमेद रत्न धारण करें। रत्न धारण कर आप उदारवादी, महत्वाकांक्षी और उच्च आदर्श वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप परिश्रम के दम पर सुखी रहेंगे। गोमेद रत्न धारण करने से आपके लिए आध्यात्मिक ज्ञान पाना एक सहज कार्य होगा। आपकी रुचि वेदों और वेदांतों में होगी और आप साधु स्वभाव वाले व्यक्ति बनेंगे। राहु प्रभाव आपके भाग्य में वृद्धि कर आपकी आय प्राप्ति के भरपूर अवसर देगा। इसके अलावा रत्न धारण के बाद आप विवेकहीनता, छल-कपट, पापपूर्ण विचारों, प्रपंच और नीचकर्म से बचेंगे।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते है। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टम भाव के स्वामी गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप विदयाभिमानी हो सकते है। पुखराज रत्न आपमें विनम्रता भाव की कमी ला सकता है। आप प्रतिकूल बुद्धि के स्वामी हो सकते है। यह रत्न आपके शत्रुओं में वृद्धि कर रहा है। रत्न प्रभाव से आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। पुखराज रत्न आपके पिता को ऋणी कर सकता है। सरकारी नौकरी प्राप्ति में यह रत्न परेशानियां दे सकता है। नीच संगति में रहना पड़ सकता है। यह रत्न आपमें आलस्य भाव को बढ़ाएगा। रत्न धारण के बाद आपको मधुमेह रोग से बचना होगा।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम पहनने से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति को कमजोर कर सकता है। आपकी कम भूःख की परेशानी हो सकती है। यह रत्न आपको शत्रुओं से भयभीत रख सकता है। आप प्रतिवादियों से भय खा सकते है। बंधु-बांधवों का सुख आपको समय पर न मिल पाए। रत्न प्रभाव आपमें अहंकार भाव ला सकता है। यश, संपत्ति के अधिकारों में कमी हो सकती है। विषय वासनाओं में आप अधिक रत हो सकते है। गुणीजनों का अनजाने में आपके द्वारा अनादर हो सकता है। नीलम रत्न धारण से आपके ऋण भुगतान मानसिक चिंता का कारण बन सकते है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छ्ठें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आपके रोग ठीक होने में समय अधिक ले सकते है। माता से मतभेद की स्थिति यह रत्न बना सकता है। नैनिहाल पक्ष से आदर सम्मान की प्राप्ति कम हो सकती है। यह रत्न आपका स्वभाव झगडालू बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप फिजूलखची के आदी हो सकते है। आपको विवादों में सफलता पाने में कुछ अधिक समय लग सकता है। भूत-प्रेत जैसी बाधाओं से आपको कष्ट मिल सकते है। दांत का रोग अथवा होंठों से संबंधित कोई परेशानी हो सकती है। लहसुनिया रत्न रोगों को प्रभावी करेगा। ऋणों को बढ़ाएगा तथा शत्रुओं से कष्ट दे सकता है।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि छठे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

दशानुसार रत्न विचार

राहु
(10/11/2009 - 10/11/2027)

राहु की दशा में आपका पन्ना, माणिक्य, हीरा व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(10/11/2027 - 10/11/2043)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मोती, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(10/11/2043 - 10/11/2062)

शनि की दशा में आपका पन्ना, माणिक्य, हीरा व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(10/11/2062 - 10/11/2079)

बुध की दशा में आपका माणिक्य, पन्ना, मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

केतु - 10/11/1966

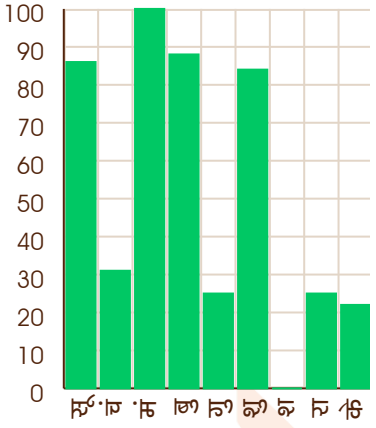

शुक्र - 10/11/1986

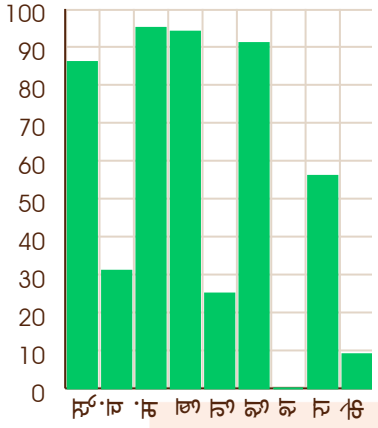

सूर्य - 09/11/1992

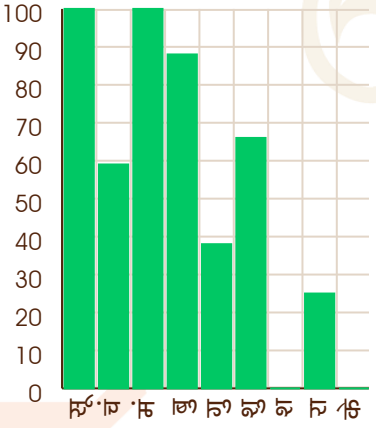

चन्द्र - 10/11/2002

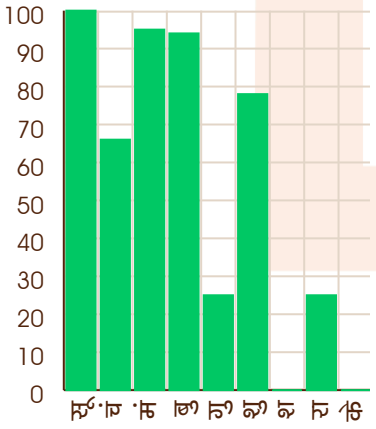

मंगल - 10/11/2009

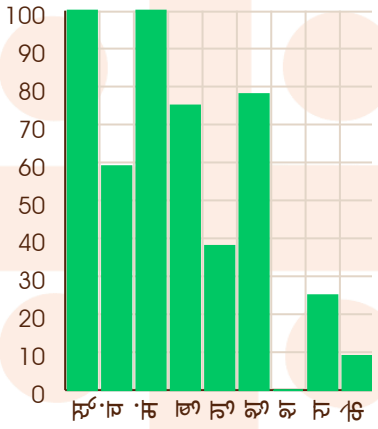

राहु - 10/11/2027

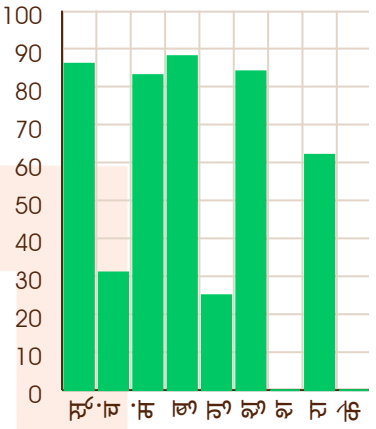

गुरु - 10/11/2043

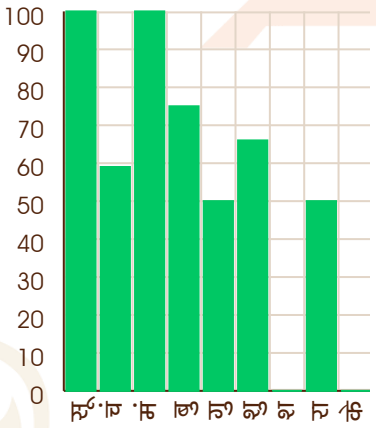

शनि - 10/11/2062

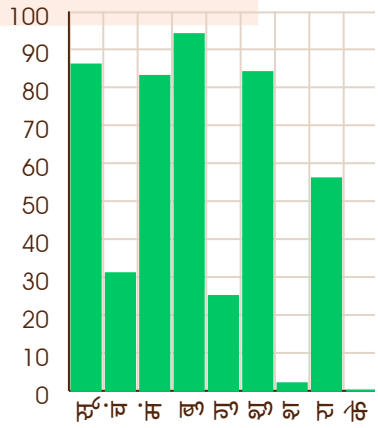

बुध - 10/11/2079

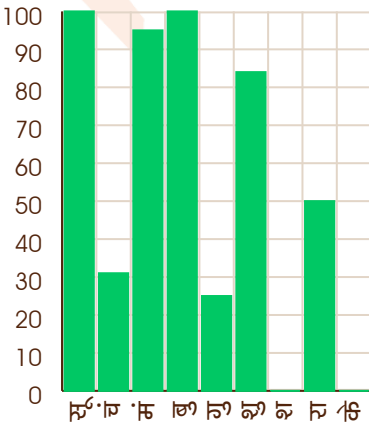

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभ रत्न

ढठवसकझढथ्वदजझढस्मवच्सउभ्पदकप01ज्ञ010ध्झ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढध थ्वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ऊँ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा हैं।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपतिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता हैं।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं,

अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृतियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते है। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 5, 7, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/04/1966-03/11/1966	20/12/1966-17/06/1968	17/06/1968-07/03/1969
साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक के जीवन में मनोभिलाषित कार्य प्रायः पूरा नहीं होता है। यदि कार्य सिद्ध भी होता है तो थोड़ा बिलम्ब से होता है। जातक जन्म स्थान व देश से दूर चला जाता है। गुप्त शत्रुओं से जातक थोड़ा बहुत भयाक्रान्त रहता है। वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े में जातक को प्रायः हार का सामना करना पड़ता है तथा न्यायालय से भी थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और समय-समय पर बदनामी का भय होता रहता है।

इस योग के कारण जातक का जीवन रहस्यमय रहता है तथा मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग प्रायः परेशान रहता है। कोई न कोई रोग व्याधि समय-समय पर परेशान करता रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। आमदनी से विशेष खर्च रहता है। परिणामस्वरूप जातक को आर्थिक विपन्नता लग जाती है। जातक बहुत कर्जदार हो जाते हैं और कर्जा उतारने हेतु किये गए प्रयासों में आंशिक रूप में असफलता मिलती है। जीवन में प्रायः अनेकों बार संघर्ष करना पड़ता है। जातक को शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है। सामाजिक मान सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मृत्यु के उपरान्त विशेष रूप से ख्याति (प्रसिद्धि) मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- शुक्र, बुध और राहु 2, 5, 9 या 12 वें भाव में स्थित है।

आपकी कुडली में बुध, गुरु, शुक्र और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला

पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 26 है। दो और छः के योग से आपका मूलांक आठ होता है। मूलांक 8 का स्वामी शनि ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा अंक छः का शुक्र है। अतः आपके जीवन में अंक दो, छः एवं आठ के स्वामी ग्रह चन्द्र, शुक्र एवं शनि का विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होगा।

मूलांक 8 के स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से आपकी उन्नति धीरे-धीरे होगी। आपके प्रत्येक कार्य में रुकावटें अवश्य आयेंगी। लेकिन आप इनसे बिना विचलित हुए अपनी सफलता का मार्ग स्वयं के कठिन परिश्रम तथा बुद्धि विवेक एवं ज्ञान के द्वारा प्राप्त करेंगे। आलस्य आपके अन्दर अवगुण के रूप में रहेगा। इसी कारण कई बार आप सफलता प्राप्त करते-करते ऐसी चूक कर देंगे जिसका बाद में पछतावा होगा। शनिग्रह के प्रभाव से आप अपने जीवन मे कई महत्वपूर्ण एवं स्थायी उपलब्धियां अर्जित करेंगे। जिससे आपका सामाजिक स्तर ऊँचा होगा और आपको समाज में नाम, यश तथा कीर्ति प्राप्त होगी। आपके कार्य करने का ढ़ंग कुछ इस प्रकार का रहेगा कि आप अपने विरोधी, आलोचक स्वयं तैयार करेंगे।

आप दिखावा पसन्द नहीं करेंगे। इससे आपको रूखा, शुष्क एवं कठोर हृदय व्यक्ति समझा जायेगा। जबकि आप अन्दर से भावुक एवं दयालु हृदय के होंगे। आपकी रुचि अपने काम तक ही सीमित रहेगी एवं कठिन से कठिन कार्य को भी आप अंजाम देने की क्षमता रखेंगे। इससे आपके सहयोगी आपके आलोचक बन जायेंगे। आप श्रमशील, त्यागी व्यक्ति के रूप में जाने जायेंगे एवं आपकी प्रगति में आने वाली रुकावटों को आप आपनी इच्छा शक्ति के बलबूते दूर करने में सफल रहेंगे।

अंक दो का स्वामी चन्द्र आपको विभिन्न क्षेत्रों में असफलता देगा लेकिन अंक छः का स्वामी शुक्र आपके अन्दर कलात्मक भाव की वृद्धि करेगा जो कि आपकी कार्य शैली में दृष्टिगोचर होगा।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले स्पष्ट वक्ता होंगे। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे। आपका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होगा अर्थात आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार धारा पर निर्भीक चलेंगे। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी। एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगे। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगे। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे

ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगे, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका मूलांक 8 है तथा आपका भाग्यांक 1 है। मूलांक 8 का स्वामी शनि है तथा भाग्यांक 1 का स्वामी सूर्य है। मूलांक 8 और भाग्यांक 1 के बीच मित्र संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के अच्छे फल प्राप्त होंगे। मूलांक एवं भाग्यांक के प्रभाव से आप अपने रोजगार-व्यापार में अपनी मेहनत के द्वारा उन्नति प्राप्त करेंगे। भाग्यांक स्वामी सूर्य प्रकाश एवं प्रतिभा का दाता है तथा शनि प्रारंभिक श्रम एवं संघर्ष के पश्चात स्थिर सफलता देता है। सूर्य के प्रभाव से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आप प्रतिभासंपन्न एवं शीघ्र सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगे। जीवन में आपको उचित मात्रा में धन-संपदा एवं वैभव प्राप्त होंगे। वहीं शनि प्रभाव से आपके बनते हुए कार्यों में अचानक रुकावटें आएंगी, जिनको आप अपनी कड़ी मेहनत एवं बुद्धि-विवेक के द्वारा पार करने में सफल होंगे। शनि अवरोध, आलस्य देता है एवं कार्यों को देरी से संपंन करता है। लेकिन ऐसे सभी कार्य दीर्घ काल तक स्थायी रहते हैं, जिनका आपको सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर पूर्ण प्रभाव प्राप्त होगा। जीवन के प्रारंभिक काल की अपेक्षा मध्य अवस्था से आपकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सुदृढ़ होती चली जाएगी।

आपका भाग्योदय 28 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 37 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 46 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल तथा अगस्त माह विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय सभी शुभ रहें।

मूलांक 8 एवं भाग्यांक 1 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य दिनांक 23 दिसंबर से 19 फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता है तथा 14 जनवरी से 13 मार्च तक, भारतीय मत से, सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है जो शनि की अपनी राशियां है तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहेंगे।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह में पड़ने वाले शनिवार, रविवार एवं सोमवार आपके लिए अनुकूल दिवस हैं। आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, विशिष्ट अधिकारी से संबंध आदि अपनी शुभ तारीखों में पड़ने वाले उपर्युक्त दिवसों में ही प्रारंभ करेंगे तो आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार सम्बंधी कार्य, पत्र या दस्तावेज लिखने हेतु किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। अतः आप कोशिश करें कि कोई भी महत्वपूर्ण कार्य उपर्युक्त तारीखों में ही संपन्न हो।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 3, 6, 12, 15, 21, 24 एवं 30, आपके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे। इन तारीखों में आप कोई भी नया कार्य, व्यापार, पत्र लेखन एवं उच्च तथा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 14 जनवरी से 13 मार्च तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर के बीच हुआ हो, ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे। इनके सहयोग से आपको अच्छी उपलब्धियां प्राप्त होंगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आप अपने रोजगार, व्यवसाय या प्रेम, विवाह संबंध इत्यादि में ऐसी स्त्री का चुनाव करें, जिसका मूलांक 1, 4, 8 हो तथा उसका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीख को हुआ हो। ऐसी महिलाएं आपके रोजगार, व्यवसाय तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेजी रंग शुभ होंगे। अपने घर के दरवाजे, पर्दे, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप करें। यदि आपका स्वास्थ्य ठीक न हो तब आप इन्हीं रंगों के कपड़े पहनें एवं रुमाल हर समय अपने पास रखें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य करते समय भी इन्हीं रंगों के वस्त्रों को धारण करना आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आप अपने लिए कॉम्पलेक्स, फ्लैट या मकान का चुनाव पश्चिम दिशा में करें। आपका मूलांक 8 होने से आपके लिए पश्चिम दिशा उपयुक्त रहेगी तथा भवन क्रमांक का योग 8 हो तो अच्छा रहेगा। अतः आप इस दिशा में फ्लैट या मकान खरीद सकते हैं। आप चाहें तो शहर में पश्चिम दिशा, या भवन के पश्चिम क्षेत्र में निवास करें ऐसा करना आपके लिए लाभकारी रहेगा तथा अपने आवश्यक कार्य भी इसी दिशा की ओर बैठ कर संपन्न करेंगे तो लाभ होगा।

शुभ वाहन नं

आपके मूलांक 8 के 1 और 4 मित्र हैं। अतः आप जब भी कोई नया वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण का योग इन्हीं अंकों में से एक होना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उदाहरणार्थ वाहन पंजीकरण क्रमांक 5237 = 8। आप यदि वाहन में यात्रा करते हैं तब भी आपके लिए शुभ अंक 1,4,8 ही रहेंगे और यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं तब उसके लिए आपका कमरा नंबर 107 = 8 का चयन करना ही उचित रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको वायु रोग, वात रोग, शारीरिक क्षीणता, अंध रोग, हृदय की कमजोरी, रक्त की कमी, मलबद्धता, कब्जियत, गठिया, रक्तचाप, सिर की पीड़ा, कुष्ठ रोग, मूत्र के रोग, गंजापन तथा कान-नाक में पीड़ा होगी। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शनि की पूजा एवं आराधना करनी चाहिए।

व्यवसाय

कसरत, खेल-कूद, कूद-फांद, पुलिस और सैन्य विभाग, ठेकेदारी, टीन-चद्दर आदि का कार्य, कुलीगिरी, लघु उद्योग, वकालत, ज्योतिष कार्य, वैज्ञानिक कार्य, मुर्गी पालन, बागबानी, कोयला और लकड़ी का व्यवसाय, घड़ीसाज, न्याय वेत्ता, नेतृत्व, नीति निर्धारक, धर्म-कर्म, यज्ञादि कर्त्ता, अध्यापन, संगीतज्ञ आदि कार्य।

व्रतोपवास

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए नीलम सबसे अधिक लाभकारी रहेगा। इसके न मिलने पर आप बैंकॉक नीलम, लाजवर्त, काला नीली इत्यादि धारण कर सकते हैं। इसे आप शनि के दिन, शुक्ल पक्ष में, चौघड़िया मुहूर्त में, त्रिधातु या चांदी की अंगूठी में सवा तीन से सवा पांच रत्ती का नीलम बनवा कर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली की त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें। यह आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

अनुकूल देवता

आप शनि ग्रह की उपासना करें अथवा आपको बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा। आप नित्य रुद्राक्ष की माला पर बटुक भैरव के मंत्र का एक सौ आठ बार जप किया करें। इससे आपकी सभी समस्याएं, रोग इत्यादि दूर होंगे। बटुक भैरव का मंत्र इस प्रकार है- 'ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं'। यह इक्कीस अक्षर का मंत्र सर्वसिद्धिदाता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शनि के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शनि के गायत्री मंत्र का, प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शनि गायत्री मंत्र - ऊँ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शनि का ध्यान करें, मन में शनि की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शनि को अनुकूल बनाने हेतु शनि के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान दो सौ तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः दबर्चिन्द्रप्रप नमः।। जप संख्या 23000।।

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी विच्छु की जड़ ला कर, काले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या शीशे या लोहे के ताबीज में भर कर गले मे धारण करें। इससे शनि के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आप प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शनि के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शनि की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शनि के पदार्थ-तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शनि को अनुकूल बनाए रखने हेतु शनि यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चन्दन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में सिंह लग्नोदय काल में हुआ था। साथ ही कन्या नवमांश एवं धनु राशि के द्रेष्काण द्वारा एक शुभ आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप भारत स्थित शहरी क्षेत्र के निवासियों के समान जो कार्य काल बसों की प्रतीक्षा और दौड़-धूप कर अपने कार्य पर पहुंचते है। उस प्रकार की दिक्कतें का सामना आपको नहीं करना होगा। अर्थात् जन्म के शुभ लक्षण से यह प्रतीत हो रहा है कि आपको जन्म से ही वाहन सुख प्राप्त होगा।

आपको कही भी यात्रा क्रम में सार्वजनिक यातायात के लिए गाड़ी बस ट्रान्सपोर्ट आदि प्रकार की सुविधा हेतु बिना संघर्ष के ही आपकी यात्रा के पथ प्रशस्त होंगे। कही भी बस आदि से यात्रा हेतु कतार में लगकर अपने समय का अपव्यय नहीं करना पड़ेगा। आपको अपनी यात्रा हेतु अपने पास कार-बस आदि उपलब्ध होने का लाभ एवं आनन्द प्राप्त करने का वरदान प्राप्त है। वास्तविकता तो यह है कि आपको अपने स्वयं के पास वाहनों की सुविधा युक्त समर्थ होने का सौभाग्य प्राप्त है।

आपका जीवन उत्तम प्रकार के वाहन सुखों से युक्त, आरामदायक एवं आनन्द से परिपूर्ण रहेगा। आप अपार धन, सम्पति से युक्त कुशाग्र बुद्धि के विद्वान एवं अनेक कलाओं में प्रवीण होंगे। आप सर्वोत्तम प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करेंगे। आप निम्नरूपेण उच्च श्रेणी की सेवा एवं कर्म से संबंधित रहेंगे। जो आपके लिए उपयुक्त एवं लाभप्रद प्रमाणित होगा।

आप व्यक्तिगत रूप से सतत कठिन श्रम करने वाले, उपव्यवसाय की खोज में लगे रहने वाले, दृढ़निश्चयी एवं प्रभावशाली प्राणी होंगे। आप सदा-सर्वदा कार्य विन्दु को निर्धारित समय से पूर्व संपन्न करने के पहले ही अन्य कार्य को हस्तगत करने के इच्छुक रहेंगे तथा आप निश्चित रूप से अपने अनुबंध में सफलता प्राप्त करेंगे।

आप भ्रमणप्रिय हैं। आप अपना अधिक समय घर से बाहर अन्यत्र बिताएंगे। किसी प्रकार विवश होकर कुछ समय अपने प्रिय परिवार के लिए बचाकर उनके साथ बिताएंगे। आप अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य से सभी कार्यों को प्रसन्नतापूर्वक संपन्न कर लेंगे।

आपकी मित्र मण्डली बड़ी होगी। आपके मित्र आपको सहानुभूति पूर्वक मान-प्रतिष्ठा प्रदान करेंगे। आप अपने रास्ते से चलेंगे-वे मित्रगण आपका सहयोग करेंगे। मित्रगण आपका उच्चस्तरीय मूल्यांकन कर अपनी दिशा मोड़कर आपकी पंक्ति में खड़े होंगे अर्थात् आपको साथ देंगे।

आप मात्र अपने कर्म व्यवसाय से ही नहीं अच्छे लाभ प्राप्त करेंगे। आप तो सदैव भाग्यशाली समय अर्थात् मौके की तलाश में रहकर अपने भाग्य को दाव पर लगाकर लाभ प्राप्त करेंगे। इसका यह अर्थ नहीं कि आप सदैव ही जुआ खेलकर अपने भाग्योन्नति हेतु प्रयास करेंगे। परन्तु आप यदा-कदा पाशे फेंक कर आपने इस कर्म को लाभदायक प्रमाणित कर सकते हों।

आपकी महत्वपूर्ण आय प्रर्याप्त है, इसमें किसी भी प्रकार की दुर्भावना नहीं है। आप बहुत धन संचय करने में समर्थ नहीं हैं क्योंकि आप जन सामान्य की नजरों में यह प्रदर्शित करेंगे कि आप अपने परिवार को एक धनाढ्य व्यक्ति की तरह भरण पोषण करते हैं। आप सदैव अपनी आय का कुछ अंश अपने घर में व्यय करेंगे।

यद्यपि आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तथापि बाद में कतिपय रोगादि के प्रति आपको थोड़ी सतर्कता बरतना आवश्यक है। क्योंकि आपका कार्यक्रम व्यस्ततम रहता है तथा लम्बे समय तक कार्यरत रहेंगे।

आपकी यह कार्यतंत्रियाँ अधिक समय तक कार्यरत रहने के लिए सक्षम नहीं भी हो सकता है। फलस्वरूप आपके हृदय पर एवं रीढ़ की हड्डियों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। अतएव आपको इस व्यस्ततम कार्यक्रम का प्रतिकार कर शान्तिपूर्वक विश्राम ग्रहण करना चाहिए।

आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं जीवन पर अनुकूल प्रभाव हेतु पूर्णिमा का व्रत रखना अच्छा होगा। इससे आपको विभिन्न प्रकार का अति सहयोग प्राप्त होगा।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन रविवार, मंगलवार, और गुरुवार का दिन किसी भी बड़े कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उपयुक्त एवं ठीक है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके नये कार्य-कलाप के प्रारंभ करने हेतु अनुपयुक्त हैं। कृपया इन तीन दिनों को अव्यवहारणीय समझे। सोमवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए अनुकूल एवं प्रदोल्लित करने वाले अंक 1, 4, 5, 6 एवं 9 अंक है। परन्तु अंक 2, 7 एवं 8 अंक आपके लिए प्रतिकूल हैं।

आपके लिए अनुकूल रंग नारंगी, लाल एवं हरा रंग है। रंग नीला, सफेद एवं काला रंग आपके लिए प्रतिकूल रंग है।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक साहसी पराक्रमी एवं तेजस्वी होते हैं। उनमें आत्मविश्वास का भाव पूर्ण रूपेण विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से वे युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुखपूर्वक इसका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। धर्म के प्रति इनकी श्रद्धा रहती है तथा अन्य जनों के परोपकार संबंधी कार्य करने के लिए भी तत्पर रहते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैरसरकारी क्षेत्रों में ये किसी उच्च पद को प्राप्त करने में सफल होते है जिससे मानप्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि बनी रहती है। साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्य मान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप में निर्भीकता का भाव रहेगा तथा निर्भय होकर अपने सांसारिक कार्यकलापों को पूर्ण करेंगे तथा उनमें आपको वांछित सफलता प्राप्त होगी फलतः सुख संसाधनों तथा भौतिक उपकरणों से आप युक्त रहेंगे तथा इनका सुख पूर्वक उपभोग करेंगे।

आप में उदारता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव को प्रदर्शित करेंगे। पुरूषार्थ के द्वारा आपको जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफल होंगे एवं आपके शत्रु या प्रतिद्वंदी आपसे प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे। लेकिन आपकी प्रवृति अपने को अधिक श्रेष्ठ समझने की होगी। यदि आप इस प्रवृति का त्याग कर सकें तो समाज में आपको अतिरिक्त लोकप्रियता तथा प्रतिष्ठा अर्जित होगी।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। शारीरिक बल से आप पूर्ण रहेंगे तथा परिश्रम करने की अपूर्व क्षमता होगी फलतः उत्साह एवं परिश्रमपूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। तथा इनमें आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति होगी जिससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। राजनीति, सरकारी या व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगे तथा इनमें भी सम्मानित स्थान स्थापित करने में समर्थ होंगे।

आप स्वभाव से ही धैर्यशाली एवं गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को धैर्य एवं गम्भीरतापूर्वक सम्पन्न करेंगे। माता के प्रति आपके मन में पूर्ण सम्मान तथा सेवा का भाव रहेगा तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। परोपकार की भावना से भी आप युक्त होंगे तथा अवसरानूकूल परोपकार संबंधी कार्यों में तन मन धन से अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही सत्संग आदि में भी आपकी रूचि होगी। आपकी प्रवृति भ्रमणप्रिय

होगी अतः यात्राएं करना या घूमना आपको रूचिकर लगेगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा आपात्काल के लिए आपके पास कुछ न कुछ अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। फलतः समय समय पर आप अपने घर में अन्य जनों को आंमत्रित करते रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन शांत तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा परिवार में समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही परस्पर सेवा तथा सहयोग का भाव भी विद्य मान रहेगा। लेकिन पैतृक सम्पति की प्राप्ति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा जो कुछ अर्जित करेंगे अपने परिश्रम एवं पराक्रम से करेंगे।

यह स्थान वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा इसका स्वामी बुध वाणी का प्रतिनिधि है अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में धुरता रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही अपने विचारों को भी आप सरल एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सफल होंगे। इसके साथ ही आप अपनी विद्वता से धनार्जन करेंगे तथा स्वर्ण आदि बहुमूल्य धातुओं को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप धन वैभव से युक्त होकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप एक प्रसन्नचित व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र होगी। साथ ही दीर्घकाल तक किसी वस्तु को याद रख सकेंगे तथा शीघ्र ही ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा इनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आप भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख सुविधाएं एवं आधुनिक उपकरणों से युक्त करने में हमेशा तत्पर रहेंगे परन्तु यदि वे आपकी अपेक्षा अनुसार व्यवहार नहीं करते है या कोई कार्य नहीं करते हैं तो आप शीघ्र उनपर उत्तेजित हो जाएंगे परन्तु पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए अपने पर नियंत्रण रखने में भी सफल रहेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा उत्तेजना में कभी भी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगे। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगे तथा समाज में आदरणीय भी समझें जाएंगे। अपने सुख एवं वैभव पूर्ण जीवन के लिए आपको संचार संबन्धी उपकरण यथा दूर भाष दूरदर्शन या अन्य वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा आनन्द पूर्वक आप इनका उपभोग भी करेंगे। आप रोमांटिक संगीत के प्रिय रहेंगे तथा समय समय पर संगीत से अपना तथा अन्य जनों का मनोरंजन करेंगे। आपकी आनन्ददायक यात्राएं होती रहेंगी तथा दूर समीप की यात्राओं से इच्छित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रा के मध्य नवीन मित्रों को बनाने में सफल रहेंगे तथा संबन्धियों से भी आप सहयोग प्राप्त करेंगे। आप सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे साथ ही अध्ययन में भी रुचिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचलता से युक्त रहेगा तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। परन्तु नौकरों तथा सेवकों की बहुलता रहेगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगे।

आप एक पराक्रमी एवं भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। चतुर्थेश मंगल के प्रभाव से आपको जमीन जायदाद संबंधी सम्पत्ति से शीघ्र एवं उचित लाभ के योग बनते है। अतः यदि आप इन क्षेत्रों में पूंजी निवेश करें तो प्रचुरमात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ हो सकते है लेकिन विवादित सम्पत्ति का आपको कभी भी क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

जीवन में आप उत्तम गृह से युक्त होंगे तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा। यह आधुनिक उपकरणों एवं सजावट की वस्तुओं से सुसज्जित रहेगा। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे लेकिन संबंधों में औपचारिक्ता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था के बाद आप स्वयं के वाहन को आर्जित करके इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों पर उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं सबका वह अपनी ओर से उचित देखभाल करेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा समयानुसार उनसे आप वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग से लाभान्वित होते रहेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप स्नातक परीक्षा सम्मानित रूप से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह की वृद्धि होगी तथा पूर्ण उत्साह के साथ आप भविष्य में उन्नति के लिए प्रयत्नशील होंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा में भी डिग्री अर्जित कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी वृहस्पति है बुध भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके समस्त कार्य कलापों में बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी साथ ही आप शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने में अत्यन्त चतुर होंगे तथा गंभीर से गंभीर समस्या का सुगमता पूर्वक समाधान करेंगें। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा यथोचित मान- सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा होगी तथा परिश्रम पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। आधुनिक विज्ञान, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र का भी आपको ज्ञान होगा एवं इन क्षेत्रों में आप कोई विशिष्ट शोध कार्य या सिद्धांत भी प्रतिपादित कर सकते है। इससे आप एक विद्वान के रूप में सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे तथा नित्य ज्ञानार्जन में रूचिशील होंगे।

पंचमभाव में बुध के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी तथा मनोरंजन के साथ साथ इसमें भावात्मक आकर्षण भी विद्यमान होगा। आपका प्रेम मर्यादित एवं आदर्शवादी होगा तथा इसमें नैतिकता को सर्वोपरि रखेंगे। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

बुध की पंचमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्रप्ति होगी तथा इसमें कन्या सन्तति अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, गुणवान एवं योग्य होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में तत्पर होंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास का भाव रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के माध्यम से करवालेंगे। आप एक भाग्यवान व्यक्ति होंगे तथा वृद्धावस्था में बच्चे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे जिससे आपकी वृद्धावस्था सुख पूर्वक व्यतीत होगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति योग्य एवं प्रतिभाशील होगी तथा प्रारंभ से ही उनको मनोवांछित सफलताएं प्राप्त होगी। आप भी उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबंध करेंगे तथा यत्नपूर्वक उन्हें आधुनिक परिवेश प्रदान करेंगे। इससे वे भविष्य में वांछित उन्नति के पथ पर अग्रसर होंगे। वे मृदुस्वभाव एवं व्यवहार कुशल भी होंगे तथा अपने द्बुद्धिमता पूर्ण कार्य कलापों से अन्य समाजिक जनों को प्रभावित एवं प्रसन्न रखने में समर्थ होंगे। इससे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा स्वयं भी संतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से कार्य क्षेत्र में आपको मजबूत विपक्ष का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रहें हो या अपने व्यवसाय के कार्य में किसी साझेदार का चुनाव कर रहें हो तो इससे साझेदार या जिसके लिए कार्य कर रहे है शत्रुता का भाव आरंभ हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक व्यक्ति है तथा यत्नपूर्वक शत्रुता के भाव की उपेक्षा करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु आपके कार्य कलापों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अन्य जन प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे तथा इसी सन्दर्भ में कोई मुकद्दमेबाजी प्रारंभ हो सकती है। आप अपने धैर्य शान्ति तथा प्रतिभा से अपने शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही कभी भी शत्रुपक्ष की गतिविधियों से विचलित नहीं होंगे।

आपकी उचित सेवा करने के लिए आपके पास अच्छे नौकर होंगे लेकिन अधिक होने पर उनमें से कोई एक यदा कदा आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः सेवकों का चुनाव करते समय सावधान तथा सतर्क रहें। आपके संबन्धी कार्य क्षेत्र में आपके लिए हानि कारक रहेंगे तथा वास्तव में वे ही आपके मुख्य शत्रु होंगे अतः सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करें। आप सीमित एवं आवश्यकता के अनुसार ही व्यय करेंगे। अतः ऋण आदि की आवश्यकता के अवसर बहुत कम आएंगे लेकिन युवास्था में यदा कदा ऐसी स्थिति आएगी परन्तु उसको संभालने में आप समर्थ रहेंगे। आपके मामा मामियों के प्रति पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक या अन्य सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे। साथ ही मामियों का मामाओं पर प्रभाव रहेगा।

आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे यद्यपि आप मुकद्दमे बाजी की उपेक्षा करेंगे तथा कोर्ट से बाहर ही उसका समाधान चाहेंगे। यदि ऐसा नहीं होता तो तभी आप कोर्ट में जाएंगे। इस प्रकार स्वपराक्रम एवं प्रभाव से शत्रु एवं विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करके अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया कुम्भराशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव कुल में श्रेष्ठ पित प्रकृति व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है तथा वह पराक्रमी तेजस्वी एवं शिक्षित होता है एवं स्वाभिमान की भावना भी मन में विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की स्वाभिमानी महिला होंगी तथा सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता से सम्पन्न करेंगी। कुम्भ राशि के प्रभाव से वह कुल में श्रेष्ठ होंगी तथा सेवकों से भी युक्त रहेंगी परन्तु उनकी प्रवृति अधिक व्ययशील होगी एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहेगी। लेकिन कर्तव्य परायणता का भाव विद्यमान रहेगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर रहेंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण किंचित लालिमा लिए गौरवर्ण होगा तथा कद ऊंचा होगा साथ ही शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा एवं शरीर के सभी अंग प्रत्यंग सुडौल तथा पुष्ट रहेंगे लेकिन वायुतत्व कुम्भ राशि के प्रभाव से शरीर में पतलापन रहेगा। इससे उनका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा। सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वे सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कला एवं भौतिक वस्तुओं के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में शनि की राशि के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब की संभावना रहेगी। आपका विवाह प्रेम विवाह होगा या स्वयं ही कन्या का चुनाव करेंगे। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा सहयोग का भाव विद्यमान होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सहमति से सम्पन्न करेंगे। परन्तु दोनों के स्वभाव में तेजस्विता के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी जिससे अल्प समय के लिए संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वे मध्यम होंगे। सास ससुर से भी आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं होंगे एवं एक दूसरे के प्रति यथोचित सम्मान एवं स्नेह के भाव की न्यूनता रहेगी। अतः आपस में मेल मिलाप भी कम ही होगा।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में वह उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनकी तेजस्वी प्रकृति से अप्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान नहीं देंगे जिससे परिवार में अशांति रहेगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो के लिए सामान्यतया साझेदारी अनुकूल होगी। लेकिन साझेदारी को सोच समझकर करना चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा ज्योतिष या तंत्र मंत्र का ज्ञान भी रहेगा। इस क्षेत्र में आपको इच्छित मान सम्मान एवं सफलता भी प्राप्त होगी तथा समय समय पर आप इससे लाभान्वित होते रहेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति की अवश्य प्राप्ति होगी या किसी वृद्ध संबन्धी की जमीन जायदाद भी आपको मिल सकती है। आप सर्वप्रकार से खुशहाल रहेंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामी बनेंगे। साथ ही आपके एक से अधिक आवास स्थल हो सकते हैं। शादी से आपको लाभ होगा तथा आपकी पत्नी किसी धनाढ्य परिवार से सम्बन्धित होगी अथवा वे किसी कार्य क्षेत्र में रत हो सकती है। साथ ही आपके ससुराल वाले आपको अपेक्षा से अधिक धन एवं अन्य कीमती वस्तुएं प्रदान करेंगे ।

बीमा आदि करवाने से भी आपको समय समय पर लाभ हो सकता है लेकिन दीर्घावधि की अपेक्षा यदि आप लधुअवधि के बीमे करवाएं तो इसमें आपको शीघ्र एवं प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा सम्बधित वस्तु या प्राणी की पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि के द्वारा कोई हानि नहीं है यद्यपि जीवन में एक बार चोर अवश्य आपके यहां आएंगे लेकिन वे कोई कीमती वस्तु को चुराने में असफल रहेंगे क्योंकि आप पूर्व ही सतर्क हो जाएंगे तथा बहुमूल्य वस्तुओं की विशेष सुरक्षा करेंगे। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगे तथा धार्मिक एवं पारिवारिक रीति रिवाजों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप प्रतिदिन भगवान का ध्यान अवश्य करेंगे परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी । क्योंकि आपके विचार से यह पद्धति कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बनाई गई है। धार्मिक कार्यों पर व्यय करने में भी आप अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगे जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि या योगादि के भी इच्छुक रहेंगे तथा तंत्र मंत्र में भी यदा कदा रूचि का प्रदर्शन करेंगे। तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि करने में भी आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। दूसरे शब्दों में आप भीड़ से तथा पूजा आदि संस्कारों से घबराहट की अनुभूति करते है। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा। साथ ही धार्मिक आध्यात्मिक, तंत्र मंत्र, ज्योतिष तथा इनसे सम्बन्धित शास्त्रों का अध्ययन करने में रूचिशील रहेंगे।

आप में अन्तर्प्रज्ञा शक्ति रहेगी तथा भविष्यवाणी आदि करने में भी आप समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा इससे समाज में आपको आदर तथा ख्याति प्राप्त होगी । यदि आप कहीं विकट परिस्थितियों में फंसेंगे तो भाग्य बल से इससे सुरक्षित हो जाएंगे। लम्बी दूरी की यात्राओं से आप लाभ तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करेंगे। पौत्रों से आपको खुशी एवं सुख प्राप्त होगा साथ ही समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आपके पूर्वजन्म के पुण्य इस जन्म में आपको खुशहाली प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। वृष राशि भूमितत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा जलतत्व ग्रह के प्रभाव से इसमें आप सामान्यतया परिवर्तन करते रहेंगे तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका में आपके लिए कला, संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स विभाग, न्याय विभाग, न्यायधीश, वकील, सचिव, सलाहकार, फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में कार्य करना शुभ एवं अनुकूल होगा। इन क्षेत्रों में यदि आप अपनी आजीविका प्रारंभ करते है तो आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः आप को उपरोक्त विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चांदी, सोना, हीरा आदि रत्न एवं धातु का कार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, सौन्दर्य प्रसाधन संबंधी कार्य, सफेद वस्त्रों या रेशमी वस्त्रों का व्यापार एवं आयात निर्यात से भी लाभ होगा। साथ ही कीमती शराब, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरण एवं फिल्म निर्माण का कार्य भी शुभ एवं अनुकूल रहेगा। अतः व्यापार से वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आपको इन्हीं वस्तुओं या क्षेत्रों में व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने में सफल होंगे। साथ ही सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं एवं क्लब आदि में भी आप कोई सम्मानीय पदाधिकारी हो सकते है। इससे आपके सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप सामाजिक एवं राज्यस्तर पर कोई सम्मान भी प्राप्त कर सकते है।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा सामाजिक जन उनसे पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे। साथ ही वह बुद्धिमान शिक्षित एवं मनोरंजक प्रवृति के भी व्यक्ति होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा अपनत्व का भाव होगा एवं शिक्षा दीक्षा का वे उचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र में भी पिता से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं उनके प्रभाव से भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आप दोनों के परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी होगी। इसके अतिरिक्त पिता के आप आज्ञाकारी रहेंगे तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म के समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आप महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन हमेशा उमंगो से युक्त रहेगा तथा आपकी मानसिक इच्छाएं समय समय पर आपके परिश्रम तथा योग्यता से पूर्ण होती रहेंगी। आप एक चतुर व्यक्ति होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर हमेशा अग्रसर रहेंगे। आप सक्रिय व्यक्ति होंगे तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही लेखन कमीशन संवाददाता, ज्यौतिष तथा व्यापार से इच्छित धन लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्हीं क्षेत्रों में आपको लाभ होगा। आपका बड़ी बहनों के प्रति पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। साथ ही भाइयों से भी नैतिक सहयोग मिलता रहेगा।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली के आप सम्मानीय सदस्य समझे जाएंगे तथा आपके सभी मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे। मित्रों के बीच में आपको नवीन आनन्द की प्राप्ति होगी तथा आपस में विषय विशेष के प्रति भी तर्क होंगे जिससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। साथ ही सामाजिक जनों के विषय में भी आप चिन्तित रहेंगे तथा उनके परोपकार संबन्धी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे एवं मानवता के आदर्श गुणों से भी युक्त रहेंगे। आप जिस क्षेत्र में रहते है वहां के लोगों तथा पड़ोसियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा सभी लोगों के मध्य आप की प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी। आपको समय समय पर विशेष सम्मान भी मिलते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगे तथा उनसे संबंध स्थापित करके आनन्द की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आप सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया भाग्यशाली होंगे तथा आर्थिक दृष्टि से आपके कई स्रोत होंगे जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आप किसी संस्था या सरकार में किसी उच्च पद को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपको महत्वपूर्ण कार्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा कम महत्वपूर्ण कार्यों को अपने सहायकों के लिए छोड़ देना चाहिए जिससे वे अपने आपको आपसे उपेक्षित न समझें।

आपका व्यय अधिक मात्रा में रहेगा फलतः अवस्था के साथ साथ यदा कदा आर्थिक परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं आप एक स्वच्छंद प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगे तथा बिना अपनी स्थिति देखे हुए कई बार अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएंगे। इससे आपके मान सम्मान में वृद्धि तो अवश्य होगी लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः आपको इस आदत पर नियंत्रण रखना चाहिए। अपने मान सम्मान की रक्षा के लिए आप कभी कभी अनावश्यक व्यय करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इससे भी आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी अतः आपको ऐसे व्ययों पर अंकुश रखना चाहिए। युवावस्था में आपको कई प्रकार के उतार चढ़ाव देखने पड़ेगें लेकिन व्यय आप जो भी तथा जहां भी करेंगे वह अच्छे कार्य के लिए ही होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी। साथ ही इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या विभागीय के कार्य से होंगी साथ ही विदेश भ्रमण के भी योग बनते है तथा काफी समय तक आपका प्रवास हो सकता है। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आप मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं अतः आपकी जन्मराशि सिंह तथा राशिस्वामी सूर्य होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, वर्ग मूषक, योनि मूषक, नाड़ी अन्त्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "मि" य "मी" से प्रारम्भ होगा यथा- मिथिलेश, मीर सिंह।

आप का जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ है। इसके द्वितीय चरण में पिता के लिए अरिष्ट होता है, अतः जन्म के समय ही इस नक्षत्र की शास्त्रोक्त विधि से शान्ति करवा लेनी चाहिए इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करने चाहिए तथा 28वें दिन जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करके पूर्ण शान्ति करनी चाहिए। यह कार्य किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाना चाहिए। ऐसा करने से इसका अशुभ दोष नष्ट हो जाता है तथा सम्बन्धित व्यक्ति सुखपूर्वक जीवनयापन करता है।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप अपने जीवन में नौकर चाकरों से युक्त होकर धनवान होंगे। आपके पास धनाभाव कभी नहीं रहेगा तथा समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों तथा वैभव एवं ऐश्वर्य का आप आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। देवताओं तथा माता पिता के प्रति आपका निश्छल सेवा भाव रहेगा तथा यत्नपूर्वक इनकी सेवा में तत्पर रहेंगे। इसके साथ ही आप एक महान उद्यमी तथा परिश्रमी पुरूष भी रहेंगे।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरूष होता है।

अपने बुजुर्गों के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा तथा सेवाभाव विद्यमान रहेगा। साहस से भरे कार्यों को करने में आपका चित्त प्रसन्नता की अनुभूति करेगा फलतः आप सेना या पुलिस में कोई उच्च पद प्राप्त कर सकेंगे। इसके साथ ही सरकारी सेवा में भी आप तत्पर रहेंगे।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त, महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

क्षण प्रतिक्षण में रूप बदलने में आप निपुण होंगे। उत्सवों के प्रति आपका मन विशेष आकर्षित रहेगा अतः इनके आयोजन में आप पूर्ण रूप से भाग लेंगे तथा इन्हें सफल बनाएंगे। साथ ही आप जनता पर शासन करने वाले कोई उच्चाधिकारी भी हो सकते हैं।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहूरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

आपके मन में कठोरता का बाहुल्य रहेगा तथा करूणा एवं दया का प्रदर्शन आप कम ही करेंगे। साथ ही स्वभाव से भी आप तेज होंगे परन्तु ज्ञानार्जन में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। बुरे कर्मों की तरफ आपकी प्रवृति कम ही जायेगी तथा सत्कार्यों के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी बुद्धिमत्ता से सभी लोग प्रभावित रहेंगे तथा शत्रुओं के दमन करने में भी आप पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगे। अभिमान या गर्व की भावना का उदय भी कभी कभी आपके स्वभाव में परिलक्षित होगा। स्त्री वर्ग के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे। पुण्यकार्यों में आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा समाज में आप पूर्ण मान सम्मान प्राप्त करके गणमान्य व्यक्ति समझे जाएंगे।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा

वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

सिंह राशि में पैदा होने के कारण आप स्वभाव से क्रोधी तथा तेज से युक्त रहेंगे। आपका मस्तक तथा मुखाकृति विशाल होगी तथा आँखें छोटी तथा पीतवर्ण से युक्त रहेंगी। आप जंगलों तथा पहाड़ों में घूमने के लिए अत्यन्त उत्सुक रहेंगे। यदा कदा आप बिना किसी कारण के भी क्रोध का प्रदर्शन करेंगे। आप अपने जीवनकाल में मानसिक चिन्ताओं से भी चिन्तित रहेंगे। दानशीलता की सुन्दर मनोवृत्ति आपके मन में विद्यमान रहेगी तथा दान देना आपका प्रिय कर्तव्य रहेगा। कभी कभी आप गर्व का प्रदर्शन भी करेंगे। माता पिता की आप लगन से सेवा करने में सदैव तत्पर रहेंगे। स्त्री वर्ग में आपकी विशेष अभिरुचि नहीं रहेगी तथा संतति संख्या में पुत्रों की संख्या थोड़ी होगी। आप स्थिर बुद्धि से भी सुसम्पन्न रहेंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योऽर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की हडिड्याँ अत्यन्त ही पुष्ट तथा मजबूत रहेंगी स्वाभाविक रूप से उग्रता का आपके अन्दर समावेश रहेगा। किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पहले आप अपने मुख से कोई आवाज निकालेंगे। साथ ही आपका सीना विस्तृत तथा देखने में आकर्षक रहेगा। अपने पराक्रम से आप समस्त समाज में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सावधान तथा सजग रहेंगे तथा कार्यारम्भ से पूर्व पूर्ण स्थितियों का निरीक्षण करेंगे।

स्थूलास्थिमन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोऽल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपकी ठोड़ी मोटी रहेगी तथा मुखमंडल भी विस्तृत होगा। माता पिता के आप अत्यन्त स्नेही होंगे तथा आप भी उनकी पूर्ण इज्जत से सेवा करेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोऽभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप अपनी उदरपूर्ति योग्य जीविकार्जन से ही सन्तुष्टि एवं शान्ति का अनुभव करेंगे। स्वभाव से आप क्रोधी रहेंगे तथा जंगलों तथा पहाड़ों में भ्रमण के लिए आप सदैव मन से तैयार रहेंगे। साथ ही आप सेवक तथा बंधु से भी युक्त होंगे। आपका वक्षस्थल भी विशाल रहेगा।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

क्षमाशीलता का भाव नैसर्गिक रूप से आपके मन में विद्यमान रहेगा तथा दण्ड देने की अपेक्षा क्षमा करना आप अधिक उचित समझेंगे। आप सक्रियतापूर्वक किसी न किसी कार्यकलाप में व्यस्त रहेंगे तथा निष्क्रिय होकर समय का दुरूपयोग नहीं करेंगे। आप भ्रमणशील व्यक्ति होंगे तथा देश विदेशों की यात्राऐं करने में भी व्यस्त रहेंगे। ठंड से आप विशेष रूप से भयभीत रहेंगे । आप सन्मित्रों से भी युक्त रहेंगे तथा समाज में तथा अन्य जनों के प्रति आपका व्यवहार अत्यन्त ही विनम्र रहेगा जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। माता पिता से आपका विशेष प्रेम तथा सेवाभाव रहेगा। आपके अन्दर कई बुरी आदतें भी होंगी। लेकिन आप अपने समाज में एक प्रख्यात तथा यशस्वी पुरूष के रूप में सर्वत्र जाने जायेंगे तथा सम्मान प्राप्त करेंगे।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आँखें तथा शारीरिक गठन सुन्दर एवं दर्शनीय होगे जिसे देखकर कोई भी आकर्षित हो सकेगा। आप गम्भीर दृष्टि वाले पुरूष होंगे तथा गम्भीरता से अवलोकन करने के बाद ही आप कार्यारम्भ करेंगे तथा सम्पूर्ण जीवन को सुख से बिताने में आप सफल सिद्ध होंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

राक्षसगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृत्ति कभी कभी व्यर्थ की बातों को अधिक बोलने वाली होगी साथ ही आपके हृदय में भी करूणा की भावना अल्प मात्रा में रहेगी। आप साहसपूर्ण कार्यों को करने में कार्यशील रहेंगे तथा साहस पूर्वक इन कार्यों को करने में सफल रहेंगे। आप छोटी सी बात पर भी शीघ्र क्रोध करने वाले होंगे तथा अपनी कार्यसिद्धि के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आपका लोगों से वाद विवाद भी होता रहेगा। फलतः अधिकांश जनों का आपके लिए विरोध का भाव रहेगा।

आप प्रमेह तथा उन्माद नामक व्याधियों से भी व्याकुल हो सकते हैं। साथ ही चेहरा भी आपका सामान्य आकर्षक होगा। यदा कदा आप अत्यन्त ही कठोर वचनों का प्रयोग करेंगे

जिससे अन्यजन आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः अपने वार्तालाप में आपको मधुर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मूषक योनि में पैदा होने के कारण आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सदैव अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। आलस्य आपको पसन्द नहीं होगा आप कुछ न कुछ कार्य हर समय करते रहेंगे। आप एक सज्जन पुरूष भी होंगे तथा अभिमानी प्रवृत्ति से हमेशा दूर रहेंगे फलतः समाज में आपको पूर्ण मान तथा आदर की प्राप्ति होगी। आप जो भी कार्य अन्य जनों से सम्पन्न करवाना चाहेंगे उसे अपने ही समक्ष पूर्ण करवाएंगे क्योंकि अन्य लोगों पर आपको विश्वास नहीं रहता। साथ ही धन ऐश्वर्य तथा वैभव का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। इन सबसे आप सदैव पूर्ण रहेंगे।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी

पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियाँ, मूल नक्षत्र धृति योग, वव करण, शनिवार, प्रथम प्रहर तथा मकर राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य, 3,8,13 तिथियों, मूलनक्षत्र, घृतियोग तथा ववकरण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण क्रयविक्रयादि अन्य कोई भी महत्वपूर्ण कार्य आरम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि होगी तथा अन्त में असफलता का मुँह देखना पडेगा। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा जब चन्द्रमा मकरराशि में स्थित हो तब भी शुभकार्यों को प्रारम्भ न करें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वाश्रसथ्य के प्रति भी सजग रहें।

यदि आपके लिए अशुभ समय प्रतीत हो रहा हो यथा मानसिक परेशानी हो रही हों व्यापार नौकरी प्राप्ति या पदोन्नति में बाधायें उत्पन्न हो रही हों तथा अन्य अशुभ फल हो रहे हों कहीं से भी कार्यों में सफलता न मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्टदेव सूर्य भगवान की प्रातःकाल उपासना करनी चाहिए तथा अर्ध्य प्रदान करना चाहिए एवं रविवार का भी उपवास करना चाहिए। इससे आपकी मानसिक परेशानियाँ दूर होंगी तथा शुभफलों के प्रभाव में वृद्धि होगी। साथ ही रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प सोना, गेहूँ, गुड, घी इत्यादि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का

अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पांचवे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप पढ़ाई में तेज, उच्चशिक्षित, सत्ता पक्ष से लाभ-प्राप्त करेंगे। सुखी माता-पिता से युक्त, अपने घर का भाग्य जगाने वाले, संतान सुख मिलेगा। आप सेवक पुत्र के पिता होंगे। पुत्र प्राप्ति के बाद परिवार में तरक्की होगी। आप सबको साथ लेकर आगे बढ़ने वाले और शूरवीर होंगे, बुढ़ापा सुख से बीतेगा। सरकारी अधिकारियों से मधुर संबंध रखेंगे। यदि राजा सहायक न हो तो फकीर से आपका भला होगा। पारिवारिक उन्नति होगी। पौत्र के जन्म के बाद माली हालात अच्छी हो जाएगी। औलाद की वृद्धि होगी, बुढ़ापे में हर तरह का आराम मिलेगा। मां-बाप का सुख लंबे समय तक मिलेगा। जिंदगी आराम से गुजरेगी। 42 से 47 साल की आयु तक शुभ फल होगा। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ेगी, आप का रुतबा अच्छा होता जायेगा। आपको सरकारी विभाग से मान-सम्मान मिलेगा, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, अचानक धन प्राप्ति के भी योग हैं।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया या बुरे काम किये, संतान से झगड़ा किया सरकारी विभाग से बेईमानी की या झूठ बोलने की आदत होगी तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर पेट पर पड़ेगा और आपका स्वभाव क्रोधी होगा। पत्नी छोड़े या मर जाए या दूसरी शादी भी हो सकती है, ऐसा शक है। स्त्री की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। स्त्री द्वारा अपमानित भी होना पड़ सकता है। लड़के पर भी बुरा असर हो सकता है। काफी दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। औलाद की आर्थिक हालात पर बुरा असर होगा। ननिहाल के लिए अशुभ फल रहेगा। झूठ और बेईमानी से धन हानि का भय और दीर्घ रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. झूठ से दूर रहें।
2. किसी के प्रति मन में ईर्ष्या न रखें।

उपाय :

1. बुजुर्गी रस्मों-रिवाज बन्द न करें।
2. साला, जीजा, दोहते या भांजे में से तीन की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से आपका जन्म आपके माता-पिता की तपस्या के बाद हुआ होगा या भगवान की मिन्नतें-मन्नतें मांग कर या आपके जन्म से पहले कई बहनों का जन्म हुआ होगा। आप सबको वशीभूत कर लेते हैं। आप शांत स्वभाव के सुंदर और सफेद कपड़े पहनने के शौकीन हैं। आप विभिन्न भाषाओं के विद्वान

होंगे। आपको पैतृक मकान का सुख मिलेगा। आपको जीवन भर संपत्ति की कमी महसूस नहीं होगी। 28 वर्ष की उम्र में विवाह हो तो जीवन भर सुख मिलेगा। पराई अमानत पास रह जायेगी जिससे अमीर हो जाऐंगे। जब तक माता जीवित रहेंगी धन-दौलत का अभाव नहीं रहेगा। लंबी उम्र के मालिक होंगे। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आपके जन्म के बाद पिता की माली-हालत अच्छी होगी। लम्बी आयु, कारोबार तथा धन लाभ के लिए शुभ होगा। बुढ़ापा उत्तम रहेगा। 24 या 27 साल की उम्र में अगर सफर करें तो सफर से वापस घर आकर मां का आशीर्वाद लेने से माता की आयु बढ़ेगी। 24 वर्ष आयु से पहले मकान न बनावें।

यदि आपने 24 वर्ष आयु से पहले मकान बनाया होगा, 28 वर्ष आयु में विवाह किया हो, आपने नौकरानी से झगड़ा या गाय को कष्ट दिया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से पानी में डूबने का भय, मानसिक रोग, पुत्र सुख का अभाव, अति चिन्ता रहना, शारीरिक कमजोरी, आंख की पुतली खराब होना, घर में बाग-बगीचा हो तो उजड़ा सा रहेगा, आपको दिल की बिमारियां हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. माता या बूढ़ी स्त्री से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. चांदी के गिलास में दूध-पानी आदि पियें।
2. बट के वृक्ष को कभी-कभी पानी डालें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल पांचवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप शांत स्वभाव के हैं। आपको अपने जन्मस्थान से दूर निवास करना पड़ सकता है आप बहुत यात्रा करेंगे। आपको धन-संपदा मिलेगी। पत्नी एवं संतान सुख प्राप्त होगा। आपकी औलाद अच्छी और सुखी रहेगी। आपका बेटा तथा पोता भी धनवान होगा। आप धनवान संतान के पिता होंगे। आपकी उम्र ज्यों-ज्यों बढ़ेगी आप अमीर होते चले जाएंगे। आप या आपके खानदान में कोई हकीम या डॉक्टर हो सकता है। आपके बुजुर्गों की माली हालत अच्छी होगी। प्रत्येक वर्ष जन्मदिन के बाद से उन्नति और तरक्की होती चली जाएगी। आप अपने भाई या बाप-दादे की हैसियत से ऊंचे दर्जे के व्यक्ति होंगे। आपकी पुत्र प्राप्ति के बाद भाग्योन्नति होगी। आपके भाग्य के संबंध में अच्छा असर होने की उम्मीद है।

यदि आपका चाल-चलन खराब हुआ, आपने परिवार के लोगों से बिना कारण दुश्मनी रखी, सट्टा-जुआ आदि खेला, संतान या पत्नी से झगड़ा किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपकी

विद्या अधूरी, पेट में खराबी, कानों की तकलीफ, घुटने या पैरों में किसी प्रकार का कष्ट या जोड़ों का दर्द हो सकता है। संतान प्राप्ति या संतान सुख में बाधा की आशंका है। स्त्री को अठराह की बीमारी जो संतानोत्पत्ति में विघ्न कारक होती है, हो सकती है। सट्टा-जुआ आदि में हानि का योग है। पुत्र से क्लेश, परिवार में किसी को दमा या मिरगी का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. शराब-बीयर न पियें, मछली न खायें।

उपाय :

1. घर में नीम का पेड़ जमीन या गमले में लगावें।
2. रात को लोटे में पानी भरकर सिरहाने रख कर सुबह किसी पौधे या बाग-बगीचे में डालें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध पांचवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका जीवन खुशहाल रहेगा। आपकी ज्योतिष विद्या तथा आयुर्वेद शास्त्र में रुचि रहेगी। आपका वाक्य ब्रह्मा जी के मुंह से निकली बात के समान होगा। आपको अपने भाई से सुख मिलेगा और लाभ होता रहेगा। आपको जीवन में औलाद सुख मिलेगा। आप बिना सोचे-समझे भी कुछ बात कह दें, तो वह सच हो जाएगा। आपका चरित्र अच्छा होगा। आपकी जद्दी जायदाद, गृहस्थी और औलाद पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। 34 वर्ष की उम्र के बाद आपका भाग्य पूरी बुलंदी पर आ जाएगा। आप पूर्ण ज्ञानी और तेजस्वी प्रभाव के व्यक्ति होंगे। आपके सगे संबंधियों या किसी भी व्यक्ति पर आपका अच्छा असर रहेगा। आप अच्छे प्रबंधकर्त्ता हैं। अकस्मात् धन की प्राप्ति के भी योग है। आपको अपने जीवन में बहुत अच्छे दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आपको पराविद्या, तंत्र-मंत्र पर पूर्ण भरोसा रहेगा। धर्म, आध्यात्म और ईश्वर भक्ति के प्रति आपकी रुचि अच्छी रहेगी। आपकी बुद्धि तेज है। आपको बुद्धि के खजाने और विद्या का पूर्ण लाभ मिलेगा।

यदि आपने संतान का विरोध किया सरकारी अधिकारियों से झगड़ा किया, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, आपके घर में बांस का वृक्ष हुआ तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आप कभी-कभी बहुत कड़की बातें करने लगेंगे। इस बात का परहेज रखें। संतान पर कष्ट के दिनों में आप अधिक ही चिंतित हो जाया करेंगे। आप कल्पना लोक में भ्रमण करेंगे या काल्पनिक डर से भयभीत रहेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. गऊ मुख घर में रिहाइश न करें।

2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. तांबे का पैसा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में छठे खाने में वृहस्पति पड़ा है। इसकी वजह से गृहस्थ जीवन में भी आप साधू स्वभाव के होंगे। आपको कोई काम करने की अधिक जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि पिता दीर्घायु हुए तो आप धनवान बन जाएंगे। आपके पिता स्वभाव से दानी होंगे। नगद धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपके जीवन में कई चीज बिना मांगे या बिना मेहनत किए ही मिल जाएंगी। आपके ननिहाल खानदान के लोगों की आर्थिक हालत अच्छी होगी। आपके मामा खुशहाल होंगें। आपके जीवन में सुख-शांति तो रहेगी। परंतु बहुत ठाठ-बाट नहीं रहेंगे। बुढ़ापे में आपको शुभ फल प्राप्त होंगे। पूजा-पाठ पर ज्यादा ध्यान देंगे। आपको पत्नी का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको अधिक समय तक नौकरी करनी पड़े, ऐसी आशंका है। आपके गुप्त दुश्मन नहीं होंगे। दुश्मन अगर हुए तो नष्ट हो जाएंगे अर्थात् आपको दुश्मनों पर जीत हासिल होगी। शरीर से निरोग रहेंगे।

यदि आपने कर्ज, दान-भिक्षा मांगना शुरु किया, हर समय व्यर्थ घूमते रहे, मामा, ताया-चाचा से झगड़ा किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से पिता का सुख कम मिलेगा या 16 वर्ष की उम्र में ही परिवार का भार आप पर पड़ सकता है। पत्नी की बेकद्री करने से अशुभ फल होगा। आपका जीवन अय्याशी या ऐशो इशरत के कारण बर्बाद हो सकता है। आपके पिता, पुत्र और पुत्री के लिए ग्रह फल बहुत अच्छा नही है। आप साधू स्वभाव के मुफ्तखोर, रोगी और अय्याश होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भीख न मांगें।
2. आवारा न घूमें।

उपाय :

1. धर्म मंदिर के पुजारी को वस्त्र दान देवें।
2. पीली चीजें धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में पांचवें खाने में शुक्र पड़ा है। जिसकी वजह से आप विद्वान, शत्रुहंता, सफेद चीजों से लाभ प्राप्त करने वाले, बच्चों और पूरे परिवार से युक्त एवं स्त्री सुख से परिपूर्ण रहेंगे। आप अपनी जाति से प्रेम करने वाले होंगे। आप दुनिया में रह कर भी दुनियादारी

की बातों से अपने को मुक्त प्रमाणित करेंगे। विवाह के पांच वर्ष के बाद धन-संपत्ति और नौकर-चाकरों का सुख अधिक प्राप्त होगा। पदोन्नति भी होगी। आपकी पत्नी वफादार होगी। आपकी पत्नी के जिंदा रहने तक आपको किसी चीज़ का अभाव नहीं होगा। कोई बहुत बड़ी रुकावट नहीं आएगी। आपकी दौलत-माया बढ़ेगी। आप अपने खानदान वालों को प्यार करेंगे तो इसका असर आप पर अच्छा ही पड़ेगा। भाई के लिए भी आप अनुकूल रहेंगे। आपके परिवार में हर तरह की बरकत होगी जैसे-धन, परिवार एवं सुख शांति। आपको अपने देश से प्रेम रहेगा।

यदि आप चरित्रहीन हुए तो वृक्ष में फंसे पतंग की तरह का हाल होगा, माता-पिता की मर्जी के खिलाफ शादी या लड़की देख कर शादी की तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप आशिक मिजाज और कामांध होंगे। जिस वजह से आपका सुख बाधित हो सकता है। गंदी सोहबत और प्रेम संबंधों में फंस कर आपकी किस्मत भी कांटों में फंस जाएगी। आप साथियों पर कई प्रकार के झंझट पैदा करेंगे। आप दिन में ज्ञान एवं रात में इश्क स्नान करने वाले होंगे। गर्भपात का भय या संतान देर से होगी, बहन-बुआ का धन नाश होगा, प्रेम-विवाह किया तो पुत्र सुख से वंचित रहेंगे, ऐसी शंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. स्त्रियों के रसिया न बनें।
2. प्रेम विवाह या अंतर्जातीय या माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध विवाह न करें।

उपाय :

1. शरीर पर दूध/दही से मलकर नहाएं।
2. गाय की सेवा करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के छठे खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आपको 28 वर्ष की उम्र में या 28 वर्ष की आयु के बाद विवाह लाभदायक होगा अन्यथा मां, पत्नी, संतान पर मंदा असर रहेगा। आप खेल में रुचि रखने वाले या प्रसिद्ध खिलाड़ी भी हो सकते हैं। आपकी पत्नी सुखी रहेगी। आपकी उम्र के 34 से 41 वर्ष के बीच कोई संतान पैदा हो तो आपके जीवन और घर का कायाकल्प हो सकता है। आपको यात्रा से लाभ मिलेगा। आपका चरित्र उत्तम होगा। आपका परिवार सुखी रहेगा। धन-लक्ष्मी की प्राप्ति होती रहेगी। आप गुप्त कार्य करने के आदी हो सकते हैं। संतान आपके भाग्य के लिए बड़ी ही शुभ और अनुकूल होगी।

यदि आपका घर बंद गली में हुआ, धर्म मंदिर से जूता बदला, पूर्णिमा को नया काम शुरु किया, चमड़े-लोहे का सामान मुफ्त लिया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपका छोटा भाई आप से

शत्रुता करे, ऐसी शंका है। परंतु अंत में वह दुश्मनी को भुला कर दोस्त बन जाएगा। शराब-मांस, अंडे का भोजन करने से हानि होने की आशंका है। आप लड़ाई-झगड़े से परेशानी में पड़ सकते हैं। आपके ताऊ, बड़े भाई या मामा को नेत्र रोग या आंखों की हानि हो सकती है। आपकी पत्नी और माता को कोई कष्ट होने की आशंका है। शराब-कबाब और औरतों के चक्कर में मुकद्दमा/पुलिस या साहूकारी अड़चने आ सकती हैं। आपको गुर्दे या पथरी के रोग का भी भय है। आपकी मृत्यु दुर्घटना से हो सकती है। आपकी नौकरी व्यापार में अचानक बाधाएं आ सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. धर्म स्थान से जूता चोरी न हो इसका विघेष ध्यान रखें।
2. लोहे का नया सामान न खरीदें।

उपाय :

1. काले कुत्ते की सेवा करें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में राहु पड़ा है। जिसकी वजह से आपके लिए तमाम सुख-सुविधाओं का योग रहेगा। आप योगी की तरह आचरण करेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने बलबूते पर खड़े होंगे। व्यर्थ की चिंताओं से मुक्त रहेंगे। आप धनवान अपने भाई-बहन से स्नेह रखने वाले, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले और सुख के साथ जीवन को गुजारेंगे। आप कभी भी अर्थिक रूप से परेशान नहीं होंगे। आपकी कन्या जन्म के बाद लक्ष्मी की बड़ी कृपा होगी और आपको सभी सुख प्राप्त होंगे। विवाह-उत्सव आदि कामों में खूब खर्च करेंगे। अथाह धन की प्राप्ति होगी। आप अपनी पुत्री व बहन पर अधिक खर्च करेंगे। आप पर ऋण का बोझ पड़ जाये तो वह शीघ्र उतर जाएगा। शुभ समय पर कोई काम करके कामयाबी हासिल करेंगे। ससुराल पक्ष धनवान होगा, शत्रुओं से बचाव होगा।

यदि आपके लड़कियां अधिक हुईं, मकान रोशनी वाला हुआ, बिना सोचे समझे काम किया, शेख चिल्ली की तरह बातें ही बातें बनाने की आदत हुई तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारणवश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप बुरे व्यसनों की आदतों के कारण या समाज में बदनाम लोगों से दोस्ती के कारण दुःखी होंगे। आपको पसलियों या आंतों के रोग की आशंका बनती है। बवासीर रोग की आशंका है। दिमागी परेशानी के कारण रात्रि शयन में बाधा की आशंका है। आप शेख चिल्ली की तरह सपने देखेंगे और अपना समय बर्बाद करेंगे। मानसिक पीड़ा से दुःखी रहेंगे। फौजदारी-दीवानी मुकद्दमों में उलझ सकते हैं। गबन करने पर इल्जाम लगेगा। बिना सोच-समझे किये कामों में हानि हो ऐसी शंका है। आपके परिवार का बोझ आप पर होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. रसोई से बाहर खाना न खावें।
2. घर के आंगन में धुआं न करें।

उपाय :

1. घर के आखिर में अंधेरी कोठरी बनावें।
2. चांदी का ठोस हाथी घर में रखें या चांदी का चौरस टुकड़ा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में छठे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप अभिमान रहित होंगे। आप एक अच्छे सलाहकार होंगे। आपकी संतान आपके कामों में हाथ बंटायेगी। आप धनवान, शत्रुओं को परास्त करने वाले ननिहाल के लिए शुभ रहेंगे। आपकी संतान आपकी सहयोगी होगी। आपका पुत्र आपकी मुसीबतों का जाल कटेगा और आपकी सहायता करेगा। आपको अपने जीवन में आराम मिलेगा। आप देश या परदेश में कहीं भी रह कर सुखमय जीवन बिताएंगे।

यदि आपने ससुराल से सोने की अंगूठी या 2 चारपाई या पलंग विवाह समय न लिये, ससुराल से मिली अंगूठी गुम हो जाये या बिक जाये तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से माता और ननिहाल में बुरा असर पड़ेगा। आपको कुत्ते से डर लगेगा। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। आपका फिजूल खर्च भी हो, ऐसी संभावना है। आपका बुढ़ापा कष्टमय रहेगा। कभी-कभी आपको बेकार की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। बिना किसी कारण के शत्रु पैदा हो सकते हैं। आपकी वृद्धावस्था सुखी नहीं रहेगी। आपका पुत्र दूसरों के लिए बदनसीब होता है। लड़कियां अधिक हो सकती हैं। पेट-चमड़ी-पांव में रोग होगा। आवारा घूमना या धन का अपव्यय अधिक होगा, बिना कारण शत्रु पैदा होते रहेंगे। मामा और माता को कष्ट की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. ससुराल से मिली सोने की अंगूठी गुम न होने देवें और न बेचें।
2. परिवार की लड़कियों से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. शुद्ध सोने की अंगूठी बायें हाथ में पहनें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि अष्टम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुदशम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि एकादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि एकादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला परिणाम देने वाला रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए नई योजना भी बनाएंगे जिससे व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी तथा इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

29 मार्च के बाद अष्टम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्यों में कुछ रूकावटें आ सकती हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी संभाल लेंगे। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। एकादश स्थान के गुरुआय बढ़ा सकते है। आपको बड़े लोगों या वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न एवं आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा परन्तु आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

मई के बाद एकादश स्थान में गुरुके गोचरीय प्रभाव से रूका हुआ धन मिल सकता है, साथ ही आपके धनागम में भी वृद्धि होगी, जिससे आप उचित बचत करने में सफल रहेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद प्रेम प्रसंग में सफलता प्राप्त होगी। तृतीय स्थान में गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अत्यधिक परिश्रमी होंगे एवं अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य ही रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से मौसम जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। मानसिक चिंता जैसी छोटी मोटी परेशानियां होती रहेंगी।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहें। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आप का स्वास्थ्य पूर्ण रूप से अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को परीक्षा में सफलता मिल सकती है।

मई के बाद पंचम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्षारम्भ में आप जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। मई के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। यात्रा के अंतराल में या वाहनादि चलते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे, परन्तु मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढेगा। आप भगवान की पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि अच्छे कार्य संपन्न करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक मंगलवार हनुमान जी को चोला चढाएं एवं हनुमान चालीसा का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस मास में आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र सुख भी आपको प्राप्त होगा। आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे। इस मास आपके शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इनका आप यथोचित सम्मान एवं पूजन करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप यथोचित लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगे एवं समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।अतः मानसिक रूप से पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से आवश्यक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में भी सफल रहेंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक कार्य क्रम का आयोजन करने में भी आप प्रवृत होंगे।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। आपके शत्रु इस समय अधिक प्रबल होंगे फलतः शत्रु पक्ष से भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है ।अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। नौकरी या व्यवसाय में अपने उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित या जुर्माना प्राप्त कर सकते हैं। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके साथ ही आप किसी कठोर कार्य को भी सम्पन्न कर सकते हैं। जिसका प्रभाव आपकी प्रतिष्ठा पर पड़ेगा तथा इससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। आपकी मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी इस समय सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा आशाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में भी असमर्थ रहेंगे।

साथ ही इस समय आप पित्तादि दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रूधिर विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः इस मास शारीरिक सुरक्षा का भी आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए जिससे अल्प मात्रा में ही कष्ट हो।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री या बन्धु वर्ग

से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा आपके बन्धु वर्ग तथा स्त्री को किसी प्रकार का कष्ट होगा। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आपको नित्य चिन्ता तथा भय बना रहेगा। आपमें इस मास उत्साह की अल्पता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी तथा अनावश्यक रूप से धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कष्टानुभुति प्राप्त करेंगे आपके मन में लालच के भाव की भी वृद्धि होगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। बन्धु जनों से आपके सम्बन्धों में तनाव व्याप्त होगा तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आपको मानसिक रूप से असन्तुष्टि रहेगी। साथ ही अन्य पारिवारिक या समाजिक जनों से भी वादविवाद होते रहेंगे।

लेकिन इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इससे आपको स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा इनसे आप पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों तथा द्रव्य आदि को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। अतः शत्रु पक्ष से आप चिन्तित रहेंगे तथा ये आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः चोरों से आपको सावधान रहना चाहिए। इस महीने में आपका अनावश्यक धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे फलतः आपकी शारीरिक शक्ति का ह्रास होगा। साथ ही इस महीने आप घर से दूर किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। सांसारिक कार्यों में भी आपको कष्ट होगा तथा मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी एसे कार्य को भी आप सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी मान प्रतिष्ठा को आघात पहुचेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार से हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

मई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन लाभ अर्जित करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे। इस मास में आप घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। सन्तति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे तथा इनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन एवं सम्मान करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। इस मास में

समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की प्रबलता रहेगी एवं दूर समीप की आप कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगे। मित्र तथा बन्धुवर्ग से इस समय सम्बन्धों में घनिष्ठता होगी। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इसके साथ ही इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा वातोत्पन्न रोगों से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि का भी भय होगा जिससे हानि की आशंका बनी रहेगी। अतः संयम एवं सर्तकता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

जून 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके उच्चाधिकारी या वरिष्ठ सहयोगी आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे फलतः आप कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति प्राप्त करेंगे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्योंको भी सम्पन्न करेंगे साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सिद्ध होंगे। फलतः आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों में आपकी श्रद्धा होगी तथा इनकी पूजा एवं सेवा में भी आप तत्पर रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इसके साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन स्थान या गृह आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त पिछली असफल आशाओं को पूर्ण करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप पुत्र एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी प्राप्ति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ, महत्वपूर्ण एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा जिसमें आपको अपने असफल कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ होगा तथा सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपका स्वास्थ भी उत्तम रहेगा तथा मन से भी पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। आपको इस मास वांछित पदार्थों की भी प्राप्ति होगी तथा इनका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग

अर्जित करेंगे। समाज तथा समाजिक जनों से आप पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे साथ ही विगत रूके हुए कार्यों में भी आप इच्छित सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

इसके साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार का योग भी बनता है। अतः दुर्घटना आदि से भी सावधान रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी धन हानि होने की सम्भावना है अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लए मध्यम रहेगा अर्थात शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे अतः आप का व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति भी करेंगे। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी पूर्ण रूप से ठीक नहीं रहेगा इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य पराक्रम एवं परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। मित्रों एवं सम्बन्धियों के मध्य आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा उनसे उचित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में भी इस मास में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा शत्रुओं से नित्य भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। साथ ही मन से भी अशान्त रहेंगे एवं बैचेनी की अनुभूति करेंगे।

इसके साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं उससे आपको अपेक्षित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूपेण धन लाभ तथा सुख प्राप्त करेंगे। साथ ही आप समाज में कीर्ति भी प्राप्त कर सकेंगे।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन में सन्तुष्टि का भाव विद्यमान रहेगा। आपके पराक्रम में इस समय पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही आपके लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे। इस मास आप भाग्योन्नति सम्बन्धी कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा ऐसे महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे जिनको आप काफी समय से सिद्ध करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके दृढ़ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा सबसे आप यथोचित मान सम्मान अर्जित करेंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफलता अर्जित करेंगे राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला

सहयोगियों से भी लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण प्रतिष्ठा तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहेगा।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने उत्साह द्वारा धन को अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप अपने बन्धुओं तथा मित्रों के मध्य उचित प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। साथ ही मिष्ठानोपभोग भी आप अधिक मात्रा में करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं उनको पराजित करने में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं व्यापारादि कार्यों में भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी अभिवृद्धि होगी तथा सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में आपको सफलता मिलेगी।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों के मध्य यशार्जन करने में भी आप समर्थ रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। साथ ही अन्य जनों का परोपकार करने के लिए भी आप उद्यत रहेंगे। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा किसी भी प्रकार से आप शारीरिक या मानसिक कष्ट प्राप्त नहीं करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनके आश्रय से समाज में ख्याति अर्जित करेंगे।मित्र एवं भाइयों से इस मास आपको उचित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इस समय आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं जिससे आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों को भी आप प्राप्त करेंगे या इनसे युक्त होंगे। अतः यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं आनंददायक रहेगा।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शत्रु बलवान रहेंगे जिसके कारण आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही पारिवारिक जनों से सम्बन्धों में भी तनाव का वातावरण रहेगा जिससे परिवार में अशान्ति रहेगी। अतः मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या अजीविका संबधी कार्यों में मंदी आएगी या आपका कोई कार्य छूट भी सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक जनों से आपका विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का योग भी बनता है एवं शरीर में कोई रोग भी हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री का आपको पूर्ण सुख मिलेगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा बुद्धि बल से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने के लिए उत्सुक होंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यरहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल मेंजल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न हीजल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरु हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धसामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है।जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आजाएंगे जिससे आपका बजटबिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि सेयह वर्षसामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगेपरन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशहो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रद ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता बनी रहेगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आप बुद्धि बल से ही सम्पन्न करेंगे। इस मास आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। आपके प्रभुत्व की इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग हृदय से आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके कई शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ एवं महत्वपूर्ण समाचार की प्राप्ति भी होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना पैदा होगी एवं आप श्रद्धा पूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्च अधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी मुक्ति मिलेगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे जिसके प्रभाव से आप गर्मी या पितादि दोषों से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी। अतः इस मास में आपको शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा इस समय आप शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास आपका शत्रुपक्ष बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे फलतः मानसिक रूप से आप उद्विग्न तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में चोरी होने की भी सम्भावना रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें एवं उन्हें उचित सहयोग प्रदान करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे अन्यथा आपको असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। साथ ही धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक संकट भी न्यूनाधिक मात्रा में रहेगा। आपके द्वारा इस मास कोई ऐसा भी कार्य हो सकता है जिसके लिए आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इस मास आपके सम्बन्धियों तथा मित्रों से तनावपूर्ण संबध रहेंगे एवं मधुरता का अभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज से भी आपको उपेक्षा मिलेगी तथा आशाएं भी अल्पमात्रा में पूर्ण होंगी।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में शुभ फल भी घटित होंगे।जिसके प्रभाव से आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे जिससे मानसिक प्रसन्नता तथा शान्ति की अनुभूति होगी।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इस समय आप स्त्री एवं बन्धुवर्ग से कष्ट की प्राप्ति करेंगे तथा शत्रुपक्ष से भी आपको भय तथा चिन्ता बनी रहेगी जिससे आप मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे ।साथ ही आप में उत्साह के भाव की भी अल्पता रहेगी तथा धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक संकट भी बना रहेगा। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे एवं मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। अपने मित्र एवं बन्धुजनों से भी आपका परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा ऐसे समय पर मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आप आन्तरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक या बन्धुजनों से भी वादविवाद आदि की भी सम्भावना बनी रहेगी। अतः आपका यह समय कष्टपूर्वक ही व्यतीत होगा।

साथ ही इस समय आप वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से अस्वस्थ रहेंगे तथा जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़े। इससे आपकी समाजिक अवमानना भी होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप अग्नि के द्वारा न्यूनाधिक मात्रा में धन हानि भी प्राप्त करेंगे। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए समान्यता अशुभ रहेगा। इस समय आपको शत्रुओं से भय बना रहेगा तथा मन में चिन्ता व्याप्त रहेगी साथ ही आपके घर में किसी प्रकार से चोरी आदि भी हो सकती है। इस समय आप अनावश्यक रूप से धन व्यय करेंगे एवं धर्म के प्रति भी आपके मन की श्रद्धा में अल्पता आएगी। आपका स्वास्थ्य भी इस मास में अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर आप शारीरिक व्याकुलता प्राप्त करेंगे परिणामतः आपके शारीरिक बल में भी न्यूनता आएगी तथा आपको दुर्बलता का आभास होगा। इसके साथ ही इस मास आप दूर की यात्रा भी कर सकते हैं। अपने सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में आप प्रायः असफल ही रहेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी शिथिल होंगे।

साथ ही इस मास में आप वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी जाने अनजाने सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में मान हानि हो सकती है। इसके साथ ही आग के द्वारा भी आपको किसी प्रकार से हानि हो सकती है। अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण रूपेण शुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे ।फलतः आप किसी सम्माननीय पद को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। धनार्जन इस समय प्रचुर मात्रा में होगा तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको धन लाभ हो सकेगा। इस मास आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी

सम्पन्न होने की सम्भावना रहेगी। साथ ही स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा यत्नपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपकी यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकांश रूप से भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे। इस मास आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र मानप्रतिष्ठा अर्जित करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

साथ ही इस समय गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा एवं नवीन वस्त्रों या अन्य द्रव्यों को प्राप्त करन में भी सफल रहेंगे एवं आनंदपूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र, नौकरी या व्यापार में उन्नति होगी तथा समाजिक क्षेत्र में यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा वे सभी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा परस्पर आपको उचित सहयोग मिलता रहेगा। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे जो काफी समय से रुके हुए थे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा इनकी पूजा तथा सेवा करने में भी आप तत्पर रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धुबान्धवों में भी आदर एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। साथ ही आप अपनी असफल आशाओं में भी इस समय सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरक्त मानसिक रूप से भी आप पूर्ण शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी होंगे अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है। अतः सावधानी पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें एवं शारीरिक सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण शुभ तथा प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय स्त्री वर्ग से आप लाभार्जन करेंगे तथा सौभाग्य से युक्त रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी जिसमें आप सफलता अर्जित करेंगे। आप मन से भी इस समय शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे तथा अन्य वांछित पदार्थों की भी आपको प्राप्ति होगी। संतति पक्ष से भी आप सुखार्जन करेंगे एवं सम्बन्धियों के मध्य मानप्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस समय में सम्पन्न होंगे तथा आप प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा अन्य पारिवारिक जनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा तथा धन लाभ प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा सुख पूर्वक समय व्यतीत करके समाज में पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपका मध्यम रूप से व्यतीत होगा तथा आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका व्ययाधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी करेंगे फलतः समाज में आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे एवं मन में अशान्ति का भाव भी विद्यमान रहेगा। अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आपको अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम प्रदर्शित करना पड़ेगा फिर भी सफलता अल्प मात्रा में ही मिलेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा साथ ही मित्रों एवं सम्बधियों के साथ परस्पर संबन्धों में तनाव रहेगा आपके कार्यक्षेत्र में भी इस समय व्यवधान उत्पन्न होगा एवं शत्रुपक्ष से भी चिन्ता तथा भय नित्य बना रहेगा। इसके अतिरिक्त मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी वृद्धि होगी तथा अन्य प्रकार से भी आप सुखानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन से भी आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में अभिवृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे चिन्तित, भयभीत एवं पराजित होंगे। आपके लाभमार्ग इस समय प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति में सुदृढता होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी आप काफी समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे सुख भी प्राप्त करेंगे। सांसारिक कार्यो को सिद्ध करने में आप पूर्ण समर्थ रहेंगे तथा अपने उच्चाधिकारियों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में भी आप सफल रहेंगे जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। इस मास में धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत

रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे इस समय आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आप यथोचित आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे तथा स्वयं भी उनको अपना वांछित सहयोग प्रदान करेंगे। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग का आपको पूर्ण संरक्षण तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उचित लाभ एवं सहायता प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही इस महीने में आप मिष्ठान का भक्षण अधिक मात्रा में करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न एवं शान्त रहेंगे। साथ ही शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा वे आपसे चिन्तित एवं भय की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्य के द्वारा भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप अपने श्रेष्ठ जनों या उच्चाधिकारियों से सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति या विस्तार होने की सम्भवाना बढ़ेगी। इस समय आप दूर समीप की यात्रा भी कर सकते हैं तथा नवीन वस्तुओं या वस्त्रों आदि की भी आपको प्राप्ति हो सकेगी।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम तथा शुभ फल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा नाना प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों से आप यथोचित आदर तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा एवं सम्मान का भाव विद्य मान रहेगा तथा धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी। साथ ही अन्य लोगों के परोपकार संबधी कार्यो को भी आप सम्पन्न करेंगे। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आश्रय प्राप्त करके समाज में यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। इस महीने में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उनको सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को पूर्ण करने में भी आप सफलता अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी सुख प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि में भी सद्विचारों की वृद्धि होगी। विविध प्रकार के सुखों का आप इस समय उपभोग कर सकेंगे। इसके अलावा धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने में भी आप सफल हो सकेंगे। इस प्रकार यह मास आपका शान्ति एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से शुभाशुभ फल प्रदान करेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु वर्ग से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी एवं इसमें अशान्ति रहेगी।पारिवारिक जनों से भी आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा आपस में अनबन रहेगी। आपके कार्य क्षेत्र में इस समय शिथिलता आएगी तथा स्थान परिर्वतन का योग भी बन सकता है। आप इस समय अपने किसी कार्य को छोड़ भी सकते है। सामाजिक जनों से भी आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद आदि भी होते रहेंगे फलतः आपके सम्मान में न्यूनता का भाव आएगा। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे।अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा यत्न पूर्वक आप धार्मिक कार्य करने के लिए प्रवृत रहेंगे। साथ ही अन्य कई प्रकार के शुभ फल भी इस समय घटित हो सकेंगे।अतः मास शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुबिधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्टस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगा। आपको

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होंगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नही आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते है। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नही रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती हैं।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने मे आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्चे भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत अवरोध आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा आपका समय फिर से अनुकूल हो जाएगा और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

जो व्यक्ति नवीन रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद आपको रोजगार से सम्बन्धित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। 04 फरवरी के बाद नए निवेश करना सही नहीं होगा। भूमि, भवन एवं वाहनादि पर निवेश न करें नही तो आपका पैसा डूब सकता है। इस समय आप इस बात पर ध्यान दें कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए और एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानिया तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद चतुर्थस्थ राहु आपको घरेलू जीवन में कुछ चिंताएं दे सकता है जिससे परिजनों के बीच

सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होंगी। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निबटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अचानक ही उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मई के बाद आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपकी एक अगल पहचान होगी।

संतान

वर्ष की शुरुआत संतान के लिए शुभ नहीं है। लग्न स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद आप अपने आप को तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जा की वृद्धि होगी।

मई से आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम करना या सुबह-सुबह टहलने जाना। यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया है तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनायेगी।

यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप कोई विदेशी भाषा सीखने की तरफ आकर्षित होंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का भी अवसर प्राप्त होगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 17 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 17 अप्रैल से आप अपने कार्य-व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। 18 फरवरी से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।

9 अगस्त से व्यावसायिक स्तर पर समय आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए पुरुस्कृत भी किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। 18 फरवरी के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

9 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। यह समय आपके लिए अत्यंत लाभकारी रहेगा। यदि अनापेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिएगा मत। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। दशमस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी अवसर आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भघरेलू वातावरण के लिए अनुकूल है। पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है अतः परिवार से जुड़े हर

मामलों में आपको सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ है।

9 मई से घरेलू वातावरण के लिए समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान होगा क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। 15 अक्टूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा किन्तु आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं रहेंगी। 18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। यह समय आपकी संतान के लिए शुभ होगा।

गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की लिहाज से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। पारिवारिक क्लेश के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आपके जीवन में इस साल खुशी के पल भी आएंगे। स्वस्थ्य रहने के लिए आपको चाहिए कि आप योग और ध्यान का सहारा लें। प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे।

15 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी और आप पूर्णरूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष अनुकूल बना रहेगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत बढ़िया है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

15 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का योग बन रहा है। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती

रहेंगी। 18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के शुरु में आपके धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 18 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढेगी। 14 जूल के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा कर पुण्यरर्जन भी करेंगे।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन दीपक जलाएं और महालक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं दशम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुपंचम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भश्रेष्ठतम रहेगा। बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे।

23 अक्तूबर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से अपना विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। गुरु के गोचर के बाद क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहें। खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

12 अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलने की सम्भावना है। लॉटरी, शेयर इत्यादि से भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। कर्जे से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि से घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में वैचारिक मतभेद से आप मानसिक अशान्ति महसूस सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। 5 मार्च के बाद परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफीअनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मेंबच्चों का प्रवेश हो जाएगा।

5 मार्च से गुरु का गोचरप्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकीशिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। बच्चोंके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपको छोटी-मोटी बीमारियां हो सकती हैं। मई के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को उत्तमबनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यवसायी इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें सफलता भी होंगे।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 5 मार्च से समय आपके लिए काफीशुभ हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के कारण वर्षारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राओं के भी प्रबल योग बन रहे हैं। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

गुरु के गोचर के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। यात्रा के दौरान किसी से बहुत अच्छी मित्रता होगी। 12 अगस्त के बाद धार्मिकयात्रा का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक धार्मिक कार्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना, तीर्थ स्थलों की यात्रा इत्यादि करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय अति उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। अष्टम स्थान के केतु आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकते हैं।

आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा। अपने कार्य व्यवसाय में रिश्तेदारों के साथ साझेदारी न करें। नहीं तो उनके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण बीमारी दूर करने में संचित धन का व्यय हो सकता है। गुरु ग्रह का गोचर अशुभ होने से धनागम में रुकावट व आर्थिक तंगी का योग बना हुआ है। परन्तु 18 मार्च के बाद अचानक व्यापारिक उन्नति होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी व तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न करेंगे। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ें या विवाद में न उलझें और अपनी वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय धर्म पत्नी के

साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। प्रेम संबंध बहुत ही मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस समय के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लपरवाही न करें। आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी ग्रस्त होंगे। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। यदि पहले आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित करने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष की शुरुआत करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगी। परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको 18 मार्च के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

शिक्षार्थी इस समय योग्यता के अनुसार सफलता पाने में सफल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बड़ी कोई अड़चन नहीं आयेगी। अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि रहेगी। विदेशी भाषा सीखने की ओर आकर्षित होंगे। आपका उत्साह व साहस बना रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 18 मार्च से आप अपनी पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्राओं से आपको लाभ होगा।

वर्षान्त में नौकरी करने वाले व्यक्तियों के स्थानान्तरण के योग बन रहे हैं। परन्तु यह बदलाव आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 18 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहें है तो आपके लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगो को अच्छा लाभ मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

जुलाई के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। किसी प्रकार का जोखिम मोल न लें नहीं तो व्यापार में हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम भाग आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। एकादशस्थ शनि के कारण आर्थिक स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है, परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण अचानक कुछ व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वर्ष का पूर्वार्द्ध सम्पन्नता से गुजरेगा।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। धोखा या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध सामान्य रहने वाला है। द्वितीय स्थान का राहु प्रतिकूल होने के कारण आपको घरेलू मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर

झगड़ा या विवाद में नही पड़ना चाहिए। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने के लिए आपको अपने जीवन साथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। एकादशस्थ शनि के कारण बड़े भाइ-बहनों के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मदभेद होने की संभावना बन रही है। पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है परन्तु माता के लिए शुभ है। आपका एवं आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने सेघरेलू माहौल ठीक नहीं सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण यह समय आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। दूसरे संतान के लिए भी यह वर्ष ज्यादा अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बढ़िया रहेगा। आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान का शनि धीरे-धीरे आपकी शारीरिक ऊर्जा कम कर सकता है, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। अतः राहु ग्रह की शान्ति स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के पूर्वार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

यदि आप नौकरी करते हैं तो साल का उत्तरार्द्ध कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। लोग आपके विरूद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाये जा सकते हैं,

जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है और आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का पूर्वार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। मार्च के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश के शनि आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा और नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि द्वादश भाव में और सिंह राशि का राहु लग्न स्थान में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें वरना कानूनी वाद-विवाद में फंस सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएं, सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो उस में आपको हानि हो सकती है। पहले से चले आ रहे कार्यों को सुचारु रूप से चलाते रहें। उसमें आपको सफलता मिल सकती है। नवमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से अनुभवी लोगों का सफलता मिलेगी। जो लोग शेयर बाजार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा बहुत लाभ मिल सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। यदि वह आपसे उधार मांग रहा हो तो बेहद ही सावधान रहें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। गृहस्थ जीवन की बात करें तो पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। अप्रैल के बाद आपके छोटे भाई बहनों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। आपके माता पिता

जी के लिए यह समय काफी शुभ है। परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। समाज में आपका सम्मान और बढ़ेगा। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़ी सावधानी से से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। 6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रहेगी।

अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या में भी सुधार करना होगा। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। आँखों में समस्या हो सकती है और चश्मा भी लग सकता है। जिन लोगों को पहले ही चश्मा लग चुका है उनके चश्मे का नम्बर बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजसता की स्थिति बनी रहेगी। विदेशी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह साल बहुत ही शुभ रहेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको अत्यधिक परिश्रक करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए वर्ष प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। अष्टम स्थान का गुरु प्राचीन दर्शनीय स्थलों या सामुद्रिक स्थलों की यात्रा करा सकता है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगे।

नवमस्थ गुरु के कारण आप धार्मिक यात्रा भी अधिक करेंगें। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके समस्त धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा, जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रियाएं कम ही कर पाएंगे। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आपके दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में सुधार होगा। गरीबों को खाना खिलाने या उनकी सहायता करने में आपको संतुष्टि मिलेगी।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपने वजन के बराबर अन्न दान करें जिसके प्रभाव से शारीरिक व्याधियां दूर होंगी।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। जिससे राहु ग्रह का दुष्प्रभाव समाप्त होगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु नवम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं। आपके कार्यों में अचानक हानि या कोई बड़ी समस्या आ सकती है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु नवमस्थ गुरु के कारण आपका भाग्य साथ देगा और आप सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे।

अप्रैल के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। व्यापार में किसी पर अवश्यकता से ज्यादा विश्वास न करें नही तो हानि हो सकती है। 27 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह तबादला आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वादश स्थान का शनि अनावश्यक खर्च भी बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चे पर अंकुश लगाएं।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक अनुकूल नहीं है। व्यावसायिक व्यस्तता के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए आप

अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकास करें। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपका मतभेद हो सकता है। माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

15 अप्रैल के बाद पारिवारिक रूप से समय काफी अनुकूल हो जाएगा। आपको परिवार के बड़े सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। उनके साथ आपके संबंध भी खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। उनके उन्नति के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग बना रही है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश मिल सकता है।

अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। 27 अगस्त के बाद शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान आ सकता है। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। इस यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नौकरी वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके घर के पास हो सकता है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी, जिससे परमात्मा के प्रति आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होगी।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं व हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- दुर्गा बीसा व आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बना रहा है। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अप्रैल के बाद गुरु का गोचर किंचित शुभ हो रहा है। अतः व्यापार व नौकरी में कुछ सुधार होगा। शेयर बजार से जुड़े जोगो को लाभ मिलेगा। क्रय विक्रय, व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियो को सावधान रहना चाहिए नही तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे।

16 सितम्बर से आप का समय प्रभावित हो रहा है। मुख्यतः ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बन रहा है। इस समय आपको खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। अप्रैल के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। सप्तम स्थान पर

शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी ख्याति समाज में और बढ़ेगी।

16 सितम्बर से आपका पारिवारिक माहौल प्रभावित हो सकता है। अचानक आपकी धर्म पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। कुछ लोगों का व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगेगा। फिर भी आपको उन लोगों के साथ स्नेह व प्रेम बनाए रखना पड़ेगा। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उसके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय काफी शुभ हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु सितम्बर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको अपने अन्दर कमजोरी जैसा अनुभव होगा।

अप्रैल के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय के सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। सितम्बर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। छोटी-मोटी यात्राएं प्रभावित होंगी। परन्तु द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अप्रैल के बाद जन्म भूमि की यात्रा होगी।

26 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि व्यवसाय संबंधित यात्रा भी करा सकती है। इस वर्ष आपकी पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं होगी। मुख्यतः सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। तन्त्र, यन्त्र व सिद्धि के प्रति आपका रुचि बढ़ेगी। 26 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य भी अधिक करेंगे।

- राहु मन्त्र का पाठ करें व शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान का गुरु व्यापार में उन्नति का योग बना रहा है। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यावसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी लोगों व वरिष्ठ अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मई के बाद समय कुछ प्रभावित होगा। अतः इस समय के अंतराल में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई गुप्त शत्रु आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न कर सकता है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे और अक्टूबर के बाद काफी हद तक सफल भी रहेंगे। उस समय आपके कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। धनार्जन करने में आपको भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेन देन में सावधान रहें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोगों की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। अक्टूबर के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका पारिवारिक माहौल ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आप बड़े ही विवेक से काम लें और सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। आप मानसिक रूप से परेशान भी रह सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। अक्टूबर के बाद जीवनसाथी के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसके उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

11 मई के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी अनुशासनहीन हो सकती है, जिससे उनकी उन्नति में किंचित व्यवधान आ सकता है, परन्तु अक्टूबर के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। 11 मई के बाद चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी ही भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का अधिक सेवन करें। 7 अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उच्च शिक्षा हेतु अच्छे

शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

मई के बाद उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। यदि आप अपने लक्ष्य में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह वर्ष शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि छोटी-मोटी यात्रा कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। 11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप दुखी रहेंगे।

यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि मई के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना ही आप अपना धर्म समझेंगे। अक्टूबर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे।

- वीरवार के दिन केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष लाल धागे में धारण करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर नित्य उसका पूजन करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपित करें और नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करने की काशिश करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। हालांकि अप्रैल से समय काफी शुभ हो रहा है। कार्य व्ययवाय में सुधार होगा। वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे।

आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधी में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। यदि आप खनिज एवं खान विभाग व रासायनिक विभागों से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो अच्छी सफलता मिलेगी। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जाएगी। 4 नवम्बर के बाद समय नौकरी करने वालों के लिए शुभ नहीं है। आपके वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेत उत्पन्न हो सकते हैं तथा कार्य स्थल का वातावरण खराब हो सकता है।

धन संपत्ति

द्वितीय स्थान के शनि कुछ अनावश्यक खर्चे ला सकते हैं जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। घर परिवार में रोग व्याधि की अधिकता होने से भी आपके अपव्यय होंगे। पैसे के लेन देन के समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाने की जरूरत है तथा जोखिम भरे कार्यो में धन निवेश करने से बचें।

5 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होते ही धनागम के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे तथा आपका चौमुखी विकास होगा। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप अत्यधिक व्यय करेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च होगा। मित्र या भाइयों के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के शनि आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। अतः आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आपकी पत्नी के साथ समन्वय मधूर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

आपके भाइयों की उन्नति होगी। पिता जी के लिए भी यह समय शुभ है। 2 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। आप उच्च मान संमान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके सामाजिक प्रभाव व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सरकारी क्षेत्र में आपको काफी सम्मान मिलेगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। परन्तु 4 नवम्बर से समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे हैं। पंचमस्थ केतु पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। अतः आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उनकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

3 मार्च के बाद समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु 2 जून के बाद समय फिर से अच्छा हो जाएगा तथा उसके बाद पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। उस समय के अंतराल में बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे जिससे आप उनसे प्रसन्न रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी भुगत रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है, नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हालांकि 2 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना प्रारम्भ हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन की ग्रहण करेंगे। अर्थात् सादा खाना उच्च विचार वाली युक्ति आप पर पुर्ण रूप से चरितार्थ होगी। 4 नवम्बर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है उसके बाद आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को ज्यादा सफलता नहीं मिलेगा।

यात्रा-तबादला

3 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होंगी। 4 नवम्बर से सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होने का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। मार्च के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गौशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान करेंगे। 2 जून के बाद आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

- सोमवार के दिन शिव जी पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ .ाएं।
- वीरवार के दिन केला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं प्रथम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कई कार्यों में सफल होंगे। व्यापार में बड़े बड़े निर्णय लेने या विकास की योजनाओं पर ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही कदम बढ़ाएं। कानूनी मामलों से बचें क्योंकि वर्षारम्भ में शनि एवं गुरु की युति अच्छी नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। अधिक आत्मविश्वास आपको मुश्किल में डाल सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। आप अपने मनपसंद क्षेत्र में अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

अप्रैल से जून तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें नहीं तो कार्य व्यवसाय में नुकसान हो सकता है। परन्तु जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आप प्रसन्न रहेंगे व अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वंदियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। 11 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने से बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्यस्थल पर आपकी एक अलग पहचान होगी।

धन संपत्ति

आमदनी में बढ़ोत्तरी होने के कारण आप बचत करने में भी सफल रहेंगे। किसी वसीयत के माध्यम से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप धन को धार्मिक कार्य में खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद धन हानि के योग हैं अतः कोई जोखिम भरा निवेश करने से बचें साथ ही पैसों की सुरक्षा को लेकर चिंतन करें। जून के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। वर्षान्त निवेश के लिए बहुत ही शुभ है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य

आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद अचानक आपकी माताजी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसके नकारात्मक प्रभाव से पूरा परिवार प्रभावित हो सकता है। चतुर्थ स्थान का केतु वैचारिक मतभेद भी करा सकता है। आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव की अनुभूति हो सकती है। परन्तु 28 जून से समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक शान्ति एवं सामाजिक उन्नति के लिए उत्तम है। पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका एक अलग प्रकार का प्रभाव होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में और अधिक वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। वर्षान्त आपकी दूसरी संतान के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी तथा आप मानसिक रूप से प्रसन्न व सन्तुष्ट बने रहेंगे। आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे। आप रोग व्याधियों से दूर होंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा।

खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा। अधिक खान-पान व बाहर का खाना खाने से फूड पॉइजनिंग की सम्भावना है। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें। व्यवहारिक बने रहें। व्यर्थ के कार्यों में समय खराब न करें, इसके फलस्वरूप आप परेशान रह सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें एवं अधिक आत्मविश्वासी न बनें वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह साल मिला जुला रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है। विदेश में वांछित उन्नति के लिए वर्षान्त श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय से संबंधित यात्राओं की अधिकता होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ स्थानान्तरण होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। साल के मध्य में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। कुछ गलत फहमियों से भी आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि 6 मई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेगा।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारू रूप से चलाते रहें। यदि साझेदारी में कार्य कर करे हैं तो 26 सितम्बर के बाद आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। लाभ के साथ-साथ चुनौतियां भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेन-देन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरे निवेश करने से बचें। राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को आर्थिक हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके छोटे

भाई बहनों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

6 मई के बाद पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। लेकिन आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में कुछ कमी आ सकती है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा रहने वाला है। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्व ारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। 6 मई से जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। उसके बाद पूरा वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

पहले से चली आ रही बीमारी उग्र रूप ले सकती है इसलिए सावधानी बरतें। 26 सितम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। अतः शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन व महामृत्यंजय का जाप कराएं जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा रहेगा। 6 मई के बाद आपको वांछित सफलता मिलेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा रहने वाला है। 26 सितम्बर के बाद नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी।

सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराते रहेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि 26 सितम्बर के बाद दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है, इस उद्देश्य पर रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे।

- प्रत्येक सोमवार के दिन शिवलिंग पर जल चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं तृतीर्य भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा सभी प्रकार से आपकी सहायता करने में तत्पर्य रहेंगे। कार्य स्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। 10 जून से अगस्त तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आजीविका के क्षेत्र में कुछ कमी आ सकती है, जिससे आय के स्रोत प्रभावित होंगे। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल द्वारा सभी प्रतिद्वंदियो को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति करने में आपको कर्ज भी लेने पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ लाभप्रद रहेगा। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। 22 जून के बाद पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। किसी के बहकावे में आकर अपने धन को निवेश न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेशी धन व वसीयत की प्राप्ति होगी। गुप्त रूप से भी आपको धन लाभ होगा। यदि आप निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए श्रेष्ठ है। वर्षान्त में आपके कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। अतः उस समय अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावारण रहेगा। आपकी माता के लिए यह समय शुभ है। जून के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी परन्तु संबंधो में मधुरता बनी रहेगी। मित्र वर्ग आप से नाराज हो सकता है। राहु के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी दे सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। आपके प्रति बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आएगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों को किसी नौकरी या रिसर्च के कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेते हैं तो सफलता सम्भव है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह बहुत शुभ समय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप कुछ चिन्ता का अनुभव करेंगे। अकारण चिंता करने से कुछ हासिल नहीं होगा। आप चिंताओं से उबरने की कोशिश करें वरना आपको किसी मानसिक रोग अथवा मस्तिष्क सम्बन्धी विकार का सामना करना पड़ सकता है। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियां हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शिक्षा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला फल देने वाला है। विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय काफी श्रेष्ठ है। आपका नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान रहेगा।

राहु के कारण याद करके भूलने की प्रवृति बनेगी। अष्टम स्थान का राहु मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। आपका रुझाान राजनैतिक, तंत्र-मंत्र, विद्या सिद्धि रोमांचकारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे है। 10 जून के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थान की यात्रा होगी। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राएं करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का आरम्भ अनुकूल नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेगा। आप चाह कर भी पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। मानसिक अशान्ति के कारण ध्यान योग व मन्त्रोच्चारण में आपका मन नहीं लगेगा। परन्तु काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके भी मिल सकते हैं। व्यापार में पूंजी लगाने वाले नए लोग भी मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के कारण कुछ विरोधी व गुप्त शत्रु आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप उन पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम मिलेंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी इच्छाएं पूरी होंगी।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के बाधित मार्ग खुलेंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन लगातार होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी। आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा।

30 जुलाई के बाद किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है। अतः पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें, नहीं तो अष्टम स्थान का राहु अचानक धन हानि करा सकता है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपने खर्चों पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य व मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिसमें परिवार के सभी लोग सम्मिलित होंगे।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा इस वर्ष आप अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। समाज में आपका दबदबा बना रहेगा। कोई भी व्यक्ति आपके विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर पाएगा तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही शुभ है। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं, तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद फिर से उत्तम हो जाएगा। आपके बच्चे धर्म कार्य व अच्छे कार्यों में समय ज्यादा व्यतीत करेंगे। आपकी आज्ञा के पालन में सदैव तत्पर्य रहेंगे। सितम्बर के बाद नवविवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी जो आपको शारीरिक रूप से आरोग्य रखने में सहायता करेगी तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ अनुभव करेंगे। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। अष्टम स्थान का राहु जल तत्व राशि होने के कारण कफ, सर्दी तथा जुखाम इत्यादि बीमारियों से पीड़ित कर सकता है। मोटापा तथा पेट संबंधित बीमारी भी हो सकती हैं। अतः उस समय घी या तला हुई वस्तु का सेवन कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहने वाला है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आध्यात्मिक शिक्षा, योग शिक्षा तथा शोध कार्य करने वाले के लिए बहुत ही शुभ है। इन लोगों को वांछित उन्नति मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने

लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी छोटी बड़ी यात्राएं खूब होंगी। धार्मिक यात्रा का अधिक आनन्द लेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राएं प्रभावित होंगी।

नौकरी करने वालों के लिए मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग बने हुए हैं। आप अपने जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अनुकूल है। विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा नीली वस्तु का दान करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- अपने पूजा घर में बुधवार के दिन श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें, क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ नहीं है। गैरकानूनी क्रिया-कलापों में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि होने की संभावना हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।

नौकरी करने वाले जातकों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बना कर रखने चाहिए। फरवरी के बाद व्यवसाय करने वालों को अपनी व्यावसायिक प्रगति में अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। बिजनेस में धीमी चाल से प्रगति होगी। शेयर बाजार एवं सट्टेबाजी आधारित गतिविधियों में किस्मत अजमाने का प्रयास न करें अन्यथा आपका धन लंबे समय के लिए फँस सकता है। जल्दबाजी में लिए गए निर्णय आपको आर्थिक हानि पहुँचा सकते हैं। किसी भी बिजनेस के लिए सोच समझकर ही साझेदार शामिल करें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक स्थिति के लिए उत्तम रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

आर्थिक मोर्चे पर आपको विशेष सावधानी रखनी होगी क्योंकि आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। वैसे आमदनी का स्रोत बना रहेगा तथा दैनिक आमदनी में कोई रुकावट नहीं आएगी। अगर किसी को धन उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापिस मिलने की संभावना कम है। आप आक्स्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें। मंहगी व सुख सुविधा वाली वस्तुओं में धन लगा सकते हैं जो आपके लिए धन का अपव्यय ही होगा इसके परिणामस्वरूप आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपके पत्नी के साथ संबंध खराब हो सकते हैं। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के

लिए अच्छा नहीं होता, अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड़वाहट आने की संभावना है।

माता व बड़े-बुजुर्गों का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है। किसी करीबी व्यक्ति के साथ आपकी कहा-सुनी हो सकती है। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। आपके साथ विश्वासघात हो सकता है यानी आप जिन लोगों पर भरोसा करते हैं वे धोखा दे सकते हैं।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है, परन्तु 16 फरवरी के बार समय सामान्य हो जाएगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का पूरा फल मिलेगा।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां आ सकती हैं तथा उनकी उन्नति में व्यावधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखो का विशेष ध्यान रखें। यदि पहले से चश्मा लगा हुआ है तो उसके नंबर की जांच करा लें। आपके आत्मवश्वास में कमी आ सकती है।

लंबे समय से चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा। उसके उपचार में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। आक्स्मिक चोट लगने की संभावनाएं भी बनी हुई हैं। अनिद्रा की शिकायत आपको परेशान कर सकती है। अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें नहीं तो मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से सम्बन्धित कार्य करते समय सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएँ। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो के लिए यह साल सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी भी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। दी गई परीक्षाओं का परिणाम

हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में धार्मिक यात्राएं करने का अवसर प्राप्त होगा। 16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ेगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(10/11/2009 - 10/11/2027)

राहु की अन्तर्दशा 10/11/2009 को आरंभ होकर 10/11/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 साल है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु 12वें भाव में स्थित है। राहु की छठे भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपको सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा, आराम और उच्च शिक्षा की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या, यात्रा, व्यय तथा धार्मिक कार्यों की ओर आपका झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या हो सकती है। राहु के शनि की राशि में होने के फलस्वरूप आपको चिरकालिक समस्या, वातजन्य रोग, पीठ में दर्द तथा पैरों की समस्या हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको विषाणुजन्य संक्रामक रोग, बुखार, स्नायविक-दुर्बलता तथा आँख में पीड़ा हो सकती है। कुछ उपाय कर इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। आपको कुछ व्यय, धन-संचय में कठिनाई हो सकती है। उचित आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। जहाँ तक सम्भव हो सट्टे के लेन-देन से बचें। बिरोधियों ओर विदेशी स्रोतों से कुछ लाभ हो सकता है। जीविका-व्यवसाय के लिए विज्ञान, विमान उड्डयन, ज्योतिष, विद्युत इन्जीनियरिंग, पुरातत्त्व, रेडियोग्राफी आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रोनिक सामान, एण्टीबायोटिक्स, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक रहेगा। नौकरी पेशा लोगों का विदेशी स्रोतों से कारोबार होगा। आप अनुबन्ध पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे और आपको गैर पारम्परिक स्रोतों से लाभ हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को उनके कार्यों में सफलता, सम्पत्ति तथा अच्छा लाभ होगा। कार्य के सिलसिले में आपका छोटी यात्रा हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में कुछ सुख मिलेगा। कुछ धन-संचय हो सकता है किन्तु जमीन-जायदाद के सभी लेन-देनों में सावधानी बरतनी चाहिए। इस दशा के दौरान आपकी दूर की यात्रा हो सकती है। विदेश यात्रा भी सम्भव है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी को बनाये रखने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। आप अपने शिक्षा-संकाय या संस्थान में परिवर्तन कर सकते हैं। आपकी शोध-परियोजना सफल होगी। विज्ञान, दवा, विमान-इन्जीनियरिंग, विधि तथा बौद्धिक कार्यों से सम्बद्ध विषयों में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों का कुछ परिवर्तन होगा और उन्हें आपके सहयोग की आवश्यकता होगी। आपके जीवनसाथी को लाभ, विरोधियों पर विजय, कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं तथा यात्रा होगी। आपकी माता की दूर की यात्रा और तीर्थाटन होगा जबकि आपके पिता की जमीन जायदाद में वृद्धि होगी तथा आराम मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को यश और ख्याति की प्राप्ति, तीर्थाटन और लाभ में वृद्धि होगी जबकि बड़ों को लाभ वृद्धि, उत्तम शिक्षा तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी यात्रा, व्यय और परिवर्तन होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी जीवन-वृत्ति में प्रगति तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शनि की अन्तर्दशा में लाभ, व्यय और दूर की यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान परिवार से सुख, उत्तम शिक्षा, विवाह, तथा साझेदार लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, परिवर्तन तथा कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। सूर्य की अन्तर्दशा में विरोधियों पर विजय होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान सन्तान सुख और सौभाग्य की प्राप्ति तथा शिशु-जन्म हो सकता है जबकि मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, समृद्धि तथा सुख की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :– राहु – सूर्य
(29/05/2024 - 23/04/2025)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/11/2009 को प्रारंभ होकर 10/11/2027 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 29/05/2024 को प्रारंभ होकर 23/04/2025 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर–सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे–बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर जाकर रह सकते हैं। जंगल आदि में निवास हो सकता है। अप्रसन्न हो सकते हैं। हृदय रोग हो सकता है। सावधान रहना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

अंर्तदशा :– राहु – चन्द्र
(23/04/2025 - 23/10/2026)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/11/2009 को प्रारंभ होकर 10/11/2027 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 23/04/2025 को प्रारंभ होकर 23/10/2026 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

चंद्रमा मन और माता का कारक है। लग्न में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

आप सुंदर, संवेदनशील और मूड़ी हैं। इस अवधि में घरेलू सुख और माता से संबंध उत्तम होंगे।

आप बेचैन, संवेदनशील और कल्पनाशील होंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी मगर कुछ बाधाएं आएंगी। आय अच्छी होगी, उच्चपद प्राप्त होगा। क्रोध में आपा खोने से बचना अनिवार्य है, अन्यथा बहुत हानि होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

चंद्रमा को चंद्र उदय के समय मंत्रोच्चार करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :– राहु – मंगल
(23/10/2026 - 10/11/2027)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 10/11/2009 को प्रारंभ होकर 10/11/2027 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 23/10/2026 को प्रारंभ होकर 10/11/2027 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 8, 11, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप निर्णय लेने में जल्दबाजी कर सकते हैं, जिससे बाद में पछताना पड़ सकता है। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा, भावुक होंगे। क्रोध अधिक रहेगा, धोखाधड़ी की भावना भी मन में आ सकती है। उदर का या अन्य कोई रोग हो सकता है। मष्तिष्क विचलित हो सकता है, दूसरों का बुरा करने की भावना मन में आ सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का लाल मूंगा सोने या तांबे में जड़वाकर, कच्चे दूध से धोकर, मंगल यंत्र से 11 बार छूकर, मंगलवार को प्रातःकाल हनुमान, या गणेश जी, या शिवजी की पूजा के बाद धारण करें।

महादशा :- गुरु
(10/11/2027 - 10/11/2043)

आपकी कुंडली में गुरु की महादशा 10/11/2027 को आरम्भ तथा 10/11/2043 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्मकुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। षष्ठ भाव बीमारी, रोग, कर्मचारी, नौकर, ऋण, शत्रु, मामा, तथा क्रोध का भाव है। गुरु स्वभावतः शुभ ग्रह है जिसकी षष्ठ भाव में स्थिति तथा दशम, द्वादश तथा द्वितीय भाव पर दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको कभी-कभी छोटी समस्या हो सकती है परन्तु कुल मिलाकर आपके लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य :

गुरु के रोग, शत्रु तथा ऋण के द्योतक षष्ठ भाव में स्थित होने के फलस्वरूप आपको रोग से मुक्ति मिलेगी। पैर तथा यकृत जनित रोग के प्रति सतर्कता बरतें।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की षष्ठ भाव में स्थिति तथा जीविका, खर्च और धन से संबंधित द्वादश, दशम एवं द्वितीय भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको इस दशा-काल में अपने धन की वृद्धि करने का पर्याप्त सुअवसर मिलेगा। आप अपने स्रोतों में वृद्धि करेंगे तथा विलासिता की चीजों पर खर्च करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु की दृष्टि दशम् भाव (केंद्र तथा कर्म भाव), द्वादश अर्थात् व्यय भाव तथा द्वितीय यानी धन भाव पर होने के कारण आपको अपने कर्म क्षेत्र में ऊपर उठने तथा धन कमाने का सुअवसर प्राप्त होगा। कभी कभार घाटे से बचने के लिए कुछ सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवनसाथी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे तथा आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

अंर्तदशा :- गुरु - गुरु
(10/11/2027 - 28/12/2029)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/11/2027 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/11/2027 को प्रारंभ होकर 28/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। नौकरी के अवसर मिलेंगे। मातहतों का सहयोग मिलेगा। मुकदमे में जीत होगी। जायदाद से आय में वृद्धि होगी; किरायेदार सहयोग करेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। समाज की भलाई का कार्य करेंगे। सफल होंगे। उत्तम वस्त्र, उत्तम भोजन आदि सब सुख उपलब्ध होंगे। बहुत धनी बनेंगे। मृदु, प्रभावशाली और हास्यमिश्रित वाणी के कारण लोकप्रिय होंगे।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता उत्तम चरित्र और सिद्धांतों वाले होंगे और सफलता प्राप्त करेंगे। माता की इच्छाएं पूर्ण होंगी; विचारों के आदान-प्रदान से आय बढ़ेगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, धन, सुख-सुविधाएं, उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी होंगे, कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधासंपन्न रहेगा। परामर्शदाता सौभाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों की यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - शनि
(28/12/2029 - 11/07/2032)

आपकी बृहस्पति की महादशा 10/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 28/12/2029 को प्रारंभ होकर 11/07/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। मातहत सहयोग करेंगे। स्पर्धियों और विरोधियों पर विजय होगी। प्रोन्नति और प्रगति होगी मगर उच्चाधिकारियों से कुछ संघर्ष करना पड़ेगा। खर्चे बढ़ेंगे, मगर आय में भी वृद्धि होगी। अध्यात्म, तंत्र-मंत्र और धर्म में रुचि रहेगी। बाधाओं को पार करने के लिए उत्साह बना रहेगा। भाई और मित्र मदद करेंगे।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं होंगी; पराविद्या में रुचि होगी। आपके पिता की

प्रोन्नति हो सकती है। माता को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए परीक्षा में सफलता, अप्रत्याशित परिवर्तन का संकेत है।

आपकी संतान का धनार्जन उत्तम होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो आय में वृद्धि होगी ; प्रोन्नति होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति हो सकती है; सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों की यात्रा हो सकती है; खर्चे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मछली को भोजन खिलाएं।

अंर्तदशा :- गुरु - बुध
(11/07/2032 - 17/10/2034)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 11/07/2032 को प्रारंभ होकर 17/10/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपको शेयरों से लाभ हो सकता है। संतान से खुशियां मिलेंगी। प्रसन्न और आशावान रहेंगे। लेखन कार्य के लिए उपयुक्त समय है। नाटकों में रुचि हो सकती है। वेद दर्शन में दिलचस्पी ले सकते हैं। सलाहकार पद पर कार्य कर सकते हैं। धनागम, सम्मान, विवाहित सुख और शिशु के जन्म का संकेत है। मौलिक उपलब्धि का समय है। आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता की यात्रा हो सकती है; दर्शनशास्त्र में रुचि ले सकते हैं। माता का घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए धनागम, विवाह, साझेदारों के साथ अधिक विचार-विनिमय का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी, धनलाभ होगा और ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है; उच्चाधिकारी अप्रसन्न हो सकते हैं। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, परिवर्तन संभव है, साझेदारों से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए हरे वस्त्र, कपूर और मूंग की दाल का दान करें।

अंर्तदशा :- गुरु - केतु
(17/10/2034 - 22/09/2035)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/11/2027 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 17/10/2034 को प्रारंभ होकर 22/09/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और

शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। विरोध और बाधाएं संभव हैं। मातहतों और सहकर्मियों से संबंध उत्तम रहेंगे। माता पक्ष के लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। किरायेदार सहयोग करेंगे; किराये से अच्छी आमदनी हो सकती है। ज्ञानार्जन होगा; अध्यात्म में रुचि होगी। लाभकारी यात्राएं हो सकती हैं। नयी मित्रता से लाभ हो सकता है, कार्यों में सफलता मिलेगी, प्रसिद्धि मिलेगी।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आपके पिता कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे ; धनार्जन उत्तम होगा। माता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, माता से मधुर संबंध, परिवर्तन और धन के संचय का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, प्रसन्न रहेंगे, अपने पैरों पर खड़े होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम रहेगा। परामर्शदाताओं की किस्मत चमकेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों, दांतों और गुदा के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भूरा कुत्ता पालें।

अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
(22/09/2035 - 23/05/2038)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 10/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 22/09/2035 को प्रारंभ होकर 23/05/2038 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपको पारिवारिक सुख मिलेगा; सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। सरकारी नौकरी या उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। प्रगति की ओर उन्मुख रहेंगे। प्रसन्नचित्त होंगे। मित्र सहायता करेंगे। प्रसिद्धि और धन की प्राप्ति होगी। शिशु का जन्म हो सकता है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। शिक्षा उत्तम होगी। बड़े भाई-बहनों और चाचा से मधुर संबंध रहेंगे। मानसिक शांति और घरेलू सुख रहेंगे। धनागम होगा; समृद्ध बनेंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता धनी बनेंगे; लंबी यात्रा हो सकती है। माता को विभिन्न माध्यमों से धन मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए आकांक्षाओं की पूर्ति, विवाह, साझेदारी में सफलता और व्यापार में लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, प्रभाव बढ़ेगा, प्रसिद्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन हो सकता है; स्पर्धियों की संख्या में कमी आएगी। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, समृद्धि बढ़ेगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे, उत्तम कर्मचारी मिलेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचन तंत्र के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए भोजन करने से पहले गाय को रोटी दें।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(23/05/2038 - 12/03/2039)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/05/2038 को प्रारंभ होकर 12/03/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे और सुख-सुविधाओं से संपन्न होंगे। सट्टेबाजी में धनार्जन हो सकता है। हाथ में लिये सब काम पूर्ण होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घर में शिशु का जन्म हो सकता है। उच्चपद मिल सकता है; सरकार से लाभ होगा। विशिष्ट व्यक्तियों से मित्रता हो सकती है। कार्यों में सफलता मिलेगी, धनागम होगा।

आपके जीवनसाथी की इच्छाएं पूर्ण होंगी, धनार्जन होगा। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे। माता को धन का लाभ होगा; घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए इच्छाओं की पूर्ति, साहित्य या संचार माध्यम से लाभ, प्रोन्नति, वांछित स्थान पर तबादला, व्यापार में लाभ और उच्चाधिकारियों की कृपा का संकेत है।

आपकी संतान में आत्म-विश्वास उत्तम होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तरक्की करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं के कार्य में भी कुछ परिवर्तन होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली उदर रोग हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल गाय, वस्त्र, लाल चंदन और गुड़ का दान दें।

अंर्तदशा :- गुरु - चन्द्र
(12/03/2039 - 11/07/2040)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 12/03/2039 को आरंभ होकर 11/07/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न और सुविधा संपन्न होंगे। परिवारजनों और अन्य लोगों

की सहायता करेंगे। विवाहित जीवन का सुख मिलेगा, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। मनोरंजन के लिए यात्रा पर जा सकते हैं। विवाह हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ-होगा, यात्रा होगी, घरेलू सुख रहेगा। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता को सफलता, धन और कार्यक्षेत्र में प्रशंसा की प्राप्ति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए बहुत से मित्र, धनलाभ, सफलता और उत्तम वाक्शक्ति का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, उन्नति होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाता पहले किये निवेश से प्रगति करेंगे। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के मंत्र का जाप करें।
ऊँ सों सोमाय नमः

अंर्तदशा :- गुरु - मंगल
(11/07/2040 - 17/06/2041)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/11/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 11/07/2040 को प्रारंभ होकर वद 17/06/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है। आपकी बुद्धि उत्तम है। उच्चपद प्राप्त हो सकता है। जरुरतमंदों की मदद करेंगे। आपकी संतान स्वस्थ और सफल रहेगी। आप शत्रुओं पर विजयी होंगे। विरासत या साझेदार के धन से लाभ हो सकता है। आपके सब कार्य लक्ष्य की ओर उन्मुख रहेंगे। सफलता आसानी से मिल जाएगी। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी धनी और सफल होंगे। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता को धनलाभ होगा, प्रसिद्धि प्राप्त होगी, नीति और धैर्य से घरेलू वातावरण प्रसन्न रखेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, धनलाभ, उत्तम स्वास्थ्य, कला में रुचि और साझेदारी से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान में आत्मविश्वास उत्तम होगा; स्वस्थ रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कोई अशुभ घटना घट सकती है। परामर्शदाताओं के कार्य में अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

महादशा :– शनि
(10/11/2043 - 10/11/2062)

शनि की महादशा आपकी कुण्डली में 10/11/2043 को आरम्भ और 10/11/2062 को समाप्त होगी। इसकी अवधि उन्नीस वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में शनि षष्ठम भाव में अवस्थित है। इसे एक खतरनाक ग्रह माना जाता है। यह निश्चित रूप से एक अशुभ ग्रह है और परिश्रम के फल की प्राप्ति में विलम्ब करता है, किन्तु उससे वंचित नहीं करता। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेने के लिए विभिन्न बाधाएं उत्पन्न करता है और उसे लक्ष्य प्राप्त करने के

लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में षष्ठम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि अष्टम, द्वादश और तृतीय भाव पर है और यह इन ग्रहों के कार्य को प्रभावित कर रहा है। षष्ठम भाव बीमारी, रोग, भोजन, रोजगार, सहायकों या नौकरों, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी और तीव्र दुःख का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

षष्ठम भाव में अपनी ही राशि में स्थित महादशा स्वामी शनि भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इसलिए आप लापरवाही के कारण बीमार हो सकते हैं। लापरवाही के कारण रोग जटिल हो सकते हैं और गंभीरता की सम्भावना है। स्थिति अन्ततः असाध्य हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

शनि की षष्ठम भाव में स्थिति अर्थ तथा सम्पत्ति में वृद्धि के लिए अनुकूल योग नहीं है। आपकी अपने सगे-संबंधियों के साथ-साथ अनेक लोगों से शत्रुता हो सकती है और आप लोगों के मातहत रहेंगे जो आपकी अर्थ तथा सम्पत्ति में वृद्धि के लिए शुभ नहीं है।

व्यवसाय :

व्यवसाय में आप दूसरों के अधीनस्थ होंगे। किन्तु ठेकेदारी, खनन, राजगीरी आदि में लाभ की सम्भावना है। आप इन क्षेत्रों में साहसी होंगे किन्तु झगड़ालू भी होंगे जो आपको हठी और अतिभोजी बनाएगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका विवाह आपके जान पहचान के जातक से हो सकता है। पारिवारिक जीवन ईर्ष्या और विवाद से भरा रहेगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपको कुछ विशेषाधिकार से वंचित रखेंगे और कर्त्तव्य पालन नहीं करेंगे। उनका यह आचरण आपके जीवन को प्रभावित और पारिवारिक जीवन को दुःखमय बनाएगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा या ज्ञान वर्द्धन अथवा बौद्धिक क्षमता में वृद्धि के लिए समय बहुत अनुकूल नहीं है।

अंर्तदशा :- शनि - शनि
(10/11/2043 - 13/11/2046)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/11/2043 को प्रारंभ होकर 10/11/2062 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 10/11/2043 को प्रारंभ होकर 13/11/2046 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शनि अशुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 8, 12, 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ज़िद्दी, झगड़ालू और साहसी हो सकते हैं। शनि की छठे भाव में स्थिति शुभ समझी जाती है। खनन या भवन निर्माण के कार्य में धनलाभ हो सकता है। इस अवधि का लाभ उठा सकते हैं। अधिक भोजन से बचें अन्यथा व्याधि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार को शिवजी की उपासना और शनि वैदिक मंत्र के जाप के उपरांत धारण करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

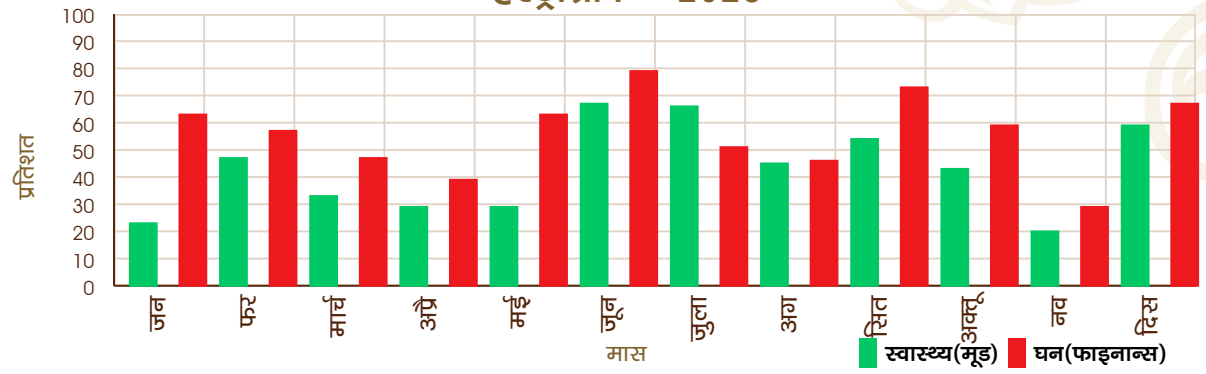

एस्ट्रोग्राफ - 2026

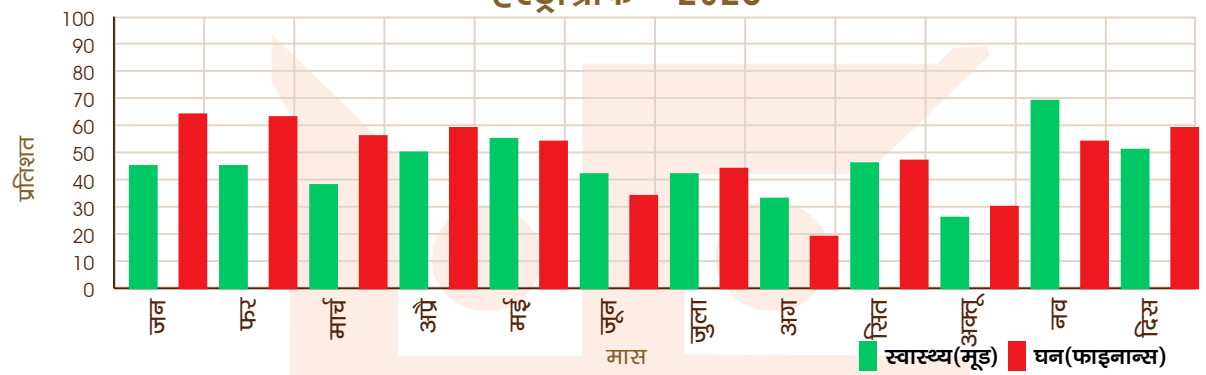

एस्ट्रोग्राफ - 2027

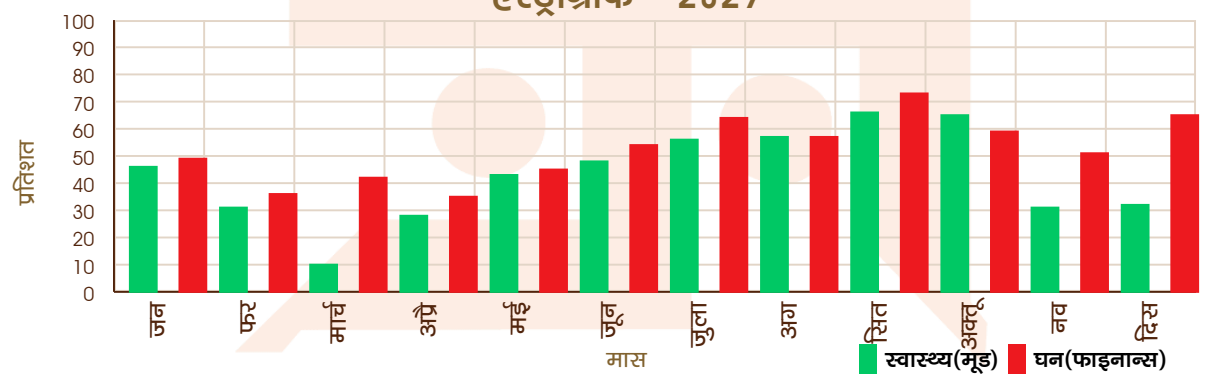

एस्ट्रोग्राफ - 2028

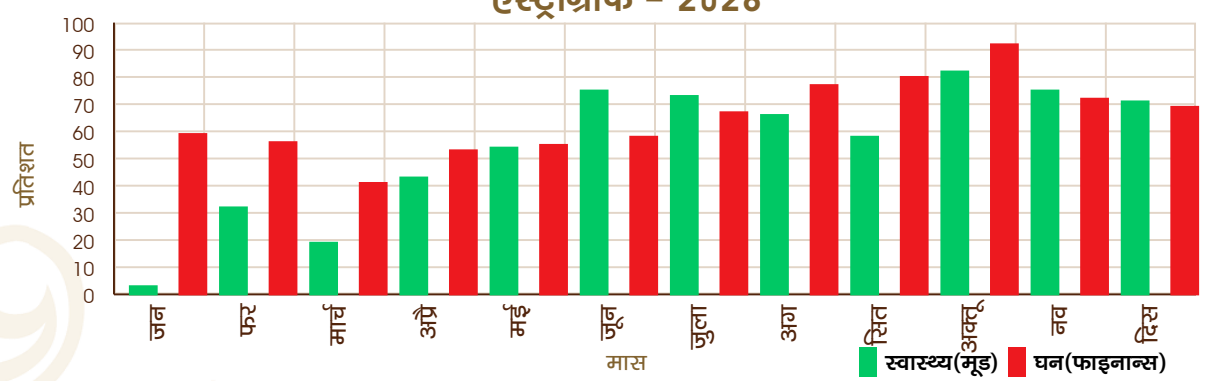

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2029

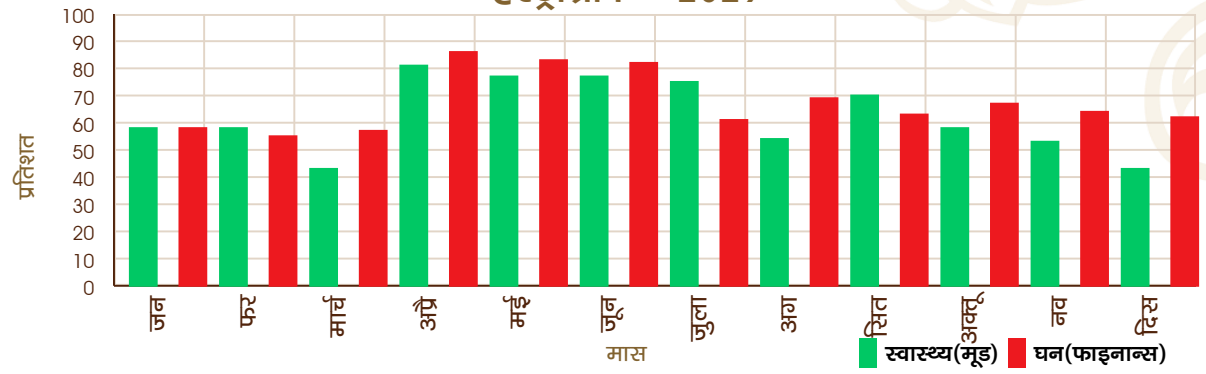

एस्ट्रोग्राफ - 2030

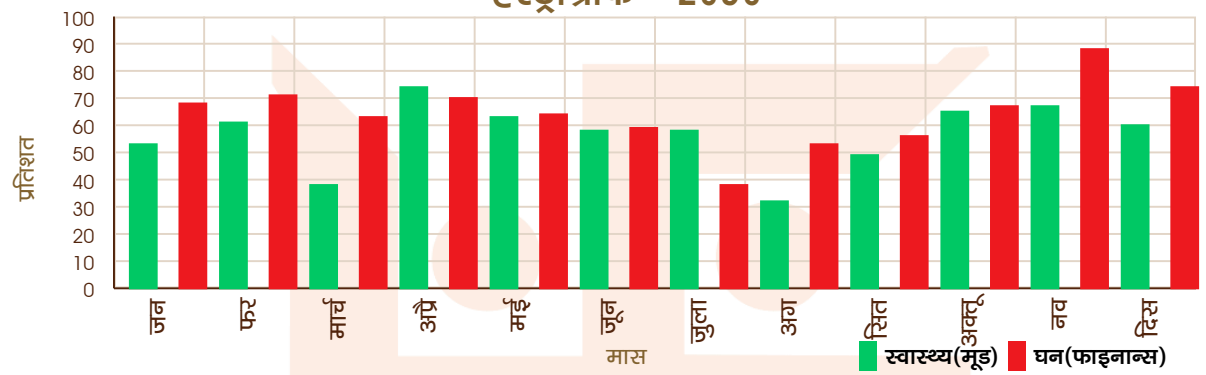

एस्ट्रोग्राफ - 2031

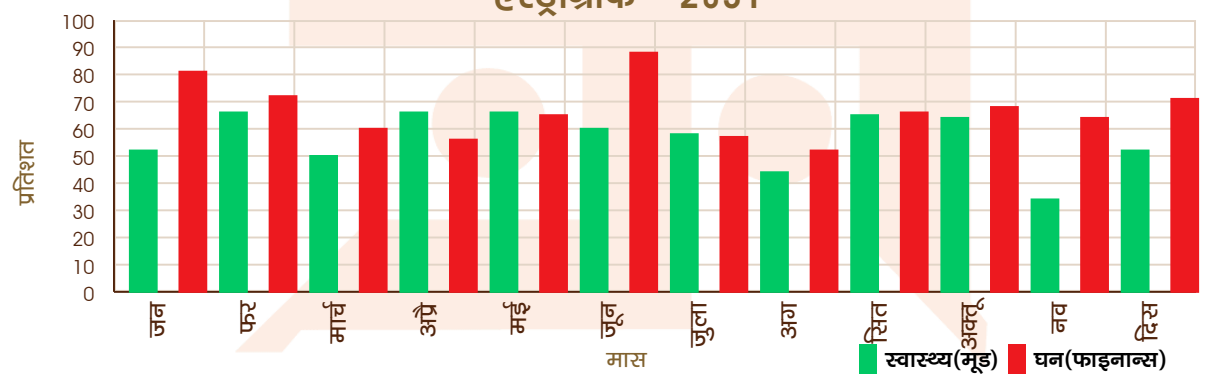

एस्ट्रोग्राफ - 2032

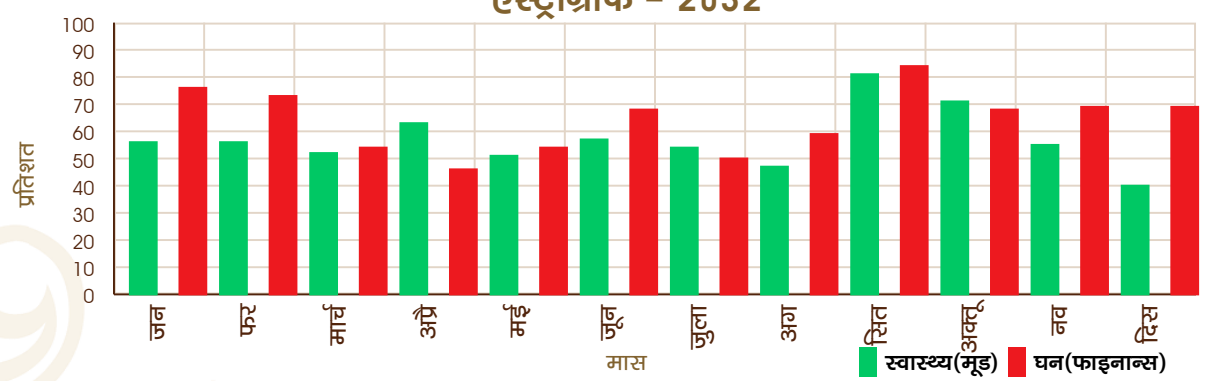

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2033

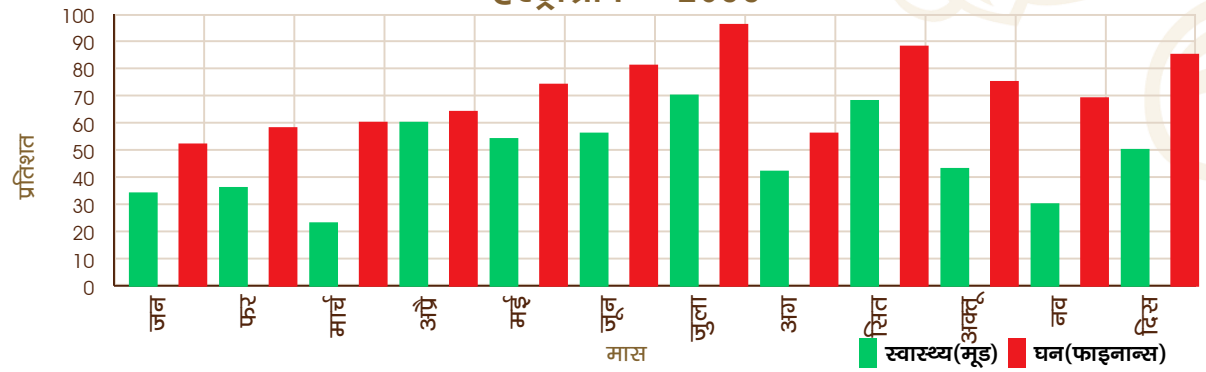

एस्ट्रोग्राफ - 2034

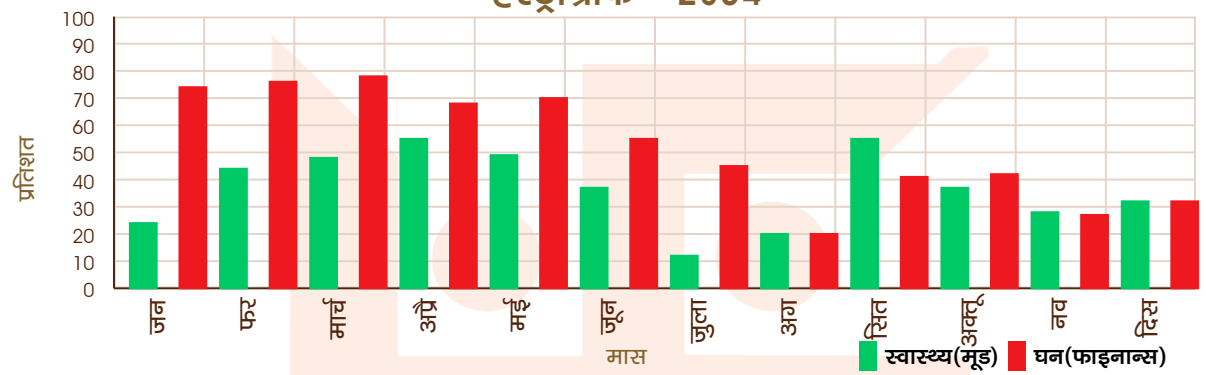

एस्ट्रोग्राफ - 2035

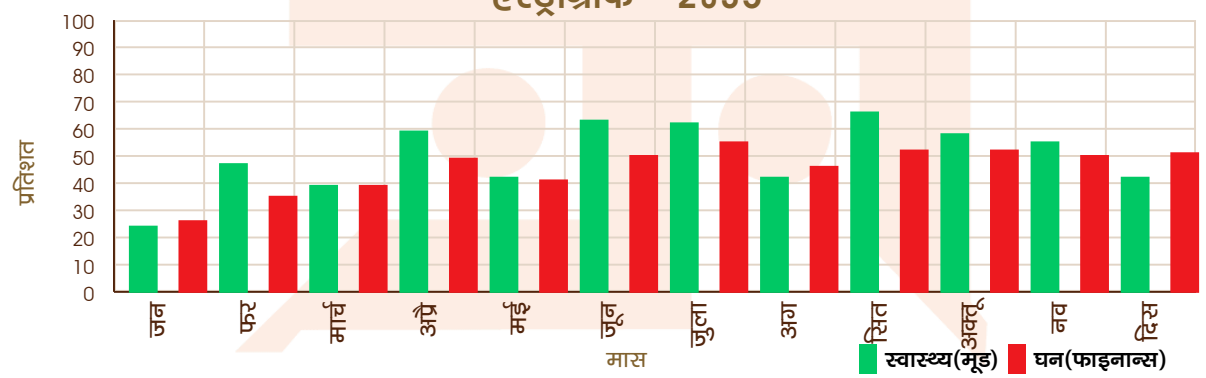

एस्ट्रोग्राफ - 2036

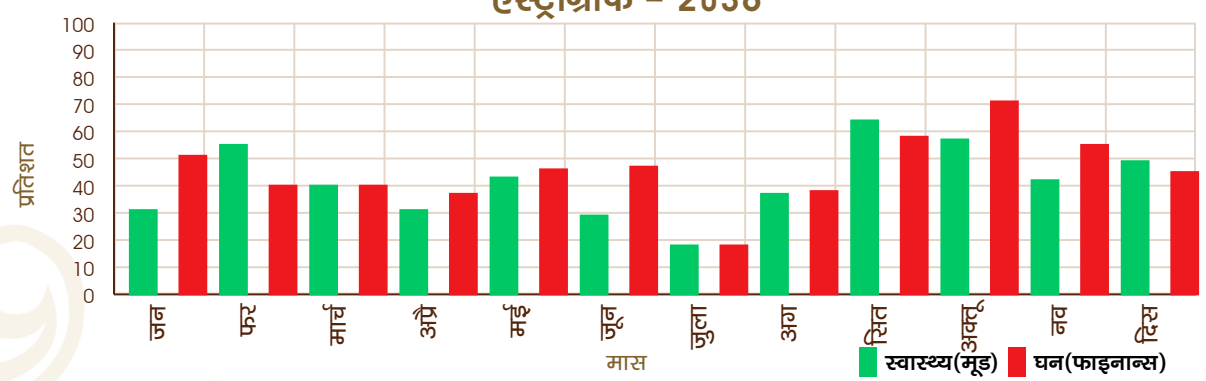

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2037

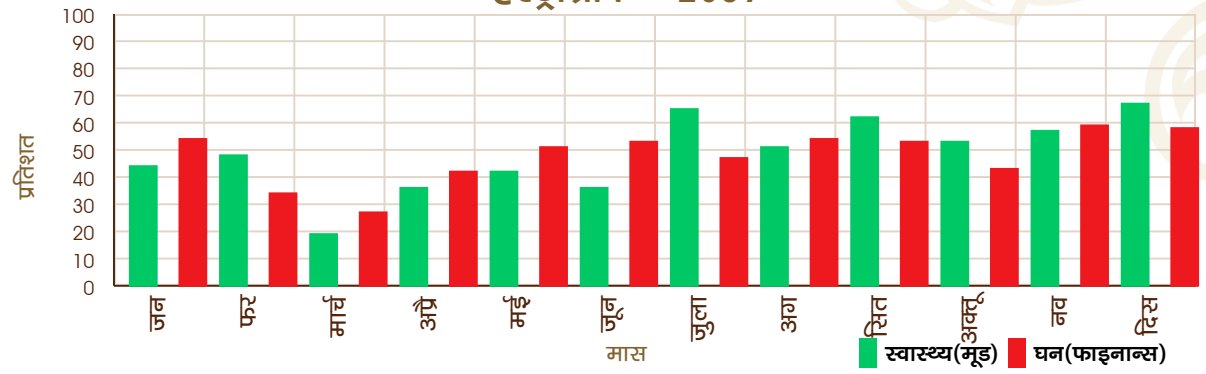

एस्ट्रोग्राफ - 2038

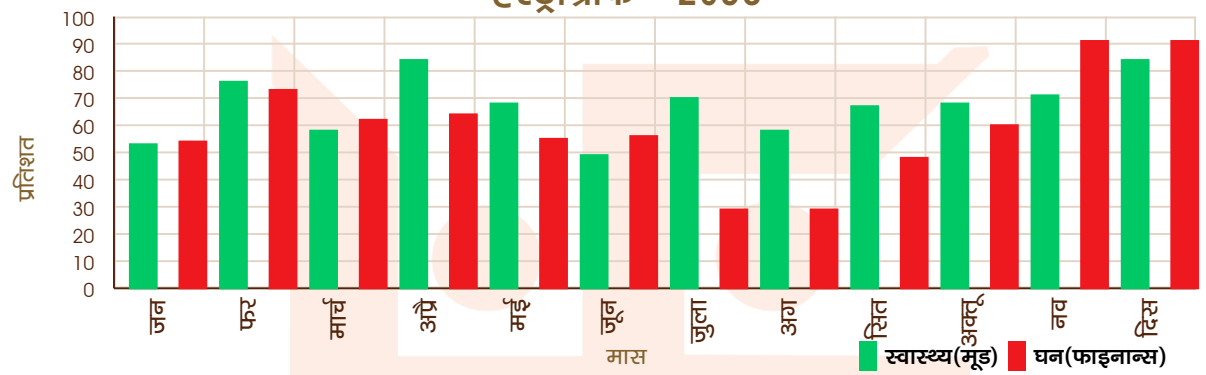

एस्ट्रोग्राफ - 2039

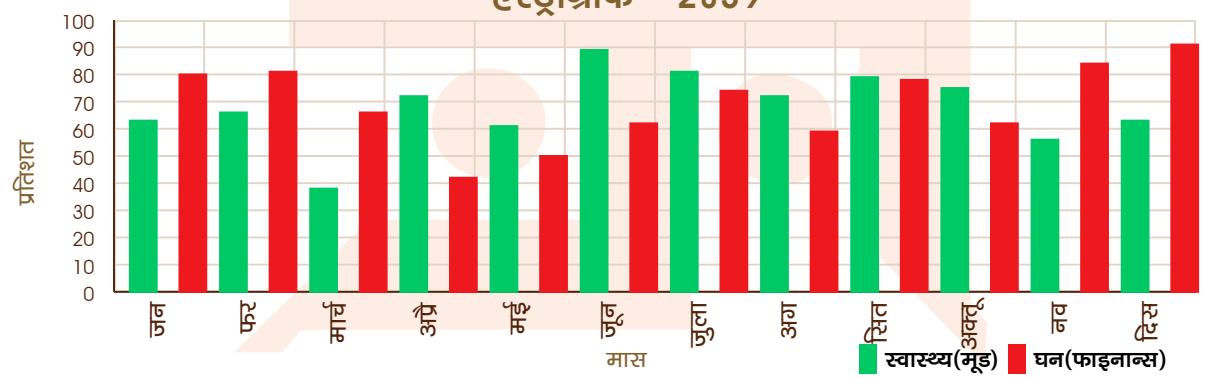

एस्ट्रोग्राफ - 2040

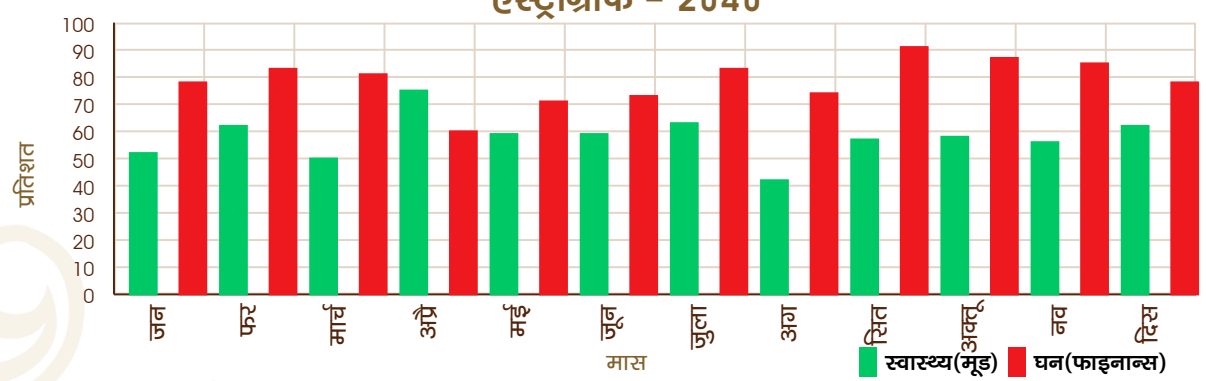

एस्ट्रोग्राफ - 2041

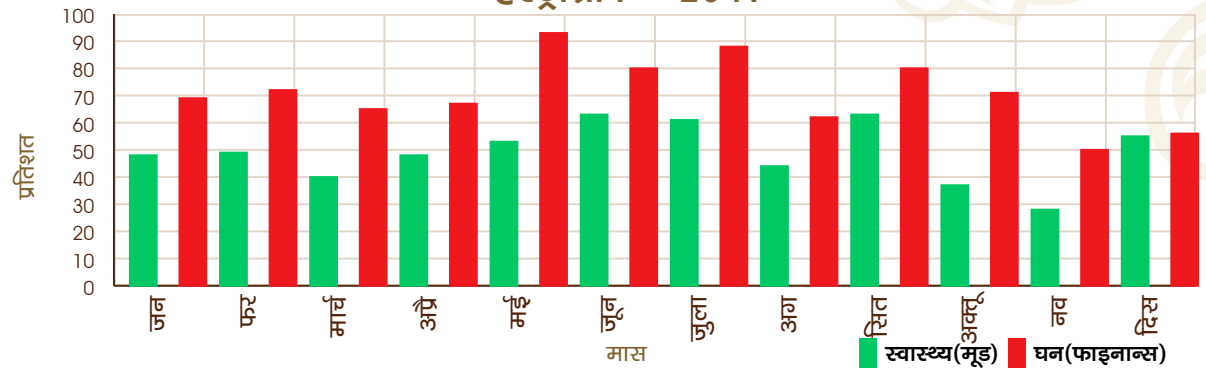

एस्ट्रोग्राफ - 2042

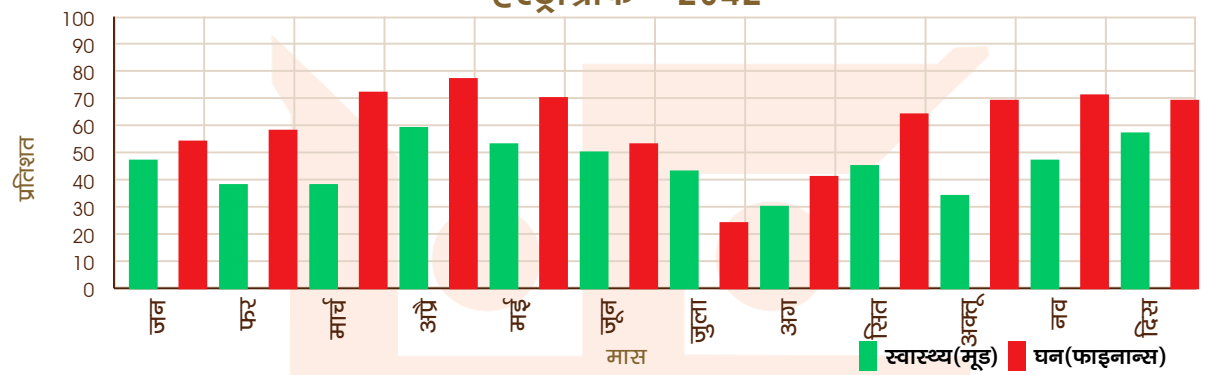

एस्ट्रोग्राफ - 2043

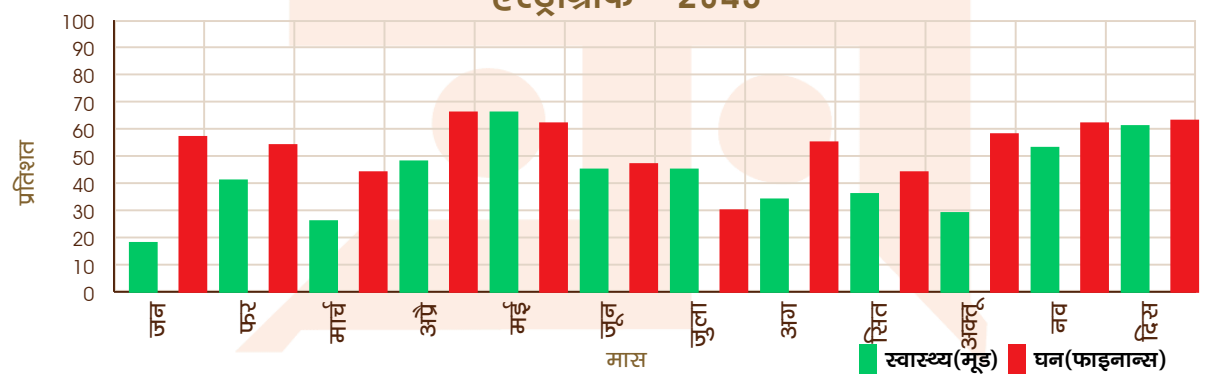

एस्ट्रोग्राफ - 2044

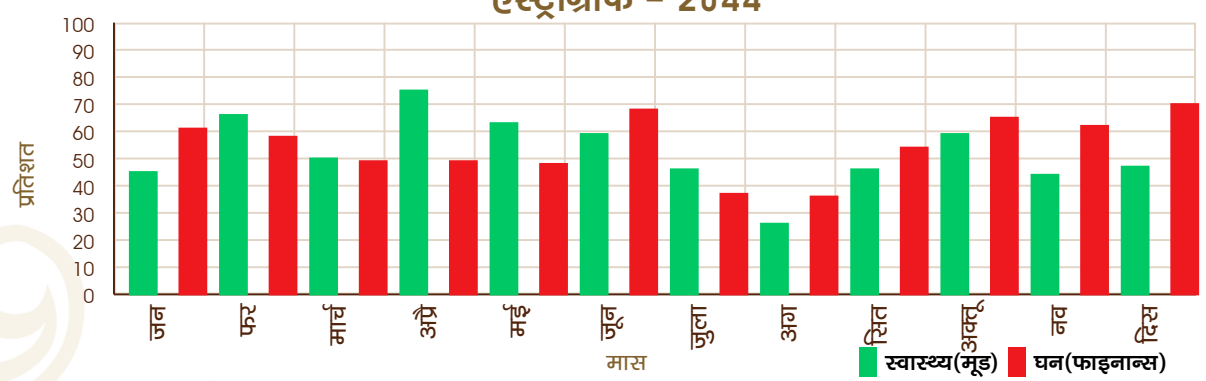

योग

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,राहु,शनि　　योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।

।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

नौका योग

होरादिकष्टकेभ्यः सप्तर्क्षगतैः क्रमेण योगाः स्युः।
सलिलोपजीविविभवा बह्वाशाः ख्यातकीर्तयो हृष्टाः।
कृपणा बलिनो लुब्धा नौसम्भूताश्चलाः पुरुषाः ।।
।। सारावली ।। अ. 21/श्लोक 11, 21।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से सप्तम स्थान तक ही सातों ग्रह स्थित हों तो नौका योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 45 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में नौकायोग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप जल द्वारा जीविका करके अधिक विभव तथा धन लाभ कर्त्ता, प्रसिद्ध, यशस्वी, आशावान, प्रसन्न चित्त, कृपण, बली, लालची और चंचल स्वभाव के प्राणी होंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,केतु,सूर्य,मंगल,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

क्रूरांशे पुत्रभावेशे नीचमूढसमन्विते ।
पापैर्दृष्टेऽथ वा दुःस्थे पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश क्रूर नवांशक में नीच या अस्तंगत हो, पाप ग्रहों से दृष्ट अथवा दुःस्थान में हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,केतु,गुरु योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र सुख में अभाव हो ऐसी संभावना है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीन पुत्र प्राप्ति योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 296 ।।

यदि जन्मपत्रिका में मकर राशि का शनि 6 अंश 40 कला तक हो तो तीन पुत्र होते हैं।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 60 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको तीन पुत्र प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गुल्म रोग योग

तथाभूते शनौ गुल्मरोगो वात्र विशेषतः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि अ.-5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठस्थान में शनि षष्ठेश पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो जातक को विशेषकर गुल्म रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

गुल्मरोग (त्वचा रोग) होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि — योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शुक्र,बुध — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च सुखादि योग

चन्द्रो व्ययाधिपो धर्मलाभमन्त्रेषु संस्थितः ।
स्वोच्चस्वर्क्षनिजांशे वा लाभधर्मात्मजांशके ।
दिव्यागारादिपर्यङ्को दिव्यगन्धैकभोगवान् ।
परार्घ्यरमणो दिव्यवस्त्रमाल्यादिभूषणः ।
परार्घ्यसंयुतो वित्तो दिनानि नवति प्रभुः ।।

।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा व्ययेश होकर 5-9-11 वें भाव में हो या अपनी उच्च राशि, अपनी राशि, धन भाव के नवांश में हो अथवा लाभ, नवम पंचम के नवांश में हो तो दिव्य भवन, शक्रया, गन्ध, दूसरे के द्रव्य को भोगनेवाला होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम भवनशक्रयादि सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,बुध,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि,केतु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।